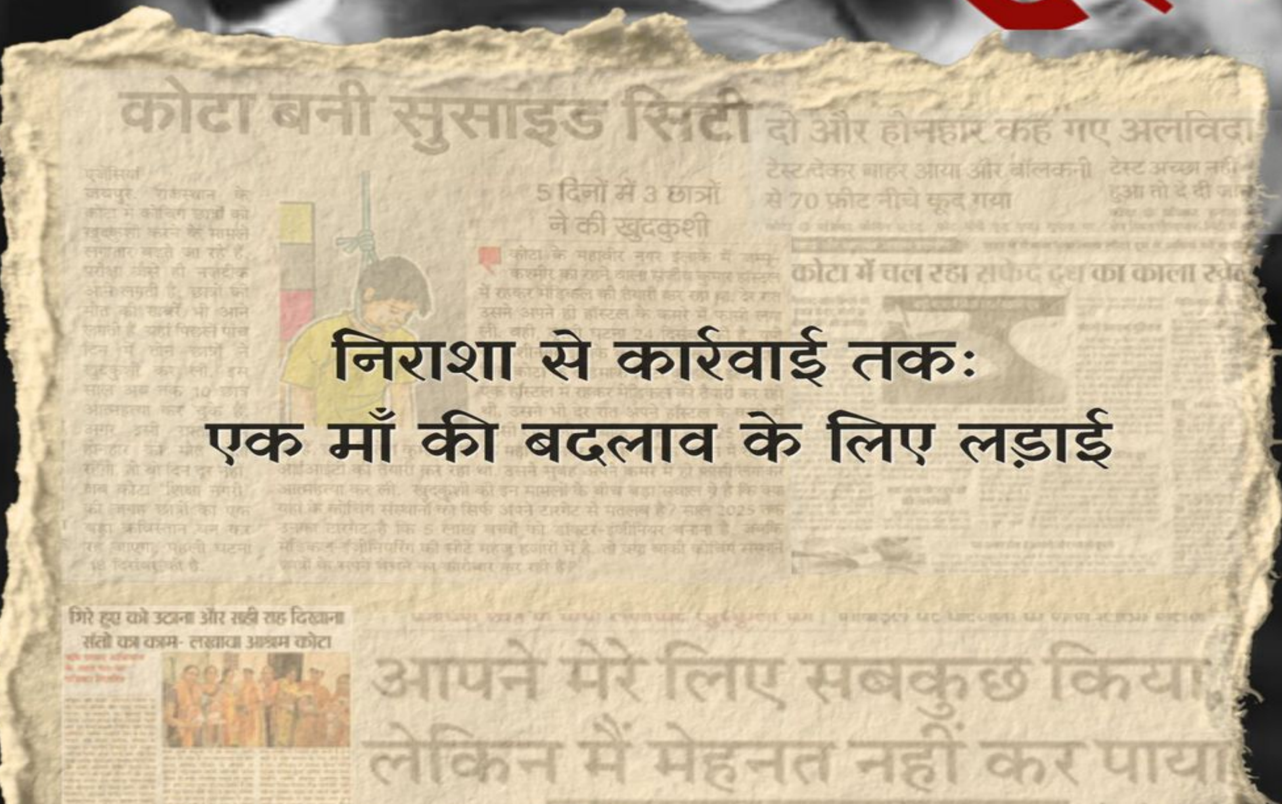
शालिनी सोनी

चक्रव्यूह



निराशा से कार्रवाई तक:
एक माँ की बदलाव के लिए लड़ाई



चक्रव्यूह
निराशा से कार्यवाही तक
एक माँ की बदलाव के लिए लड़ाई

शालिनी सोनी

अध्याय : १
सफरः खट्टे-मीठे स्वाद

"ध्यानमग्न अनुराधा विचलित होने लगी तभी किसी की आवाज ने उसकी मुद्रा भंग की। अनुराधा जी आपके लिए नीचे फ़ोन आया है। अचानक हुई आवाज से अनुराधा चौंक गई, नीचे क्यों? मेरा मोबाइल, अरे ये क्या बैटरी ख़तम हो गई? लगता है बंद हो गया। अच्छा आती हूँ। आलोक ही होगा, मेरा फ़ोन नहीं लगने से परेशान हो गया होगा। आलोक से बात करते-करते अनुराधा के चेहरे पर परेशानी की लकीरें नजर आने लगी। संयोगवश उसी वक्त संगीता का वहां से गुजरना हुआ और अनुराधा के चेहरे के उड़ते रंग ने उसे आगे जाने नहीं दिया। असमंजस में पड़ी संगीता के जहन में सवालों ने पहाड़ खड़ा कर दिए, ऐसा क्या हुआ होगा की अनुराधा इतनी दुखी हो रही है? उससे तो खड़ा ही नहीं हुआ जा रहा है। अब क्या हुआ, अनुराधा क्या करेगी? आलोक के पास जाएगी या दिव्यांशी के पास रहेगी? दिव्यांशी की मुश्किलें बढ़ेगी या वह सब संभाल लेगी? हमेशा हसती खिलखिलाती रहने वाली अनुराधा की ऐसी हालत देखकर संगीता के मन में अनेक सवाल उठने लगे।

आखिरकार उसने अनुराधा से पूछा कि क्या हुआ है आपको? तबियत तो ठीक है ना आपकी? अनुराधा के गाल गीले होने लगे, उसे देखकर संगीता भी घबराने लगी। क्या बात है अनुराधा जी? अनुराधा है कि बस रोये ही जाए। किसी से कुछ कहने की कोशिश भी कर रही है तो वह कह ही नहीं पा रही है। उसके जीवन के धरातल पर तो जैसे वज्रपात हुआ हो। कुछ तो बताइये अनुराधा जी। अनुराधा की तबियत बिगड़ने लगी। उसे चक्कर आने लगे और अचानक वह बेहोश हो गई। तुरंत डॉक्टर को बुलवाया गया। एंग्जायटी से अनुराधा का ब्लड प्रेशर लो हो गया था। उसे होश आते ही फिर से वह वैसे ही फूट-फूट कर रोने लगी।”आज उसे जो मिला वह कभी किसी दुश्मन को भी न मिले।

यह जीवन क्या है? एक पहेली या एक सवाल? या फिर एक महासागर या फंदा? कब क्या होगा, यह कहना मुश्किल है। यहाँ सवालों की भरमार है, और हर पहेली के पीछे एक और पहेली छिपी होती है। इसमें कोई नियम नहीं है, कोई तय समय नहीं है। यह सच है कि जीवन में अनेक रहस्य हैं, जिन्हें सुलझाना नामुमकिन है। हम अक्सर अपनी किस्मत में आशा और निराशा के बीच झूलते हैं, परंतु यही जीवन का सौंदर्य है। जीवन की यात्रा में हम अनजाने में भटकते हैं, और कभी-कभी मन आध्यात्मिकता की खोज में उलझा होता है। हर चरण पर नई चुनौतियों और संघर्षों का सामना करना पड़ता है। ऊंट और जीवन में यही तो समानता है कि दोनों कब किस करवट बैठेंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता। जीवन के सफर में कई मोड़ और मुश्किलें होती हैं। हमें तय करना पड़ता है कि किस दिशा में आगे बढ़ें, और जब भी संभावना हो, हमें अपने दिशा-निर्देश को संशोधित करना पड़ता है।

इंसान कितने सपने देखता है, कितना कुछ तय करता है, कितनों से लड़ता है, और कितनों को चाहता है, कितना कुछ खोता है, और कितना कुछ पाता है, मगर इस मायावी जीवन में,

इस तिलिस्म दुनिया में कितने रहस्य छिपे हैं, यह किसी को भी ज्ञात नहीं होता। कब किसको क्या मिलेगा, ऐसा कुछ भी मिल जायेगा जिसकी ना ही उसने कभी कल्पना की थी और ना ही उसे वह लेना है, मगर उसे वह दर्द मिलेंगे जिसे उसे लेना ही होगा, ये उसके कर्मों के ऐसे कर्ज हैं जो उसे वापस चुकाए जा रहे हैं। जिन्हें उसे ना चाहते हुए भी सहन करना ही होता है। ऐसे ही ना जाने किन कर्जों का हिसाब हमारी अनुराधा को चुकाना पड़ रहा है। इस तरह दर्द के साये में विलाप कलाप करती अनुराधा की अवस्था बिगड़ती ही जा रही है। कुछ पलों के फासले और कुछ लम्हों का साथ जीवन के पन्नों को इस तरह पलटता है कि उसकी आवाज़ भी नहीं आती और उन पन्नों के चिथड़े उड़ जाते हैं। आजकल तो विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली कि चार दिन बाद बारिश होगी वह हमें आज ही मालूम हो जाता है मगर जीवन में कब तूफान आएगा इसका अंदेशा कभी नहीं लगा पाते।

एक साल पहले

अनुराधा आज बड़ी दुविधा में है, करे भी तो क्या! जान दो जगह जो अटकी है, तराजू के उन दो पलड़ों में आज अनुराधा का मन डावांडोल हो रहा है। कभी दाहिने तरफ वजन बढ़ता है, तो कभी बाएँ तरफ। अब देखना ये है की कहाँ जाकर सही माप मिलता है।

अनुराधा का एक छोटा सा खुशहाल परिवार है। वो भले ही ज्यादा पढ़ी लिखी ना हो मगर अपनी बेटियों को पढ़ा लिखा कर अपने पैरों पर खड़ा करना ही उसके जीवन का लक्ष्य बन चुका है। श्यामवर्ण सी देहकाठी, पति के कन्धों तक ही पहुंचने वाली मगर पति के दिल पर राज करने वाली, दुबली पतली, घने घने बालों वाली, थोड़ी गरम मिज़ाज की, ज़रा सी बात पर तुनक कर बोल दे और झट से मिश्री सी कानो में घोलने की भी कला जानने वाली, अपने घरवालों के लिए फायर ब्रिगेड से कम नहीं है हमारी अनुराधा जी। दो बेटियों की माँ बनकर खुद को खुशनसीब समझने वाली अनुराधा जी हमेशा खुश रहना पसंद करती हैं। मुस्कान का हमेशा उनके मुखड़े पर राज होता है। जब मुस्कान की सत्ता कायम है तो उसकी छत्र छाया में औरों को भी मुनाफ़ा हो जाता है। इस तरह अनुराधा जी का परिवार एक खुशहाल परिवार माना जाता है।

पति और छोटी बेटी देविशि जो की अभी नवीं कक्षा में है, उन्हें छोड़ कर बड़ी बेटी दिव्यांशी जिसने अभी दसवीं की परीक्षा पास की है उसे आगे की पढ़ाई के लिए कोटा लेकर जाना है। भला एक गृहणी बस पड़ते घर को बिना माली की बगीचे के समान छोड़ कर कैसे चली जाये। यह तो उसके लिए बड़ा ही जटिल काम होता जा रहा है। आज अनुराधा को मन ही मन सास की कमी बहुत महसूस हो रही है, सास होती तो सब संभाल लेती। हालाँकि ससुरजी दीनदयाल जी भी कम नहीं है, उन्हें अपने बच्चों की जरुरत और दिक्कत का बखूबी

पूरा ख्याल रहता है। सबका तालमेल बना कर चलते हैं, नहीं तो पता नहीं अभी तक अनुराधा और उसके पतिदेव आलोक में कितने झगड़े हो चुके होते। उनके कहने पर ही तो दोनों ने हथियार डाल दिए और फिर कभी नहीं उठाने का वादा भी कर लिया। दीनदयाल जी को पत्नी के जाने के बाद टूटते देखा था, एक दुर्घटना में उनकी पत्नी का देहांत हो जाने से घर जैसे बिखर सा गया था। उस वक्त आलोक बहुत छोटा भी तो था, यही कोई १२ साल का होगा तब से दीनदयाल जी ने ही उसे माँ और पिता दोनों का दुलार दिया। उनके असीम स्नेह की आंच ने ही उसे जीवन की उन सर्द हवाओं की ऐठन से बचाया था। आज जब खुद दीनदयाल जी वृद्ध बालक बन चुके हैं, तो भला वह अपनी जिम्मेदारियाँ कैसे भूल सकता है। इसिलए आलोक हमेशा उनका ख्याल रखता है। वह ऐसा कुछ भी नहीं करता जिससे उनको कोई दुःख पंहुचे। माँ की कमी ने आलोक को थोड़ा भावुक और थोड़ा दयालु बना दिया। उससे किसी का भी दुःख देखा नहीं जाता। रूप में भले ही कोई आकर्षण नहीं हो मगर अपने कोमल स्वभाव से वह सबको आकर्षित कर लेता है। उसके इसी चुम्बकीय स्वभाव ने अनुराधा को भी अपनी ओर खींच लिया था।

अनुराधा जितनी परेशान हो रही है उतनी परेशानी की बात है नहीं, वह भी जानती है की सास के गुजर जाने के बाद दो मर्दों ने ही घर संभाला था। जैसे भी हो, आज अनुराधा इस घर में विवाह सूत्र में बंध कर आई तो कुछ तो अच्छा देखा ही होगा। मगर एक नारी का ह्रदय है जो घर छोड़ते वक्त घबराया ही जा रहा है। उसने अपने इस स्वर्ग से सुंदर घर को बड़े जतन से सजाया है, अब उसे किसी भी तरह से इसकी देखभाल में कोई कमी सहन ही नहीं हो रही है। निरुपायी अनुराधा मन मजबूत करके जाने को तैयार हुई है। देविशि ने माँ की उदासी देख उनसे परिहास किया, “वाह! माँ तुम्हे तो सिर्फ घर की चिंता सताए जा रही है, मेरी तो सुध ही नहीं ले रही हो। भला मैं कैसे रहूंगी, ये भी सोचा है? अब समझ में आ रहा है मैं तुम्हे मेले में मिली थी, है न?” अनुराधा तुरंत उदास हो गई। “अरे, नहीं मेरी परी तू तो सबसे समझदार है, तू ही तो सबको संभालेगी, तेरी चिंता तो सबसे ज्यादा है।” उदास अनुराधा देविशि के सर पर हाथ फेरने लगी। एक माँ अपने बच्चों पर कितना ही वात्सल्य उड़ेल दे, तब भी उसका जी कभी नहीं भरता। माँ को उदास देख देविशि ने कहा की “माँ, उदास क्यों होती हो मैंने तो मजाक किया था और तुम हो की सच मान बैठी। मेरी छोटी सी मम्मी, तुम तो सबसे छोटी हो बिलकुल बच्ची।” माँ बेटी का प्यार सबके मुखड़े पर मुस्कान ले आया।

माँ, क्यों होती हो तुम इतनी परेशान।
क्यों बनना है हमेशा तुम्हें ही महान।
छोड़ो अब अपने घर वालों को,
थोड़े नखरीले और निरालों को।

तेरी ही तो परछाई (मैं) हैं न इनके साथ,
फिर क्यों होती है तू इतनी उदास।

सब कुछ भला चंगा होगा,
चाहे जितना भी पन्गा होगा।
तुम न इधर की फिक्र करना,
केवल दीदी का हौसला बनना।

जब लौटोगी तुम सफलता की कुंजी लेकर,
आँचल में ढेरों बधाइयों की पूँजी लेकर।
वादा है हमारा आपसे,

यूँ ही सजा सँवरा मिलेगा आपका घर आँगन।
तब खुशियों से झूमेगा हमारा जीवन प्रांगण।

"बैठो न थोड़ी देर, जब से जाने की बात हुई है, परेशान हुए जा रही हो।" आलोक ने जब जिद्द की तो अनुराधा उसके पास बैठ गई। आज ये फैसला दोनों के लिए ही कठिन हो रहा था। एक दूसरे से दूर रहना कितना मुश्किल है, ये वो अच्छी तरह समझ रहे थे। आलोक ने अनुराधा को अपनी बाँहों में भर लिया। सब सोने जा चुके थे मगर प्रेम रस से भरे इन दो दिलों की आँखों में नींद कहाँ थी। आलोक ने अनुराधा को ऐसे चूमना शुरू किया जैसे आज पहली बार वो उसके आलिंगन में समाई हो। उसके पास की डोर कसती ही जा रही थी। अनुराधा भी आज मदहोश सी उस रस का रसास्वादन करने में लीन थी। विछोह कभी नजदीकियों को बढ़ाने में इतना कारगर सिद्ध होता है, आज जाना। आलोक ने अपने अधरों को जब अनुराधा के अधरों को सौंप दिया, तो अनुराधा ने भी उन अधरों को सम्भालने का काम बड़ी उत्तेजना के साथ किया। आज आग दोनों ओर बराबर थी। किसी ने भी एक घूंट भी जाम कम नहीं पिया था, तभी तो दोनों पर नशा बराबर का चढ़ा जा रहा था। आने वाले विछोह के संकट से उबरने के लिए यहां तो एडवांस में ऊर्जा एकत्र करने में मशरूफ दो जिस्म एक जान को इतना भी होश कहाँ था कि रात बीतने को आई है। आज जब आलोक ने अनुराधा की गाउन उतार फेंकी, तो पहली बार था कि उसने ज़रा भी झिझक नहीं दिखाई। आलोक को प्यार करने में उसे आज अलग ही आनंद की प्राप्ति हो रही थी। अपने मनचाहे सुख को पाकर, दोनों ने इस नशीली रात को विदाई दी। सुबह होने को थी, अब थोड़ी देर सोने में ही भलाई है, यही सोच कर निद्रादेवी की शरण ली गई।

कभी मधुर मिलन की तो कभी विछोह के पल की।
कभी विलास की तो कभी विषाद की।
वह क्षणदा हमेशा साक्षी बनी,
कई बातों की तो कई वादों की।

वो संध्या की बेला सिंदूरी था अम्बर का आँचल, कुछ पलों के दरमियाँ ही मानो किसी ने उड़ेल दिया भर प्याला काजल।

उन तारों की आँख मिचोली और चंदा मामा का लुकना-छिपना, उस चांदनी में नौका विहार, संग में उस मांझी का गुनगुनाना।

शनैः शनैः उस रात की रानी की मादक महक,
रोम-रोम में घुल रही थी,
कुहासे और तुहिन बिंदु से,
ये वादियां धूमिल सी हो रही थी।

जब देखा त्रियमा का सच्चा साथी मैखाने में बहक रहा था, जब जग खोया था सपनों में, तब मन डूबा था उलझनों में।
क्यों यह जुगनू निशा में टिमटिमाता है, इतराता है, ऐसा निश्छल प्रेम देखो, क्यों इसे भाता है।

दीपक स्वयं जल कर अन्धकार को निगल रहा था, चौराहे पर लट्टू राही का मार्गदर्शक बन रहा था।
यह अनोखा प्रेम है इस विभावरी से,
जिसमें हर कोई अपना दायित्व निभा रहा था।

दिव्यांशी सुबह से ही दादा जी से चिपकी बैठी थी। दादा जी की लाडेसर जो थी उनको छोड़ कर जाना उसके लिए आसान नहीं था, मगर कुछ हासिल करने के लिए कुछ खोना जरुरी होता है, बस यही सोच कर जाने को तैयार थी। दिव्यांशी, देविशि को दादा जी की जिम्मेदारी सौंप कर जा रही थी, कितनी सख़्त हिदायत दी जा रही थी कि एक भी समय दवाई मिस नहीं होनी चाहिए, दादा जी की जरुरत का विशेष ख्याल रखना है, दादा जी को कभी अकेला नहीं छोड़ना है, वगैरह वगैरह। देविशि ऐसे भले ही नटखट है, सारा सारा दिन शैतानियां कर लेगी, मगर जब बात दादा जी की आएगी तो फिर देखो, उसके व्यवहार में क्या बदलाव आता है। फिर तो ना ही अपने कहीं कोई कमी रखेगी और ना ही किसी को

रखने देगी। अनुराधा और दिव्यांशी को स्टेशन छोड़ने पूरा परिवार आया। सबकी आँखें नम थीं, दादा जी भी रो रहे थे, यह तो अनापेक्षित था। किसी ने भी उनकी आँखों में कभी आँसू नहीं देखा था। मिलने मिलाने की प्रक्रिया तो ख़त्म नहीं हुई, मगर हाँ, गाड़ी चलनी जरूर शुरू हो गई।

उदास मन से घर आने वाले घर आ गए और मुसाफिर सफर पर निकल गए। अनुराधा सामान व्यवस्थित कर लेट गई। इतनी भागम भाग से थकान घिर आई थी। अब कुछ आराम मिला, अब उसने दिव्यांशी को समझाना शुरू किया कि कोटा में क्या करना है और क्या नहीं करना है। किन-किन बातों का विशेष ख्याल रखना है, कैसे पढ़ाई पर ध्यान लगाना है और व्यर्थ की बातों से बचना है। जब एक सांस ही अनुराधा समझाए जा रही थी, तो दिव्यांशी ने उसे रोका कि “माँ, अब बस करो, कुछ गलत नहीं होगा, आपके संस्कार कभी निष्फल नहीं होंगे।” वैसे भी अभी दिव्यांशी घूमने के मूड में है, उत्सुकता और उत्साह से भरी है, उन सब के बीच अभी प्रवचन के लिए जगह कहाँ है। इतनी सी बात तो अनुराधा को भी समझनी होगी।

“चलो न माँ, कुछ और बातें करते हैं। कल से तो पढ़ना ही है, क्यों न आज कुछ कोटा के बारे में जान लिया जाये। तुम्हे पता है माँ, की कोटा जो कि ‘शिक्षा की काशी’ के नाम से जाना जाता है, उसे भारत की ‘कोचिंग राजधानी' नाम भी दिया गया है। उसके नाम के डंके विदेशों में भी बजते हैं। दुनिया के सात अजूबों को कोटा की धरती पर एक साथ दर्शाया गया है। कोटा में घूमने लायक एक से एक जगह है, जैसे चम्बल गार्डन कोटा, ब्रज विलास सरकारी संग्रहालय, गणेश उद्यान, कोटा बैराज, और भी अनेक। हम भी कभी छुट्टी रही तो घूमने जाएंगे।”

“हाँ लाडो, जरूर चलेंगे।”

आज दिव्यांशी कितनी खुश है, कितना चाव चढ़ रहा है, इसकी खनक उसकी बातों में साफ़ सुनाई दे रही है। मगर दिव्यांशी को अंदाजा भी नहीं था की वह जिस कोटा की सोच कर जा रही है, वो कोटा यहाँ आने वाले विद्यार्थियों के लिए थोड़े ही बना है। इन विद्यार्थियों के लिए तो कोटा एक प्रेशर कुकर की तरह है, जिसमें सिर्फ़ दबाव होता है और उस दबाव में बच्चा अगर मानसिक रूप से मजबूत रहता है तो गुजारा कर सकता है, अपितु कमजोर दिल और दिमाग वालों के लिए तो उस गरम भाप के दबाव से उभर पाना ही इतना कठिन हो जाता है की उसे होश ही कहाँ रहता है की कोटा खूबसूरत है या बदसूरत।

दिव्यांशी ने फिर से माँ को कोटा के बारे में बताना शुरू किया, अनुराधा भी बड़े ध्यान से उसकी बाते सुन रही थी। “जयपुर और जोधपुर के बाद कोटा राजस्थान का तीसरा बड़ा

शहर है जो शिक्षा, कोटा पत्थर, कोटा साड़ी, कल कारखाने के लिए प्रसिद्ध है। इसका कोटा नाम इसके प्रारंभिक शासक कोटिया भील के नाम पर पड़ा। पता है माँ, कोटा शुरुआत में बूंदी का ही भाग था वो तो १६२४ में बूंदी से पृथक स्वतंत्र रियासत बनी। यहाँ बहने वाली चम्बल नदी अपने में आकर्षक तो थी ही अब उसके रिवर फ्रंट का हेरिटेज का काम इसकी खूबसूरती में चार चाँद लगाने वाला है। १९८५ में यहाँ IIT कोचिंग की शुरुआत कोटा शहर की तक़दीर बदलने का माध्यम बनी। एलन एक ऐसी कोचिंग है जिसने कोटा की प्रसिद्धि पूरे विश्व में पंहुचाई है। आज ये हाल हो गया है की कोटा और एलन की जोड़ी शोले की जय वीरू की जोड़ी जैसी हो गई है, जो कोटा को जानेगा वो एलन को भी जान लेगा और जो एलन को जानेगा तो उसके लिए कोटा को जानना मुश्किल नहीं होगा। शाम की समय कोटा की रौनक और चहल पहल देखने लायक होती है। जगह जगह पर चौपाटी और वहाँ पर घूमते बच्चों का झुण्ड देखते ही बनता है, एक अप्रतिम दृश्य होता है। यहाँ की कोटा कचोरी नहीं खाई तो क्या खाया माँ। यहाँ के लोग तो दावा करते हैं की उनकी कचोरी के आगे पिज़्ज़ा बर्गर भी फेल है। माँ अब हम खा कर ही फैसला लेंगे की वो सही हैं की गलत, है की नहीं?"

अनुराधा भी दिव्यांशी की बातों का पूरा आनंद उठा रही थी, "हाँ बेटा, खाएंगे तभी न बताएँगे।"

"कोटा का सिटी मॉल यहाँ आने वाले या रहने वालों के मनोरंजन का एक प्रसिद्ध, सुंदर और उत्तम स्थान है।"

"बाप रे बाप, तूने कोटा का पूरा इतिहास रट लिया है क्या?" अनुराधा का असमंजस देख दिव्यांशी हंसने लगी।

"अरे माँ, जहां जा रहे हैं, उसके बारे में जाने बिना वहाँ रहेंगे कैसे।"

"हाँ रे, आई बड़ी प्रोफ़ेसर बनने।"

दोनों की बातें ठहाकों के साथ ख़त्म हुई। अपनी बातों में मसरूफ, अनुराधा और दिव्यांशी ने ध्यान ही नहीं दिया कि उनकी बगल वाली सीट पर बैठी एक महिला उनकी बातों में बराबर दिलचस्पी ले रही है। जब हँसते हुए उनकी नजर उस ओर गई, तो अनुराधा ने मुस्कुरा के उन्हें नमस्कार किया। बस, दो औरतों को बातें शुरू करने में इतनी ही तो देर लगती है। बातों बातों में मालूम हुआ कि महिला का नाम रंजना है, उनकी भी बेटी कोटा में पढ़ रही है। कुछ मिनटों में दोनों एक दूसरे का सारा इतिहास जान गई। रंजना ने जब बताया कि उसके घर के बड़े बुजुर्गों को बेटियों का पढ़ना पसंद नहीं है, तो यह जान कर अनुराधा को घोर आश्चर्य हुआ। रंजना ने बताया कि वह हरियाणा के पास के ही एक गाँव,

अकलीमपुर, की रहने वाली है। छोटा गाँव होने से कोई दिक्कत नहीं होती है, मगर जब लोगों की सोच छोटी हो जाती है, तब तकलीफ होती है। शहर या गाँव कभी किसी को निहाल नहीं करता, निहाल तो घरवाले करते हैं और उनकी तरफ से ही निराशा मिलती है। दुनिया में कितना कुछ बदल गया है, मगर हमारे यहां अभी भी कुछ नहीं बदला है। आज भी किसी को ना ही बहुओं का घूँघट उठाना गवाँरा है और न ही लड़कियों का शिक्षित होना। दोनों ही व्यर्थ और सबसे घटिया काम है इनकी नजरों में।

इतना सुनने के बाद अनुराधा से चुप नहीं रहा गया। उसने भी कहना शुरू कर डाला। "इतनी पिछड़ी सोच, कैसे लोग हैं ये, कैसी कुरीतियां पाल रखे हैं। जमाना चाँद पर पहुंच गया और ये अभी भी सदियों पीछे ही जी रहे हैं। आपके परिवारवालों की रूढ़िवादि सोच आज सभी भारतवासियों के लिए सोचनीय विषय है।" अनुराधा ने रंजना को गौर से देखा, न ही ज्यादा गोरी और न ही ज्यादा काली सामान्य सी दिखने वाली रंजना के नैन नक्श बहुत तीखे थे। उसकी हसीं लाज़मी थी। जब हंसती तब उसके गालों में पड़े गड्ढे उसके सौंदर्य को और बढ़ा रहे थे। घूँघट सर तक रखी घाघरा चोली में रंजना एक सभ्य और संस्कारी बहु लग रही थी मगर घूँघट से मुखड़े को हर समय ही ढके रखना है ये कहाँ का इन्साफ हुआ। जब अनुराधा का व्यंग कसना बंद हुआ, तब रंजना ने बताया कि उनकी बेटी ने १०वीं में ९८% मार्क्स लाकर परिवार का नाम ऊँचा किया साथ ही सरकार से छात्रवृति भी प्राप्त की। इसके बावजूद भी उसे सबको मनाने के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़े। रंजना ने बताया कि उनकी बेटी, ट्विंकल, की उम्र भले ही कम है मगर समझदारी में बड़े बड़ों को भी फेल कर देती है। उसकी परवरिश ही कुछ ऐसे वातावरण में हुई थी कि जिंदगी के इतने पड़ाव उसने इतनी छोटी उम्र में ही पार कर लिए। घर की माली हालत उसपर खाने वाले अनेक और कमाने वाला सिर्फ एक उसके पिताजी, तो भला घर की अवस्था कैसी हो सकती है? जाहिर सी बात है बताने की आवश्यकता ही नहीं है। इन सबके बीच उसके अपने सपने, जिन्हें वह सजीवता देना चाहती थी, तो थे मगर कहने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रही थी। किससे कहती, माँ से, जिसे इतना भी नहीं पता कि उसकी उम्र कब निकल गई और कब उसके सपने उसकी आँखों में जगह बनाने की कोशिश में नाकामयाब होकर इस परिवार की देख-रेख में कहीं झुलस गई। वह अच्छी तरह जानती थी कि माँ को कहने से कुछ नहीं होगा, बाबूजी के सामने उनकी ज़ुबान को तो जैसे लकवा ही मार देता है। वह अच्छी तरह जानती थी कि उसके पिताजी की सोच पुरुष-प्रधान समाज की तरफ ही झुकी हुई है। उन्हें लड़कियों का सपने देखना भी पसंद नहीं आता, तो उन सपनों को जीवनदान देने की बात तो कदापि रास नहीं आएगी। उनके चेहरे पर जो दो गोल-गोल बड़ी-बड़ी आंखें हैं, न उनको जब वे और बड़ा करते हैं तो ट्विंकल की तो सिट्टी-पिट्टी वहीं गुम हो जाती है।

जब वह दुकान से आते हैं और एक गिलास पानी मांग लेते हैं, तो वो देने उनके सामने जाने में दस बार सोचती है, तो भला इतनी बड़ी बात कैसे करेगी? अनुराधा से रुका ही नहीं जा रहा था।

आखिर में पूछ ही बैठी कि "क्या हुआ? उसने अपने पिताजी से बात की या नहीं? उसके पिताजी से आप ने कुछ कहा क्या?"

"अरे बाप रे मैं? यह तो इस जनम में तो असंभव है।"

अनुराधा से इंतज़ार ही नहीं हो रहा था, सो उसने कहा, "तब फिर क्या और कैसे हुआ बताइये ना। अब हमारे अंदर सब कुछ जानने की उत्सुकता बढ़ने लगी है। इस तरह के माहौल में आपलोग कैसे काम करती है? मुझे जानना है।"

तब रंजना ने आगे बताना शुरू किया कि "मेरी बेटी ने होशियारी लगाई। उसने सही जगह दाओ लगाया, उसने अपनी दादीमाँ को पकड़ा।"

"क्यों उसकी दादीमाँ की घर में चलती है क्या?"

"ना, हर बार तो नहीं, मगर हाँ, जिसमें उनकी रूचि रहे तब तो जरूर काम बन जाता है। कहते हैं न अंधों में काना राजा, बस वैसा ही कुछ हाल था। वह भी अच्छी तरह जानती थी कि उसकी दादीमाँ ही कुछ कर सकती है। एक बात तो है, उसकी दादीमाँ की दाल हर आंच में गल जाती है, बस जरुरी रहे कि उसमें उनकी रूचि रहे। ट्विंकल ने यही सोचा कि उनसे बात की जा सकती है। मगर इतनी भी सीधी बात नहीं है कि दाल भात बनाने पूछना है और हो गया। अरे भाई, और भी सदस्य हैं, छोटी सृष्टि और बड़ी ऋतू के होते हुए बीच की कुछ अलग करने का कहेगी और सब शाबाशी देंगे, तालियां बजायेंगे, और सबसे छोटा रितेश वह भी कुछ नहीं कहेगा। तब आप जरुरत से ज्यादा भोले हैं। जहां बात ट्विंकल के मुँह से निकली नहीं की जंगल में आग लगी नहीं, फिर देखना क्या भूचाल आता है। मगर जो भी हो, एक बार तो कोशिश करना बनता है, और यही रास्ता उसे सही लगा।

उसने दादीमाँ से ही शुरू किया, 'दादीमाँ, दो, आपके सर में तेल लगा दूँ।' ट्विंकल तेल की शीशी लेकर दादीमाँ के पास पहुंच जाती है, दादी भी खुश, तेल मालिश किसे पसंद नहीं होती है। नेकी और पूछ पूछ। आज तो दादी का कमरा भी चमकाया जा रहा है, वाह, आज जरूर दादी ने किसी भले मानस का चेहरा देखकर आँखे खोली थी, तभी तो किसी राज्य की सियासत हाथ लग गई, देखो तो इतनी इज़्ज़त, इतनी सेवा, इतनी खातिरदारी की जा रही है। मान सम्मान में तो कभी कमी नहीं रही, मगर आज कुछ ज्यादा ही किया जा रहा है। दादी कौन सी कम थी, चुप चाप मज़े ले रही थी। दादी नदी के बहाव की दिशा अच्छी तरह जान चुकी थी, बस उसमें गोते लगाने लगी। एक दो काम बोल कर करवा लिए जा रहे थे। वो

अनजान बने रह कर सब समझ रही थी। ट्विंकल भी दिन भर मस्के बाजी में जुटी रही साँझ ढलने को आई, पर दादी ने कुछ नहीं पूछा, तब उससे रहा नहीं गया और अपने ही कहने लगी, 'मेरी प्यारी दादी, दुनिया की सबसे अच्छी दादी, आप हमलोग को कितना प्यार करती हो न।' उस दिन तो तारीफों के कितने पुलिया बांधे जा रहे थे, यह नजारा आप भी देखती तो आपकी भी हसीं नहीं रूकती। देखिये ना, बच्चे भी कितनी अच्छी तरह जानते है की घूस देने से काम जल्दी होता है। मगर काम थोड़ा मुश्किल था, दादी तो आखिर उसके पिता की माँ ही तो थी। उतनी सख़्त नहीं, मगर इतनी भी नरम नहीं थी जितनी ट्विंकल सोच रही थी। काफी मशक्कत करनी पड़ी केवल बात बोलने में, अभी तो सिर्फ स्टार्ट किया है, पिक्चर तो अभी बाकी है। दादी ने भी अपनी चुप्पी तोड़ ली, 'क्या बात है, गुड़िया? आज क्या चाहिए साफ़ साफ़ बता।' तब जाकर ट्विंकल ने अपने सपनों की उड़ान के लिए पंख मांगे। सुनते ही तो दादी के चेहरे का रंग उड़ गया, मगर ना भी किस मुँह से बोलती, अब तो पैसे भी नहीं देने और पूत के पांव पालने में ही दिख रहे थे, सारा खर्चा सरकार जो उठाने वाली है। 'ना रे, गुड़िया, तेरे बाप को कौन बोले, मेरी तो शामत नहीं आई जो नाग के बिल में हाथ डालूं।' 'दादीमाँ, आप ऐसा नहीं कर सकती। जब सुप्रीम कोर्ट अपना फैसला सुनाएगा तो हाई कोर्ट क्या कर लेगा।' ट्विंकल की बातों पर दादी ने भी कहा, 'तेरी बातों में तो दम है, इसीलिए तो तूने सीधे सही ऑफिस में अपनी फाइल पंहुचा दी, है न? ठीक है, आज रात को आने दे अनाकोंडा को देखें क्या हो सकता है।' वही हुआ, जिसका डर था, उसके पिताजी के सामने बात रखते ही तो ऐसे लगा जैसे उन्हें ४४० वोल्ट का करंट लग गया हो। अजीब अजीब सी शक्ल बना बना कर जो अलंकारों की वर्षा शुरू हुई, की बाढ़ ही आ जाये। मगर आज तो दादी पोती ने भी बरसाती, और हेलमेट और कवच कुण्डल सब धारण करके ही मैदान में कदम रखा था, तो पीछे हटने का तो सवाल ही नहीं था। बड़ी के सपने पूरे नहीं हुए थे, मगर वो अपनी छोटी को भी नहीं बोलने की या एक कोशिश नहीं करने की ग्लानि के साथ जीने नहीं छोड़ सकती थी, तो उसने भी उसका पूरा साथ दिया और जब हवा का रुख बदला, बदला नजर आये, तो स्वयं को भी उसी दिशा में मुँह करके खड़ा होना ही अक्लमंदी है। ये बात दोनों चुटकु को समझा दी गई, तो वो भी मैदान में साथ हो लिए। कई दिनों तक संग्राम चला। भोजन में लापरवाही, बोलचाल में कंजूसी, चेहरों पर घोर पीड़ा के साये लिए जब सभी घूमने लगे, तब जाकर इसके पिता ने हथियार डाल दिए। तब बहुमत से जीती गई सरकार बनी। अब दादी पोती की मिली भगत से बात बन गई, नहीं तो मेरे भरोसे तो आगे की पढ़ाई हो चुकी थी। अभी कहाँ, इतना भर थोड़े ही था।"

अचंभित सी अनुराधा ने कहा "मतलब, क्या अभी भी बात नहीं बनी?"

रंजना ने कहा कि “अगर समस्याओं का किसी से गहरा नाता हो, तो वो इतनी आसानी से कैसे छूट सकता है।”

“मतलब, आप क्या कहना चाहती है?” अनुराधा की उत्सुकता और बढ़ने लगी।

तब रंजना ने बताया कि “जब ट्विंकल के पिताजी ने हाँ कर दी तो सब तैयारियों में जुट गए, वैसे ही इस तरह की बातें भला किसी से छुपती है क्या। फिर क्या था, ट्विंकल पढ़ाई के लिए कोटा जाएगी यह बात अखबार की हेडलाइन बन गई। आस-पास वाले, नातेदारों में हड़कंप मच गया। किसी का आना तो किसी का जाना शुरू हो गया। और इसी क्रम में किसी ने आग में घी डालने का काम कर दिया, ट्विंकल के पिताजी से कह दिया कि भाई बेटी को भेज तो रहे हो मगर आपने सुना है कि नहीं कि आजकल कोटा में बच्चों ने आत्महत्या को अपनी परेशानियों की दवा बना लिया है। बस फिर क्या था, नया हंगामा शुरू हुआ। टीवी में तो ये बातें जोर-शोर से सुनाई जा रही हैं, मगर सच झूठ किसे पता है। अब उसके बाबूजी हरगिज़ नहीं माने, करे तो क्या करे? फिर से वही सब शुरू हुआ, रूठना-मनाना चला। बच्चे और आत्महत्या सुन कर ही कलेजा मुँह को आया। ये तो कितना गलत हो रहा है।”

तब रंजना ने अनुराधा के चेहरे के उड़ते रंग को भांपते हुए उनसे पूछा कि “आपने भी ये सब सुना है क्या?”

अनुराधा की मुँह में तो जैसे जबान ही न हो। तब भी जैसे-तैसे अनुराधा ने कहा “हाँ सुना तो मैंने भी था मगर सब कुछ अनसुना कर आगे बढ़ने को तैयार भी हुए हैं।”

अनुराधा ने बहुत दुःख के साथ कहा कि “अगर इस बात में जरा भी सच्चाई है तो बहुत ही दुःख की बात है। मगर हम कर भी क्या सकते हैं। सड़क पर आये दिन हादसे होते हैं तो क्या गाड़ियाँ चलनी कम हो जाती हैं? नहीं ना, ठीक वैसे ही सब कुछ चलता है, बस जिसका नुकसान होता है उसका जीवन दुश्वार हो जाता है। यही जीवन है। जीवन का सफर जो कभी भी और किसी के लिए भी नहीं रुकता। चाहे दुनिया इधर से उधर हो जाए।”

अनुराधा की बातों से रंजना सहमत थी, मगर चिंतित भी बहुत हो रही थी। ऐसा मुद्दा उठ गया जिसे कैसे नजर अंदाज कर सकते हैं। ऐसी दुखद बात है कि बच्चे जिनके आगे पूरा जीवन है, जिन्होंने अभी खुल कर जिया ही नहीं, वो इस दुनिया से चला गया। वो भी अपने ही हाथों, बहुत ही गंभीर बात है, अत्यंत दुखदाई। जिनकी गोद सूनी हो जाती होगी, उनका क्या हाल होता होगा, सोच कर ही रूह काँप उठती है।

जब रंजना दुःखों में डूबने लगी, तब अनुराधा ने ही बात बदलते हुए उनसे पूछा कि “फिर ट्विंकल का आना कैसे संभव हुआ?” तब रंजना ने बताया कि “उसकी दादीमाँ ने ही बात सँभाली। इनको समझाया कि ट्विंकल एक समझदार लड़की है, वो कभी भी कुछ गलत नहीं

करेगी। लेकिन आज अगर तुम इसे रोक लोगे तो जरूर गलत करोगे। अरे जरूरी थोड़े ही है कि सब के साथ एक ही बात हो। हम भी सावधानी रखेंगे और इसे भी सिखाएंगे, तो सब शुभ मंगल ही होगा। इनको बच्चों वाली बात हजम करने में थोड़ा वक्त लगा, मगर मान गए। अंत भला तो सब भला।"

एक फांस सी दोनों माओं के हृदय में चुभ गई, जो कब निकलेगी देखते हैं। रंजना की दास्ताँ सुनकर अनुराधा अपने परिवार पर गर्व महसूस करने लगी। उसकी दोनों बेटियां पढ़ने में जितनी दिलचस्पी लेती हैं, उसके पिता और दादा उससे कहीं ज्यादा उन्हें पढ़ाने में लेते हैं। ये रेलगाड़ी देखो, कैसे दो विपरीत दिशा में बढ़ते परिवारों को मिलाने का माध्यम बनी। ये दुनिया भी अजीब जगह है, कौन कब कैसे कहाँ मिल जाए, कुछ कहना मुश्किल है। बातों बातों में ही अनुराधा ने ये तो जाना कि आज भी समस्त भारत एक जुट होकर आगे नहीं बढ़ रहा है। गाँव के गाँव आज भी पिछड़े हुए हैं। अपनी मंजिल पर पहुंच कर दो नई सहेलियाँ एक दूसरे का फोन नंबर ले कर फिर मिलने का वादा कर स्टेशन पर उतर गईं।

कोटा की धरती पर कदम रखते ही अनुराधा की धड़कने तेज़ तेज़ चलने लगीं। सफर का असर अभी ख़त्म नहीं हुआ था। रंजना के साथ जो भी बातें हुईं, सब आँखों के सामने घूमने लगीं। बच्चे, उनका आत्महत्या करना, उनके घरवालों का विषाद, सब अनुराधा को कमजोर बनाने लगा। अफ़सोस! परिस्थिति ऐसी थी कि वह चाह कर भी ना ही दुखी हो सकती थी और ना ही अपने कदम वापस ले सकती थी। बढ़ना तो है, अब देखें कि आगे क्या होता है? इसी प्रश्न के साथ उसने आगे कदम बढाए।

अध्याय : २
उलझन

“मन के हारे हार है, मन के जीते जीत”

सबकुछ आलोक ने पहले से ही तय कर दिया था। अनुराधा ओला से सीधे लड़कियों के छात्रावास पहुंच गई। दिव्यांशी साथ रहती है तो वैसे भी अनुराधा को कोई फ़िक्र करने की जरुरत नहीं होती वह अपने आप सब संभाल लेती है।

छात्रावास काफी अच्छा था, ९ मंजिला ईमारत, हर फ्लोर में ३५ कमरे, लगभग-लगभग सभी में लड़कियां रह रही थी कोई एक्का-दुक्का ही खाली होगा। वैसे भी यहां चक्र चलता ही रहता है जैसे सूर्य की गर्मी से जल भाप बनकर उड़ जाता है और फिर बादल बन कर बरस पड़ता है उसी तरह यहां लड़कियों का आने और जाने का चक्र चलता ही रहता है। किसी ने फाइनल दे दिया तो उसे जाना है तो किसी को नए सिरे से पढ़ने आना है। इस सिलसिले में हॉस्टल वालों को कमाना है। हॉस्टल वालों की पाँचों उंगलियां घी में होती है। नहीं-नहीं भला मुझे क्यों किसी की कमाई से जलन होने लगी, न तो मुझे कोई दो अन्नी देगा न ही मेरे से ज्यादा कुछ ले लेगा। जितना सबसे लेगा उतना मुझे भी देना होगा बस। हाँ एक बात है इस हॉस्टल में सुविधाएं सारी है। मानना पड़ेगा खाने, सोने, पढ़ने, सुरक्षा सभी मुद्दों पर ये हॉस्टल खरा उतरता है बिलकुल एक सर्वगुण संपन्न बहु की तरह। घर की याद ने मन को ऐसे ही थका रखा था ऊपर से सुबह ५ बजे ही उठना है सोच कर ही थकान से बुरा हाल होने लगा। जल्दी सोने के कई कारण मिल गए बस फिर क्या था काम को अंजाम दिया गया।

आज दिव्यांशी के जीवन के सफर में एक नई राह जुड़ने वाली थी। इस राह पर उसे आगे बढ़ना है और सफलता हासिल करनी ही है। यही उसके जीवन का उद्देश्य है। राह कठिन हो सकती है मगर उसके हौसलों की मजबूती के आगे कुछ भी नहीं है। अनुराधा ने उसे टीका लगाया और माँ सरस्वती की वंदना कर उड़ान भरने को प्रेरित किया। कोचिंग में पहला दिन सब कुछ नया-नया, शिक्षक, सहपाठी, कक्षा, बोर्ड, कुर्सी, टेबल सब कुछ नया। वैसे भी हर एक के जीवन में 'नए' कि कितनी अहमियत होती है ना। नए कपडे, नया घर, नई गाड़ी, बस नया कुछ भी, है न। उत्साह और उमंग के साथ दिव्यांशी ने अपने नए सफर की शुरुआत की। उसे मजा आ रहा था, घर से दूर रहकर पढ़ना, और कुछ हासिल करने की चाह एक नई स्फूर्ति प्रदान कर रही थी। साथ ही अपनों से विशेष स्नेह मिलना और खास सुविधाएँ उपलब्ध होना बच्चों को नया जोश दिलाता ही है। उसी जोश जोश में वह आगे बढ़ रही थी। शिक्षक और सहपाठियों से अच्छी जान पहचान हो गई थी। पूरे हर्ष और उल्लास के साथ पढाई कि जा रही थी।

मगर कहते हैं ना कि कभी कभी खुद को खुद कि ही नजर लग जाती है। दिव्यांशी के साथ भी वही हुआ। दिव्यांशी का ये जोश ये उत्साह ज्यादा दिनों तक नहीं रहा। इतना कुछ था करने को की वह संतुलन ही नहीं बना पा रही थी। कितनी भी जल्दी उठे, कितनी भी फुर्ती

से काम कर ले जो की आज तक उसने नहीं किया, कितना भी याद करने की कोशिश करे मगर लगता है जैसे सब सर के ऊपर से जा रहा है, दो कदम सफलता की ओर बढ़ाने की उसकी कोशिश विफल होती जा रही थी इतना ही नहीं ये सब उसे निराशा की ओर चार कदम ढकेल रहा था। नई जगह, अनजाने लोग, मुश्किल पढ़ाई, उसको तो सबकुछ घूमता नजर आने लगा। सब कुछ फ़ास्ट फॉरवर्ड, पढाई के अलावा कुछ भी करना जैसे महा अपराध। वहाँ तो कुछ भी करना मतलब समय नष्ट करना और यहां अगर टिकना है तो समय के साथ कदम से कदम मिला कर चलना ही होगा।

कोई किसी से नहीं बोलता, मेरा तात्पर्य पढ़ने वालों से है ऐसे तो वेल्ले कई मिल जायेंगे। शिक्षकगण पढ़ाएंगे मगर ऐसा की आप चाह कर भी उसे नजरअंदाज करके मटरगस्ती में नहीं घुस सकते। एक अदृश्य शक्ति है जो हर रोज आपके दिलो दिमाग पर अपना कसाव थोड़ा थोड़ा बढ़ाती जाएगी। और इस कसाव को जो बर्दास्त करने में सफल हो जाता है तो वो तो एक अहम् पड़ाव पार कर लेता है और जो कमजोर दिल का होता है उसकी मुश्किलें बढ़ जाती है। अभी जैसे दिव्यांशी की बढ़ रही है। ऐसे में एक सारथी की सख़्त जरुरत आती है, अर्जुन को भी तो कृष्ण ने ज्ञान की बंसी सुनाई जिसके सहारे ही उन्होंने कुरुक्षेत्र में विजय प्राप्त की। अगर कृष्ण अर्जुन के सारथी नहीं बनते तो क्या पांडवों की विजय मुमकिन थी, नहीं ना। ठीक वैसे ही बच्चों को भी इस मुश्किल राह में एक सच्चे और अच्छे सारथी की जरुरत होती है। वो सारथी उसके अपने माँ बाबा भी हो सकते हैं और उनके शिक्षकगण भी। जो उन्हें समय समय पर हौसला दें और सही गलत की परख करवाते रहें नहीं तो यही वो मुश्किल घड़ी होती है जिसमे बच्चे बाहर सहारा ढूढ़ने लगते है और गलत दिशा में निकल पड़ते है। कभी गलत संगती तो कभी गलत आदत।

दिव्यांशी कुछ घबराहट, कुछ चिंता से मानसिक तौर से हिल गई। इतने सालों से घर पर रहकर स्कूल की पढाई करना और कोटा आकर पढ़ाई करने में जमीं आसमान का फरक महसूस करने वाली दिव्यांशी का मनोबल कमजोर पड़ने लगा। अपने स्पर्धियों से कितनी पीछे होने की आशंका ही उसे तोड़ रही थी। भावना में बहकर मैदान में उतरना और बात होती है और प्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध में टिके रहना और बात है। असीमित विचारों का आवागमन उसके ह्रदय को झकझोरने लगा, क्या उसका निर्णय सही था? क्या वाकई में उसे यहां आना चाहिए था?` क्या उसमें काबिलियत है या उसे यहां से चले जाना चाहिए? अगर घर पर या बाहर भी किसी को बोलूं की मुझे कोटा में नहीं पढ़ना है तो सब क्या सोचेंगे? माँ बाबा तो टूट जायेंगे, मैंने उन्हें निराश कर दिया क्या? उनका सर शर्म से झुक जायेगा? इसी मंथन के साथ अब उसकी जिंदगी रेंग रेंग कर आगे बढ़ने लगी।

अनुराधा उसके साथ ही थी मगर तब भी दिव्यांशी अपने दिल की बात उनसे करने में झिझक रही थी। बच्चों में ये छिछक ही तो उसका सबसे बड़ा शत्रु होता है। वह अपनों से अपनी मन की बात करने में झिझकता है, वो अपनी तकलीफ़ किसी से साझा करने में झिझकता है, वह झिझकता है अपने हालात का सामना करने से। मगर क्यों? क्या उसका अपनों से वैसा लगाओ नहीं है जैसा की होना चाहिए या वह किसी पर विश्वास नहीं कर पाता है। अगर ऐसा कुछ भी है तो उसकी क्या वजह हो सकती है? यह एक गंभीर और विचार करने वाला विषय है। दिव्यांशी की गुत्थम-गुत्थी अभी भी चल ही रही थी। उसके सवाल अभी भी उसका साथ निभा रहे थे। क्या माँ उसकी बात समझ पायेगी? शायद गुस्सा हो जाये, इतने पैसे भी तो खर्च हो गए। क्या करूँ? पापा को फ़ोन करती हूँ, वो जरूर समझेंगे। नहीं अभी रहने देती हूँ एक दो पेपर दे कर देखती हूँ कुछ हो जाये। मैं व्यर्थ ही परेशान हो रही होउंगी। इन्ही तरह के विचारों के चक्रव्यूह में उलझी दिव्यांशी मुखौटा पहने माँ के सामने, औरों के सामने सामान्य दिखलाने की कोशिश करती आगे बढ़ने में जुट गई। क्या उसकी कोशिश सफल हुई? आइये हम भी आगे बढ़ते है।

उतरे थे युद्ध में हथियार और कवच डाल कर
जीतने के जूनून को सर पर सवार कर
न पहचाना था दुश्मन की ताकत को
न समझा था आने वाली आफ़त को

पर अब भी कोई गम नहीं
आग का दरिया हुआ तो क्या हुआ
फौलाद हम भी कुछ कम नहीं
देखो दिल में जोश अब भी कुछ कम नहीं

न मन भर इनका बस्ता होता
डॉ इंजीनियर का ख़्वाब न इतना सस्ता होता
कठिनाइयों से भरा न इनका रास्ता होता
किसी ने तो इन्हे कह दिया होता
चुन अपनी राह बना अपने रास्ते
फिर देख मंज़िल को पाना कितना आसान होता

अध्याय : ३
भूख
"जीत, सफलता या उदार की यह तय करेगा कौन?"

अनुराधा सारी व्यवस्था करने में जुटी हुई थी। अरे भाई बेटी बड़ी पढ़ाई करने जा रही है, परिवार को गौरवान्वित करेगी तो उसे किसी भी बात की दिक्कत नहीं होनी चाहिए। वो मुँह से कुछ भी निकाले उसके पहले ही वो पूरा होना चाहिए। आगे से आगे उसकी जरूरते उसकी पसंद पूरी हो इसका ख्याल पूरा परिवार रख रहा था। अनुराधा साथ रहकर और बाकी सब दूर रहके भी। अभी अनुराधा और दिव्यांशी को आये १५-२० दिन ही हुए होंगे और सरप्राइज पार्सल आने शुरू हो गए। कभी पिताजी लीची भेज रहे है तो कभी दादा जी आम कभी देविशि कुछ उपहार जिसे देख दिव्यांशी को हौसला मिलता रहे।

कुछ दिनों तक यहां रहने से, थोड़ा घूमने से जब अनुराधा ने कोटा को देखा, कोटा शहर से थोड़ी जान पहचान हुई तब जाकर उसे एक बात समझ में आई की दिव्यांशी बिलकुल सही कह रही थी। कोटा है अति सुंदर, मनमोहक, आकर्षक शहर। एक से एक अप्रतिम मूर्तियां हर चौराहे पर किसी भी और शहर में देखने को नहीं मिलेगी जैसी यहाँ देखने को मिली। शिक्षा की काशी कोटा और यहां पढ़ने वाले बच्चे उस काशी की गंगा का जल। जब एक साथ बच्चे बिल्डिंग से बाहर निकलते है तो ऐसा लगता है की गंगा का जल हर हर करके उफन रहा है। अद्भुत दृश्य, किसी नदी के पूरे जोश में इतराते हुए बहने का भाव दर्शाते हुए ये बच्चे सच में मंत्र मुग्ध कर देते हैं। इतनी संख्या में बच्चे, किसी का चमचमाता मुखड़ा, किसी का उदास टुकड़ा, कोई अपनी धुन में तो कोई सुनने सुनाने में व्यस्त। कितना भार है न इन मासूम बच्चों के कांधों पर। बस्ता भी भारी और जिम्मेदारी भी भारी। आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में सही में बच्चा होना कोई बच्चों का खेल नहीं है। अनुराधा अपने दिन याद करने लगी, वो भी क्या दिन थे, न कोई स्पर्धा न कोई भार। बच्चे मस्तमौला आजाद पंछी हुआ करते थे।

बचपन के क्या वो दिन थे
माटी से सने तन थे
फोड़े कितनो के खिड़की और मटके बिंदास थे
उछलते कूदते फांदते गिरते हम थे

बचपन के क्या वो दिन थे

माटी हटी अब वर्दी लगी इस तन से
बाग़ बगीचे खेत खलियान
चली गई सुध इनकी इस जहन से
बुझता मुखड़ा थकता दिमाग
जीवन भरा देखो केवल स्पर्धा से

बचपन के क्या वो दिन थे

कुछ बनना है कुछ करना है
मास्टरजी ने भी यही कहा
पिताजी भी यही कहा करते थे
मगर अल्हड़-अलपरवे बिंदास हम रहा करते थे

बचपन के क्या वो दिन थे
माटी से सने तन थे

अनुराधा स्वयं को समझाने लगी की शायद तभी हम कुछ नहीं कर सके, इनकी तरह हम भी पढ़-लिख लेते तो आज अपने पैरों पर खड़े होते। ख्यालों में डूबी अनुराधा हॉस्टल के बाहर की सीढ़ी पर बैठी थी तभी किसी ने आवाज लगाई, “लगता है आप काफी दिनों से यहां है।”

अनुराधा का ध्यान उस ओर गया एक महिला जो दिखने में साधारण ही लग रही थी। शिफॉन की साड़ी में लम्बी पतली होने की वजह से उनका बदन गठीला दिखाई दे रहा था। लगता है कोई खिलाड़ी है उनके एब्स तो कुछ ऐसा ही बयान कर रहे थे। आँखों पर काला चश्मा लगा कर बगल में बटुआ टांग कर खड़ी खड़ी बातें करने के साथ साथ बार बार अपनी साड़ी ही ठीक किये जा रही थी। वो महिला काफी स्मार्ट दिख रही थी।

“जी हाँ!” अनुराधा ने हल्की मुस्कान के साथ उन्हें जवाब दिया और बैठने का इशारा भी किया।

अनुराधा के जवाब देने पर उस महिला ने कहना शुरू किया “मुझे आये दो ही दिन हुए है, आपसे कुछ जानकारी लेनी थी अगर आपको कोई आपत्ति ना हो तो।”

जब उस महिला ने बड़ी विनम्रता से पूछा तो अनुराधा ने भी उतनी ही शालीनता से जवाब दिया। “अरे हाँ-हाँ कहिये ना क्या जानना है आपको। अगर मैं आपके किसी भी काम आ सकी तो मुझे ख़ुशी होगी।”

“मेरा नाम संगीता है मैं इस हॉस्टल के बारे में जानना चाहती थी। अगर लड़कियां अकेली रहे तो कोई डर तो नहीं है ना। मेरा मतलब मैं चली जाऊं तो कोई दिक्कत तो नहीं होगी।”

अनुराधा हसने लगी। तब संगीता थोड़ी असहज हो गई, “क्यों क्या हुआ? मैंने कोई गलत बात पूछ ली क्या?”

उस महिला को असहज देख अनुराधा ने हसते हुए कहा की “बिलकुल भी नहीं, यहां आने वाली हर माँ का यही सवाल रहता है। मुझसे न जाने कितनो ने ऐसे ऐसे कई सवाल किये है। आपसे क्या कहूं जब मैं भी यहां पहली बार आई थी तो मैंने भी इन्ही सब सवालों के जवाब मांगे थे। आप अपनी जगह बिलकुल सही और सामान्य है।” जो सच था अनुराधा ने वही बताया की बच्चियां यहाँ बिलकुल सुरक्षित है, यहां के लोग अपनों की तरह ही बच्चियों की देख रेख करते हैं। यहां किसी बात की दिक्कत नहीं होगी, हाँ एक बात है जब तक आप सही है तब तक ही सामने वाला भी सही होता है। अनुराधा के ऐसा कहने पर संगीता के चेहरे पर प्रश्नवाचक भाव उत्पन्न हो गए। तब अनुराधा ने बताया की लड़की अगर अपनी सीमारेखा का ख्याल रखेगी और अपनी पढाई से मतलब रखेगी तो सब उचित है अन्यथा परिस्थिति को बदलने या बिगड़ने में कितना समय लगता है।

“हाँ आप बिलकुल सही कह रही है,” संगीता ने भी अनुराधा की हाँ में हाँ मिलाया। बातों का सिलसिला तो ऐसे शुरू हुआ जैसे वर्षों की दोस्ती है। हम औरतों को भी ईश्वर ने कितनी अच्छी कला से नवाजा है ना, की पलों में दोस्ती कर लेते है और जीवन भर निभा भी लेते है। मेरा तो मानना है की हर किसी में ये कला तो होनी ही चाहिए, अगर ऐसा होता तो शायद चीन और पकिस्तान हमारे इतने कट्टर शत्रु नहीं होते। संगीता की फिक्र अभी ख़त्म नहीं हुई थी, उसने पूछा की “खाना कैसा मिलता है? दरअसल मेरी गुड़िया साक्षी चुगवा ही चीजे खाती है। इसी से मुझे ज्यादा चिंता हो रही है पता नहीं वो यहां रह पाएगी या मुझे ही उसके साथ रहना होगा।”

अनुराधा को एक बार फिर हँसी आ गई। “चिंता की कोई बात नहीं है,” अनुराधा ने बताया। “इन्हे अच्छी तरह पता है की किसी भी कठिन कार्य को करने के लिए अत्यंत आवश्यक है की मनुष्य के उदर की आग शांत रहे। जैसे हम पत्नियों को पता होता है की पति के दिल का रास्ता उसके पेट से होकर जाता है ठीक उसी तरह इन्हे भी मालूम है की बच्चों को तृप्त और संतुष्ट कैसे रखा जा सकता है, बच्चों को क्या खाना पसंद है और क्या उनके लिए पौष्टिक है।” अनुराधा ने बताया की मेस में यूँ भोजन परोसा जाता है जैसे की किसी समृद्ध परिवार के किसी कार्यक्रम में परोसा जाता है। भांति भांति के व्यंजन, जो स्वाद से भरपूर होते है। हर पहर अलग रसोई अलग व्यंजन, साथ ही दूध, दही, सलाद, पापड़, अचार, फल, नींबू, लस्सी, शरबत तो ऐसे शामिल होते है जैसे विवाह में घर के बड़े बुजुर्ग। जिनकी उपस्थिति के बगैर तो विवाह संपन्न ही नहीं हो सकता। हाँ दिक्कतें तब भी होती है। जैसे ही संगीता कुछ खुश होती है ठीक वैसे ही अनुराधा एक फूलजड़ी छोड़ देती है। संगीता का मन तुरंत उद्विग्न होने लगता है।

बड़े उदास मन से संगीता ने कहा की “अभी क्या दिक्कत हो सकती है सब तो कितना अच्छा अच्छा है।”

अनुराधा ने वही दिक्कत उजागर की जिससे अभी तक वह भी बहुत परेशान है वह यह की, “एक गंभीर समस्या है जिससे हर कोई गुजर रहा है। वो ये की खाना मसालेदार होता है और जिससे भोजन और पेट की दोस्ती में रुकावटें आती है। पेट कहता है मैं क्यों दबु और भोजन कहता है भला मैं क्यों किसी की सुनु। बस फिर क्या है ऐसे हालात में तो हमेशा पेट ही कमजोर पड़ता है। उसी को कभी दर्द, तो कभी डायरिया तो कभी कब्ज जैसी शिकायतें होने लगती है। दुनिया का दस्तूर भी तो है जो बलवान जीत उसी पे मेहरबान। कमजोर को ही सहन करना होता है।”

“तो क्या कोई शिकायत नहीं करता,” संगीता ने बड़ी उत्सुकता से कहा।

“मैं तो आज ही कहूँगी की तेल मसाले कम इस्तेमाल करे।” संगीता कि उत्सुकता देख कर अनुराधा ने कहा कि आप भी कोशिश करके देख सकती हैं हमने तो हथियार डाल दिए। अब दही दूध छाछ पे ज्यादा कंसन्ट्रेट कर लेते है। एक बार फिर दोनों सखियों के मुखड़े पर मुस्कान बिखर गई।

अनुराधा ने बताया की “मेरी बेटी तो कहेगी ‘माँ तुम ही खाना बना दिया करो। यहां के भरोसे तो डॉ तो बन जाएंगे मगर लगता है उसके पहले डॉ की जरुरत हमें ही पड़ जाएगी।’ जब मैं उससे मजाक करती हूँ की मेरे से यहां खाना नहीं बनेगा तो शैतान कहती है की ‘एक जमाना था जब माये बच्चों के लिए चूल्हे में खाना पकाती थी और वो भी बड़े चाओ से और अभी वाली मम्मी से खाना की बात भी मत करो। सही है मां।’”

शैतान कहती है…

माँ पकाती थी खाना

साधारण स्वादिष्ट रोजाना
उनका मनुहार करके हमें खिलाना
हम ढूंढते थे इसका रोज बहाना
कभी चोट का करते बहाना
कभी यूँ कहना आज आपको ही है खिलाना

माँ पकाती थी खाना

चारो पहर उठते बैठते
उनका था एक ही गाना
आज खाने में क्या है बनाना

माँ पकाती थी खाना

यहां होगा भले ही खाना खजाना
रेडियो पर बजता भी है गाना
परन्तु न ममता न मनुहार
न ही कोई बहाना

माँ पकाती थी खाना

"ओह हो, आपकी बेटी तो बड़ी नटखट लगती है। माँ को देखो कैसे कैसे सताती है," संगीता मजे लेते हुए अनुराधा से कहने लगी। दोनों ने ठहाके लगाए। हमने एक दूसरे के बारे में तो कुछ पूछा ही नहीं, तब से और बातें ही किये जा रहे है।

तब संगीता ने ही शुरू किया की वो रायपुर की रहने वाली है। वो एक वकील है और उसकी एक लड़की और एक लड़का है। उसके पति सरकारी नौकरी में है। दोनों अलग ही रहते है। पति को जॉब के बिना नहीं चल सकता और उसे अपने कोर्ट कचहरी के बिना। दोनों ने ही अपने अपने काम को अहमियत देते हुए इस तरह जीवन बिताने का फैसला लिया है। महीने में एक बार एक जगह पर इकट्ठे होकर बीते दिनों की कमी पूरी कर लेते है।

संगीता ने आगे बताना जारी रखा, "शादी की पहली रात को ही मैंने रितेश से अपने मन की बात कह डाली, यही की मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। बस फिर क्या था रितेश से जहां तक बन पड़ा उसने मेरा साथ दिया। हालांकि सास जरा भी नहीं चाहती थी की बहु पढ़ाई करे, उल्टा कहती की बड़ी आई पढ़ेश्री। मगर रितेश ने किसी की नहीं सुनी। ससुरजी तो थे नहीं और रितेश घर में सबसे बड़ा था तो उसे रोकने वाला भी कोई नहीं था। वैसे भी वो कोई गलत तो करने जा नहीं रहा था जो कोई उससे जबरदस्ती भी करता। मैंने भी लगन से लॉ की पढाई पूरी की। इसी दौरान बच्चे भी हो गए। सब संभल गया। मुश्किलें तो बहुत आई मगर पार लग गया। सास ने भी शुरू शुरू में विरोध किया मगर जब मेरी लगन देख ली तो उन्होंने भी मेरी सहायता की। घर के और काम तो मैं आगे पीछे कर लेती मगर बच्चों को वो ही रखती, इस तरह मेरे जीवन की गाड़ी तो अपनी रफ़्तार पकड़ ली। आज अपने पैरों पर खड़ी हूँ, अब अपने बच्चों को उनकी मंजिल तक पहुँचाना है, बस।"

इस तरह पति से दूर रहकर जीवन व्यतीत करने की बात सुन कर ही अनुराधा अचंभित हो गई। ऐसा भी होता है आज कल। उसके चकित चेहरे को देख संगीता समझ गई की अनुराधा के गले से बात नीचे नहीं उतर रही। उसने फिर कहना शुरू किया, “होता है, ऐसा आजकल कई घरों में होता है अनुराधा जी।”

अनुराधा को अभी भी यकीन नहीं हो रहा था उसके लिए तो आलोक के बगैर कोटा में रहना ही किसी सजा से कम नहीं है। वो तो बच्चों के लिए करना अति आवश्यक है तो वह तैयार हुई अपितु वह तो नहीं रह सकती है। खैर उसे क्या लेना इन सब से।

संगीता ने बताया की कैसे बच्चों को इतना बड़ा किया। “कभी कुछ दिन रितेश छुट्टिया लेता तो कभी मैं। कभी बच्चों को छुट्टिया करवाके एक साथ रहने का प्रोग्राम बनाते। इस तरह कई उतार चढ़ाव के बाद आज यहां तक पंहुचे है। ऊपर वाले की कृपा ही थी की बच्चे भी सही दिशा में ही आगे बढ़ते गए। हाँ बच्चों की बात से एक बात याद आ गई, मैं एक अहम् बात और जानना चाहती थी की जो मैंने सुना है क्या वो सच है?”

इस तरह से गंभीर मुद्रा में संगीता ने सवाल किया तो अनुराधा भी सकपका गई उसने कहा की “अब ये मुझे कैसे पता होगा की आपने क्या सुना है?”

तब संगीता ने कहा “बताती हूँ थोड़ा संकोच भी हो रहा है लेकिन फिर भी बताना मेरे लिए बहुत जरुरी है।”

“हाँ हाँ बेझिझक कहिये आपको ज्यादा सोचने की जरुरत नहीं है।”

“मैंने किसी से सुना है की यहां कोटा में आजकल गलत काम ज्यादा हो रहे है। इस हॉस्टल की बाजु वाली गली तो कुछ ज्यादा ही नाम कमा रही है।”

“किस मामले में आप थोड़ा खुल कर बताये।”

“यही की बगल वाली गली में गुल खिल रहे हैं। उस गली में लड़कियाँ न जाने कहाँ जाती है और किससे मिलती है पता नहीं, इतना जरूर सुना है की रोज एक न एक काण्ड हो रहे हैं।”

अनुराधा से रहा नहीं गया उसने बोल ही दिया “माफ़ कीजियेगा संगीताजी आपको इस हॉस्टल के बारे में तो कुछ नहीं पता था मगर आपको उस बदनाम गली की पूरी जानकारी है। यह कैसे संभव हुआ।”

अनुराधा जी के कटाक्ष पर संगीता को थोड़ा अजीब लगा, “अरे आप तो मुझे शर्मिंदा कर रही है। ये सब बातें किसी से छुपती थोड़े ही है ये तो कपड़ों में लगे उन जिद्दी दाग की तरह होते हैं जिनको चाह कर भी आप छुपा नहीं सकते। मेरे पड़ोस की बच्ची यहां दो साल से पढ़ रही है उसी के घर से ये सब सुना था।”

तब अनुराधा ने कहा, "अच्छा मगर मैंने तो ऐसा नहीं सुना तो मैं आपको कैसे बता सकती हूँ।"

तब संगीता जो सुन कर आई थी वो अनुराधा को बताने लगी, "अजी क्या बताऊँ आपको वो बच्ची जो मेरे पड़ोस में रहती थी बेचारी आई तो थी यहां पढ़ने लेकिन गलत संगती की वजह से कोई और ही पढ़ाई में लग गई। अपना जीवन और करियर दोनों ही दाँव पर लगा दिया। अब रोती है, मैंने तो एक बार सुना था रो रो कर उस लड़के से मिन्नतें कर रही थी की तुम मुझे अपना लो नहीं तो मेरी जिंदगी बर्बाद हो जाएगी। मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ बर्बाद कर दिया वगैरह वगैरह। मगर उस नालायक को अब उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, सो उससे मुँह फेर लिया। अब बेचारी बताती है की कैसे उसे फुसला कर उसी गली में लेकर जाता था और दोनों शरबत पीते थे और उसके बाद का उसे कुछ याद ही नहीं रहता था। जब होश में आती थी तो वह अच्छी भली बैठ जाती और वह भी वहीं उसके बगल में ही बैठा रहता। हर बार कहता की लगता है तुम्हें थकान से नींद आ गई थी। बाद में असलियत सामने आई तब तक देर हो चुकी थी। पढ़ने में इतनी होनहार, ये भी नहीं की घर वालों ने ज़बरदस्ती भेजा हो। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी सो अपनी मर्जी से आई थी। मगर देखो आज बारूद के ढेर पर खड़ी है। कहते हैं न विनाश काले विपरीत बुद्धि। अब अच्छे बुरे की परख नहीं कर पाई और हौले हौले कब दलदल में धस्ती चली गई उस नादान को एहसास ही नहीं हुआ। अब आप ही बताओ जबरदस्ती भेजे गए बच्चों की तो हम कह सकते हैं मगर जो पढ़ना चाहते है अगर वो भी नहीं पढ़ पाए तो इंसान क्या करे? माँ बाप भी बेचारे शर्म से किसी को कुछ नहीं कहते।"

अनुराधा को तो इन सब बातों से ही घबराहट होने लगती है। उसने संगीता को आगे कुछ भी कहने से मना कर दिया। अनुराधा की व्याकुलता बढ़ने लगी, क्या होता होगा उस गली में। कितनी वास्तविकता और देखने और सुनने को मिलेगी। कहीं भी अंत नजर नहीं आता। पता तो लगाना ही होगा आखिर बच्चियों की जिंदगी का सवाल है। दोनों की बातें अभी पूरी भी नहीं हुई थी की दिव्यांशी अपनी क्लास से लौट आई। अपने बातों का सिलसिला अधूरा छोड़ दोनों ही अपनी-अपनी बच्चियों में व्यस्त हो गई। वैसे भी जब से अनुराधा यहां आई है न जाने कितनी ही माँओं से उसकी पहचान हुई है। आते जाते किसी न किसी से दो चार बातें तो हो ही जाती थी।

अध्याय : ४
जीवन-मरण

दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार,
तरुवर ज्यों पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार।

दिव्यांशी को परेशान देख अनुराधा ने उससे पूछा कि “दिव्यांशी आज क्या बात है? कुछ हुआ है क्या, तेरे चेहरे का रंग क्यों उड़ा हुआ है? किसी ने कुछ कहा क्या?”

अनुराधा लगातार सवाल किये जा रही थी मगर दिव्यांशी है की अनुराधा कि किसी भी बात का जवाब नहीं दे रही थी। दिव्यांशी कि चुप्पी ने अनुराधा की घबराहट को और बढ़ा दिया। जब दिव्यांशी बगैर कुछ कहे रोने लगी तो अनुराधा तो बुरी तरह से डर गई। वैसे भी डर या घबराहट में इंसान को हमेशा बुरे ही विचार पहले आते है आज अनुराधा का भी ह्रदय किसी अनहोनी कि आशंका से भरा जा रहा था। “क्या हुआ कुछ बता तो,” प्रश्नों की वर्षा करती अनुराधा की भी आँखे लाल होने लगी। मगर दिव्यांशी है की बस रोती ही जाए।

अनुराधा के लाख पूछने पर भी जब दिव्यांशी ने कुछ जवाब नहीं दिया तब उसने आलोक को फ़ोन करना चाहा तब जाके दिव्यांशी ने उसे रोका और खुद थोड़ा पानी पिया। फिर प्रकृतिस्थ होकर विकम्पित आवाज के साथ ही कुछ कहने कि कोशिश की “देखो न माँ रोज क्लास जाती वक़्त एक लड़की इशिका से मेरी भेट होती थी। वो मेरे से सीनियर थी मगर आते जाते मुलाक़ात हो जाती थी। हमारी यह मुलाक़ात एक मुस्कान से शुरू होती और उसी पर ख़तम भी हो जाती। मगर न जाने क्यों उनमें एक आकर्षण था जो मुझे उनकी ओर खींचता था। हमारी यह मुलाकात दोस्ती में बदल गई। बातों बातों में पता चला कि पढ़ाई के अलावा वो कुछ भी नहीं करती थी। उनका जूनून अच्छा था मगर इतना करना हम जैसों के लिए थोड़ा अचंभित था। कहते है न कि कोई भी चीज कि अति ख़राब होती है "अति सर्वत्र वर्जयेत"। उनके साथ भी यही हुआ। ऐसे लगता है जैसे उन्होंने अपने आप को पढ़ाई कि अग्नि में झोंक दिया हो। पढ़ाई करने में तो उन्होंने कोई कसर नहीं रखी मगर फिर भी ना जाने क्यों सफलता उनसे रूठी ही रही। बेइंतहां किसी को चाहो तब भी अगर वो आपकी बाहों में नहीं आये तो कैसा लगता है इसकी आप कल्पना करो तो देखना कैसा गुस्सा आएगा, कैसी तकलीफ़ होती है। इसीलिए हो सकता है इशिका को भी गुस्सा ही आ गया हो और शायद गुस्से में ही उन्होंने गलत कदम उठा लिया। कहते है न कि क्रोध में लिया हुआ हर फैसला गलत होता है।”

अनुराधा बड़ी उत्तेजित होकर पूछने लगी “अरे कुछ बताओगी भी की यूँ ही भूमिका ही बांधती रहोगी।”

“माँ देखो न आज एक अप्रत्याशित घटना घट गई।”

“क्या हुआ तेरी इशिका को कुछ बता भी, नहीं तो मैं नहीं सुन रही तेरी बकवास।”

“माँ इशिका को इस जीवन से ज्यादा मरना सरल लगा। उन्होंने खुद को इस धरती के हवाले कर दिया।”

दिव्यांशी कि बातों ने तो अनुराधा के पैरों के नीचे से जमीन ही खींच ली। अनुराधा ये सब सुन कर कुछ ज्यादा ही क्रोधित और उत्तेजित होने लगी। "आज क्या बकवास किये जा रही है तू। भांग वांग खा कर आई हो क्या।"

"नहीं माँ बिलकुल सच्ची बात बता रही हूँ। वही जो सत्य है और जो अभी अभी सुन कर आ रही हूँ।"

अब तो अनुराधा भी विकम्पित सी कहने लगी, "ये सब फिजूल की बातें तुमने कहाँ से सुन ली।"

"माँ आज क्लास में बस यही सब बातें हो रही थी। इशिका कि असफलता ने उसके परिवार वालों कि उम्मीदों और आशाओं पर पानी फेर दिया, जिसे वो हजम नहीं कर सकी। उससे सबने कुछ ज्यादा ही उम्मीदें लगा रखी थी जिसका उसे अच्छी तरह एहसास था। अब वह सबको क्या मुँह दिखायगी इसी हीनभावना ने शायद उसको जकड़ लिया। अपने दिल दिमाग पर से उसका संतुलन ख़तम हो चूका होगा तभी ना उसने इतना भयावह कदम उठा लिया। अभी उसकी साँसे तो चल रही है मगर किसी भी पल थम सकती है। देखो ना माँ आज वो कैसी क्रिटिकल सिचुएशन में है। उसके घरवाले सब आ गए मगर अब क्या हो सकता है। वो तो नहीं बचेगी अब घरवाले किसको डॉक्टर बनने कहेंगे या किस्से उम्मीदें लगाएंगे?"

पहले तो रंजना ने दिल के उन तारों को हिला दिया था जिसे अनुराधा ने सबकी पहुंच से दूर छिपा कर ही यहां आने का फैसला लिया था अब ये दिव्यांशी ने फिर एक बार उन तारों को हिला दिया जिनके टकराने से एक करंट सा लगता है एक स्पार्किंग होती है जो अनुराधा के दिलो दिमाग को झकझोड़ कर रख देती है। दोनों को ही अनुताप तो बहुत हो रहा था मगर अर्थहीन प्रलाप करके अनुराधा दिव्यांशी को विचलित नहीं होने दे सकती थी।

अनुराधा ने दिव्यांशी को समझाया की "जब उसने मृत्यु का वरण किया तो यह उसकी महा मूर्खता है। मृत्यु कभी भी जीवन से श्रेष्ठ नहीं हो सकती। ये सब गलत काम होते है। अपनी इस अधोगति के जिम्मेदार वो स्वयं न भी हो, कारण कुछ भी हो सकता है मगर आत्महत्या किसी गहन से गहन समस्या का भी समाधान नहीं हो सकती।"

दिव्यांशी और अनुराधा का मन मस्तिष्क क्षोभ से भर चूका था। विषाद से घिरी अनुराधा और दिव्यांशी अपने आप को संयत नहीं कर पा रही थी। दिव्यांशी माँ की बातों को समझ ही नहीं पा रही थी। उसका बाल मन इन सिद्धांतो को, नियम कानून, सही गलत, किसी भी बात को नहीं समझ रहा था। बस उस इशिका ने जहर खाने की कोशिश की है इतना ही उसको व्याकुल किये जा रहा है। क्या कमजोर के हाथ अपने को नष्ट करने में इतने मजबूत

हो सकते है? दिव्यांशी के अन्तःमन में घनघोर झंझावात उठ रहा है। क्या करे वह? उसे अब यह नहीं समझ में आ रहा है की उसको उस इशिका का दुःख है या अपनी स्थिति उसके विलाप का कारण बनी है। देखा जाये तो उसके मन मस्तिष्क पर उस अदृश्य शक्ति का दबाव बढ़ने लगा है, जिसके अधीन वो स्वयं को लाचार, निहत्थी, कमजोर, निरुपाय समझने पर मजबूर हो रही है। वो चाह कर भी इस तूफ़ान से निकलने का रास्ता नहीं निकाल पा रही है। उसकी बेचैनी देख, उसकी ऐसी हालत देख अब तो अनुराधा को भी चिंता के बादलों ने घेर लिया। मगर चिंता से तो काम नहीं चलेगा, यहां तो चिंतन की आवश्यकता है। उसने दिव्यांशी को समझाने की बहुत कोशिश कि की जो भी ऐसा अपराध करता है चाहे उसका दुःख कितना भी बड़ा क्यों न हो वो एक अपराधी ही कहलायेगा।

क्या यह राह सही है? माँ बाप की परवाह किये बगैर इतना संगीन फैसला लेना कैसे जायज़ हो सकता है। ज़रा सोचो क्या पढ़ाई करना ही जीवन है? क्या अगर डिग्री नहीं प्राप्त होगी तो जीवन नस्ट कर देना इन्साफ है? वो माँ बाप जो जन्म देते है पालपोस कर बड़े करते है उम्मीदों और आशाओं से बंधे होते है, बच्चों के उज्वल भविष्य के लिए उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होते देखना चाहते है, उनकी भलाई के लिए क्या कुछ नहीं करते, किसी के माता पिता के पास धन होता है तो कोई पाई पाई जोड़ कर इंतजाम करता है, कोई अपना सुख त्याग कर बच्चों की पहले सोचते है, बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे तो एक सुखी और सम्मानित जीवन जी सकेंगे, तो क्या माँ बाप का ऐसा सोचना गलत है। ऐसी सोच उन्हें दोषी करार देती है क्या?

तो क्या वो गलत करते है? बच्चे का सफलता हासिल नहीं करना क्या जीवन के अंत का मूल्यवान कारण हो सकता है? किस नजरिये से देखा जाये की ये फैसला सही लगे। जिस परिवार ने सदा बच्चे को हंसाया, ढेरों खुशियां दी उस परिवार को आंसुओं में डुबो कर अपनी आँखे मूंद लेना क्या वाकई में किसी भी एंगल से सही हो सकता है? नहीं मेरे बच्चे ऐसा नहीं होता है। अगर हम कुछ बनना चाहते है तो हमें आग में तपना सीखना होगा, वक़्त के थपेड़ों को झेलना होगा, कष्ट सहने और कुर्बानिया करने को हमेशा तैयार होना होगा। नहीं तो सफलता हमसे कभी दोस्ती नहीं करेगी। और हाँ एक सत्य यह भी है की हमें जो चाहिए उसे पाने के लिए जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है तब जाकर सफलता मिलती है, मगर कितनी बार नहीं भी मिल पाती है तो हमें सूझ बूझ से सही फैसले लेने चाहिए जैसे कि हम किस क्षेत्र में सक्षम है यह हमें अच्छी तरह मालूम होना चाहिए ताकि हम सही दिशा में आगे कदम बढ़ाएं और सफलता हासिल कर सके। जिसमे हमारी रूचि ही ना हो या जिस कार्य को करने के लिए हम बने ही ना हो उसको करने निकल पड़ें तो मुँह कि खानी पड़ती है। जैसे अगर हम सचिन को क्रिकेट छोड़ कर बैडमिंटन खेलने को कहें और सानिया मिर्जा को

बैडमिंटन छोड़ कर क्रिकेट खेलने को कहते तो क्या वो आज जिस जगह खड़े हैं क्या वहाँ तक पहुंच पाते, कभी नहीं ना।

जीवन नष्ट करने का विचार ही उस विधाता का अपमान करना होता है जिन्होंने हमें यह जीवन दिया है। अरे, पढ़ाई के आगे भी जीवन है। डिग्री का साथ नहीं मिला तो क्या हुआ अपनों का संग ही काफी है। वैसे भी एक रास्ता बंद होता है तो कई खुल जाते हैं बस जरुरत होती है उसे ढूंढ निकालने की। सही दिशा में आगे बढ़ने कि और अगर ऐसा नहीं भी होता है तो अपनी परेशानियां अपनों से साझा करनी चाहिए। ना कि उन परेशानियों के जाल में उलझकर दम तोड़ दें।

आज अनुराधा ने एक अच्छे मार्गदर्शक बनने की पुरजोर कोशिश की। और लग भी रहा था की उसकी बातों का असर दिव्यांशी पर हो रहा था। वह कुछ सामान्य होने की कोशिश कर रही थी। दिव्यांशी को भी लगा की माँ बिलकुल ठीक बोल रही है, उसे कुछ हिम्मत आई। कुछ संयत हुई तब दिव्यांशी ने एक और बात कही कि “मम्मा आपको मालुम है आज और क्या हुआ। आज क्लास में रोते रोते जब मेरे सर में दर्द हो रहा था तब मेरी क्लास की एक लड़की मुझे एक दम से जिद्द करने लगी की तुम मेरे साथ चलो मैं एक अच्छे डॉक्टर को जानती हूँ वो इतनी अच्छी दवाई देते है की दर्द छू मंतर हो जाता है। उसने बहुत बोला मगर मैं तो नहीं गई।”

“अच्छा किया लाडो, कभी भी किसी से भी कोई भी दवाई नहीं लेना क्या पता क्या दे दे।”

“सही में मम्मी एक लड़की को उसने पता नहीं कौन सी दवाई दी थी अब वो लड़की उससे दवाई ही मांगती रहती है। यह "दवाई" तो जैसे लगता है की एक तरह का कोड वर्ड है। कितनी चंचल थी वो, मगर पता नहीं आजकल उसे क्या हो गया है क्या तो सुस्त ही रहेगी या फिर चिल्लाती ही रहती है। मां मुझे लगता है न की कोटा में बच्चों के लिए सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था है सरकार की तरफ से भी और कोचिंग वालों की तरफ से भी। बच्चों की परेशानी को तुरंत दूर किया जाता है। उनके द्वारा की गई शिकायत को पहले सुना जाता है। उन्हें कभी भी किसी से भी डरने की कोई जरुरत नहीं है। जगह जगह पुलिस तैनात रहती है तो डर काहे का। लेकिन यहां तो खतरा खुद के दिल और दिमाग से है, उसका इलाज पुलिस या कोचिंग वाले थोड़े ही करेंगे।”

“हाँ बेटा बात तो तुम्हारी बिलकुल सही है। और ये खुद से खुद की जो लड़ाई है वो खुद को ही सलटनी पड़ती है।”

“एक्साक्ट्ली मां।”

“तू तो मेरा बच्चा इन सब से दूर ही रहना। कुछ भी हो जाये मतलब कुछ भी, ध्यान रहे बेटा। नहीं तो सुना ही होगा की नजर हटी नहीं की दुर्घटना घटी नहीं।” दिव्यांशी ने माँ को तो टोपी पहना दी, क्योंकि उसकी खुद की लड़ाई अभी खुद से चल रही है उसके बारे में उसने माँ से छुपा लिया। उस लड़की से दवाई लेने कि एक कोशिश तो उसने भी की ही ताकि उसको थोड़ा सुकून मिल जाए और उसका मन कुछ शांत हो सके। उसकी टांग उस ओर बढ़ रही है और उसको रोकने में वो कब तक सक्षम हो पाती है देखें।

जितने की चाह किसे नहीं होती
हारने का गम किसे नहीं सताता
जीवन के थपेड़ों से कौन बचा है।
कौन है जो इन शोलों पे न चला है
चाहत और हकीकत के बीच खाई थी गहरी
किसी के साहस का पुल टुटा है तो किसी को ले उड़ा है

अध्याय : ५
सूझ-बूझ

*“जब समझ ने त्यागी नींद, तब हौसलों को भी जगाना है
अब तो आगे बढ़ना है और कुछ करके ही आना है”*

दिव्यांशी ने नए सिरे से अपनी पढ़ाई शुरू की, पूरे जोश और हौसलों के साथ। उसने प्रण लिया की वह अब किसी भी नाकारात्मक सोच को अपने अंदर प्रवेश नहीं करने देगी। और उस दवाई की तरफ तो देखेगी भी नहीं। उसका दृढ़ निश्चय कब तक दृढ रहता है यह तो वो खुद भी नहीं जानती। दिव्यांशी सामान्य होने के प्रयास कर रही थी परन्तु अनुराधा अभी भी विचलित थी। उसने दिव्यांशी को तो समझा दिया मगर पहले रंजना फिर संगीता के द्वारा कही गई बात और आज का ये किस्सा अनुराधा के दिलों दिमाक को झकझोड़ने लगा। ये सब क्या है, क्यों हो रहा है और इन सबसे कैसे बचा जायेगा? संगीता भी बता रही थी अब ये दिव्यांशी, इन बच्चियों के साथ जो कुछ भी हुआ वो सब अनुराधा को अभी भी दुखी कर रहा था।

ये सब तो हमें पता चला, ऐसे ऐसे भी हजारों केस होते है जो दफ़न कर दिए जाते हैं। कहीं पैसों के बोझ तले तो कहीं मर्यादाओं के, और उस सतह के नीचे भी उनकी सिसकियां गूंजती रहती है कराहती रहती है मगर कहीं भी सुनने वाला कोई नहीं है। आजकल कैसी पढ़ाई हो गई है की बच्चों को ऐसे ऐसे कदम उठाने पर मजबूर कर रही है? किसका दोष हो सकता है, पढ़ाई का या बच्चों का की वो अपना सफल प्रयास नहीं कर रहे है या माँ बाप का की वो क्यों अपने बच्चों पर इतना दबाव डाल रहे है या इस सिस्टम का जो हर किसी को झकझोड़ रहा है। है कोई जवाब, आज के ऐसे हालात का?

कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता क्योंकि अभी भी किसी को एहसास ही नहीं है की कोई परेशानी है, कोई दीमक है जो अपना घर बनाना शुरू कर चुकी है। कैसे इसकी रोकथाम होगी? कैसे पढ़ाई को सिर्फ पढ़ाई की ही जगह रखा जाये, न की किसी के व्यापार का जरिया बनने दिया जाये। क्या माँ बाप कि जिम्मेदारी नहीं बनती है कि उनके बच्चों को क्या चाहिए उसपर उन्हें ध्यान देना चाहिए? बच्चों कि दिलचस्पी और उनकी काबिलियत को ध्यान में रखते हुए उन्हें आगे का मार्ग प्रशस्त नहीं कराना चाहिए? उनका साथ और उनके सहारे की डोर उनके जिगर के टुकड़े को अपने मार्ग पर बांधे रखेगी, ये तो माँ बाप को आभास होना ही चाहिए। आखिर बच्चों के साथ ऐसा क्या होता होगा कि वो इस तरह के फैसले लेने लगे, सोचनीय विषय है कि उनकी कैसी अवस्था हो जाती होगी कि वो बिलकुल अकेले उस परेशानी से जूझते ही रहते है। अपने घर वालों से शायद वो इतने खुले नहीं होंगे तभी अपनी परेशानियां उनसे साझा नहीं कर पाते होंगे तभी न ऐसी कठिन परिस्थिति में होने के बावजूद वो अपनों से कुछ नहीं कह पाते।

आज मोबाइल के जमाने में जब बात करना इतना सरल हो चूका है कि हम जब चाहे जिससे चाहे जितनी देर तक चाहे बात कर सकते हैं। दूर बैठे इंसान को देख सकते है। आज विज्ञान कि उपलब्धि ने दूरी को दूर रहने ही कहाँ दिया है, चाँद तो अब दूर रहा नहीं इतने सालों से

बना गाना "चंदा मामा दूर के" को हम सब भारतीयों के लिए हमारे सफल और सक्षम वैज्ञानिको ने बदल दिया अब "चंदा मामा टूर के हो गया" तो भला कोटा कैसे दूर हो सकता है। तो फिर क्या वजह हो सकती है कि घरवालों में और बच्चों में इतनी दूरी आ गई कि दोनों एक दूजे के हाल चाल सही मायने में नहीं जान सकते?

उधेड़बुन में उलझी अनुराधा आलोक से बात करने को छटपटाने लगी। आलोक से क्या कहेगी? वह तो “दूर” बैठा है वृथा ही उसे परेशान करुँगी। यही सोच कर उसने आलोक को कुछ नहीं बताया, और शायद यही उसकी सबसे बड़ी भूल थी। उसे लगा दिव्यांशी सब भूल चुकी है। उसकी दिव्यांशी एक समझदार और सुलझी हुई लड़की है। वो इन सब पचेरों में नहीं पड़ेगी। बस यहीं पर तो वो चूक गई। सबको सिखाने में व्यस्त अनुराधा स्वयं भी वही गलती दोहराने चली। उसने भी दूरी को कम करने की कोशिश नहीं की, दिव्यांशी है तो भी एक बच्ची। वो भी तो इम्तिहान में उतरी है और उसे ईश्वर ने लोहे की तो नहीं बनाया। तो भला वो परेशान क्यों नहीं हो सकती।

अनुराधा को बैठे बैठे यूँ ही ख्याल आया की एक दिन नीचे मेस में राधिका उससे कुछ कहना चाहती थी मगर बात बीच में ही रह गई थी। अभी तो दिव्यांशी के साथ उनकी भी बेटी क्लास गई होगी यही सोच कर वो उनसे मिलने उनके कमरे में चली गई। सोच कर तो यही गई थी की थोड़ा मन हल्का हो जायेगा मगर ऐसा हुआ नहीं। मालूम हुआ की वो अपने गांव जा चुकी है। तभी बुझे मन से अनुराधा नीचे हॉल में बैठ गई। राधिका सुलझी हुई एक शांत स्वभाव की महिला है। मिलनसार और वक़्त पर काम आने वालों में से है। उससे बात करके मन शांत हो जाता है वो बातें ही इतनी अच्छी अच्छी करती है। विचारों में परिपक्वता, व्यवहार में शालीनता और स्वभाव में नम्रता उसको सबसे अलग रखती है, सबसे हटके कुछ ख़ास है वो।

यहां इस हाल में हर वक़्त जमघट लगा ही रहता है। बाईजीलोग या माताएं या किसी के पिता सब यहीं बैठे हर आने जाने वालों को देख अपना समय बिताने की कोशिश में लगे रहते हैं। अनुराधा ने भी वही किया, जब तक दिव्यांशी नहीं आ जाती उसने यहीं बैठने का फैसला लिया। कुछ उदास सी कुछ परेशान सी अनुराधा मुँह लटकाये विचारों में डूबी थी तभी उसकी नजर एक कोने में लगे सोफे की ओर गई। एक औरत अपने में कुछ कुछ बोले जा रही थी। एक बार तो लगा जैसे उसकी दिमागी हालत ठीक नहीं है, मगर उसका पहनावा देख विचार बदल गया। एक शिक्षित आत्मनिर्भर महिला दिख रही थी। सूट बूट में छोटे छोटे बालों में ऐसी लग रही थी जैसे किसी दफ्तर में काम करती होंगी। लगता है बैठे बैठे का काम है तभी शरीर थोड़ा भारी है। साँवला रंग और भूरी आंखों का मेल रूप में निखार ला रहा है। जाहिर सी बात है अगर कोई भीड़ में बैठ कर अपने में बड़बड़ाएगा तो देखने वाले लोग

उसके बारे में क्या धारणा बनाएंगे। वैसे ही अनुराधा ने भी कुछ गलत अंदाजा नहीं लगाया। अनुराधा बार बार उसी ओर देखे जा रही थी। जबकि उसने इस बात का ध्यान रखना चाहा की उस औरत को मालूम न चले की अनुराधा उसके ऊपर गौर कर रही है मगर अनुराधा विफल हो गई, आखिरकार उस महिला ने समझ लिया की उसे देखने वाले उसके बारे में क्या सोच रहे है। इस बात का ख्याल आते ही उसके चेहरे पर भी मुस्कान आ गई और अनुराधा से एक बार फिर उसकी नजर मिल गई। तब उसने आकर अनुराधा से बात करने की इच्छा व्यक्त की। अनुराधा को भी क्यों ऐतराज होता अभी तो उसे भी किसी की तलाश थी जो उसका ध्यान उसकी मनः स्थिति से हटा सके।

उस औरत ने अपना परिचय दिया, उनका नाम रितिका था वो भी उसी गाड़ी की यात्री थी जिसकी अनुराधा थी। वैसे भी कोटा के हॉस्टल में या ट्यूशन में अगर आपकी मुलाक़ात किसी महिला से होती है तो वो भी तो आपकी ही तरह उसी गाड़ी की मुसाफिर होगी जिसकी आप है। भला आपने कभी सुना है की कोलकाता जाने वाली ट्रेन में आपको मुंबई जाने वाले मुसाफिर मिले हो। अनुराधा से रहा नहीं गया आखिर में उसने पूछ ही लिया की "आप वहाँ बैठी क्या कर रही थी?"

तब रितिका ने बताया की "आज किसी बात का फैसला होने वाला है उसी के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रही हूँ की सब सही से निपट जाए।"

तब अनुराधा अपनी हँसी रोक नहीं पाई, "क्या हुआ आपका काम हुआ या और प्रार्थना लगेगी।"

"अभी जवाब नहीं आया है। देखते है क्या होता है, अभी तो कुछ भी कहना मुश्किल है।"

"वैसे बात क्या है?" अनुराधा भी कम नहीं है कितनी बार आलोक ने समझाया है की तुम्हे दूसरों के मामले से क्या लेना है। मगर अनुराधा है की सब से पंचात है उसको। अब उसे जानना है की बात क्या है। अरे भाई उसका मामला, वो बताना चाहे नहीं चाहे मगर अनुराधा को तो पूछना है। अब तो पूछना क्या जब तक जवाब नहीं ले लेगी तब तक तो उसका खाना ही हजम नहीं होगा। रितिका ने बताया की उसकी बड़ी बेटी इस बार परीक्षा में नाकामयाब रही। दो साल से घर से दूर यहां रहकर पढ़ाई करने पर भी जब उसे सफलता नहीं मिली तो उसके पति अब उसकी छोटी बेटी को कोटा भेजने को तैयार नहीं हो रहे।

"क्यों?" अनुराधा का क्यों इतना बड़ा था की उसकी चीख वहाँ बैठे हर किसी का ध्यान अपनी ओर खींच ली। अनुराधा को एहसास हुआ की उसने गलती कर दी उसे इतनी जोर से नहीं बोलना चाहिए था, उसे इतना उत्तेजित होने की आवश्यकता नहीं थी। क्या पता

उसके ऐसे व्यवहार से रितिका असहज हो जाए। उसे बुरा भी तो लग सकता है। उसने तुरंत क्षमा मांगी।

रितिका ने उसे सामान्य करने की कोशिश की। “अरे कोई न, सॉरी की कोई बात नहीं है। आपका रिएक्शन बिलकुल सही है। अब आप ही बताइये अगर बड़ी बेटी सफल नहीं हो पाई तो यह क्या जरुरी है की छोटी भी नहीं हो पायेगी। नहीं न? मगर ये है की समझने को तैयार ही नहीं है। मेरी बड़ी बेटी भी एक बार और कोशिश करके देखना चाहती है, और छोटी तो आने को उतावली हुए जा रही है मगर ये तो जिद्द ही पकड़ कर बैठे हैं। समझ में नहीं आ रहा की इनको कैसे समझाऊं? मैं भी काम पर जाती हूँ और मुझे भी बार बार छुट्टी नहीं मिलती है। अब इस बार छुट्टी ले ली अब आगे ६ महीने तक मुझे छुट्टी नहीं मिलेगी। मगर ये हैं की कुछ समझना ही नहीं चाहते हैं। अभी दोनों का इंतजाम कर दूँ तो निश्चिंत हो जाउंगी। मगर लगता नहीं है की संभव हो पायेगा। अगर बड़ी को एक मौका और नहीं देंगे तो गलत होगा और अगर छोटी को रोक लेंगे तो उससे भी बड़ी गलती हो जाएगी। करूँ तो क्या करू समझ में नहीं आ रहा? ये तो अनजान बने फिरते हैं, जैसे इनको पता ही नहीं है की आज के दिन कोटा ही एक ऐसा शहर है जो नीट और आई आई टी के लिए अच्छी कोचिंग की सुविधा दे सकता है। आज ये बात बच्चा बच्चा जनता है तो क्या इनको नहीं पता होगा मगर नहीं, इनको तो जैसे कोई लेना देना ही नहीं है।”

रितिका को भावना में बहते देख अनुराधा ने उसके ध्यान की नाव का रुख बदलते हुए आने वाले संकट का अंदेशा भांपते हुए समझदारी से काम लिया। अनुराधा ने झट से रितिका को राह सुझाई। “पहले बताइये की आपके घर पर कौन कौन है?”

रितिका असमंजस में पड़ गई की ऐसी क्या बात हो गई की अनुराधा इस तरह से पूछ रही है। अब पूछा है तो बताना ही होगा। “भाईसाहब, भाभी, मैं और मेरे पति और हमारे दो दो बच्चे बस।”

“क्या आपके पति अपने भाईसाहब की बात मानते है?”

“हाँ ! मगर आप ऐसा क्यों पूछ रहीं हैं?” रितिका को कुछ समझ में नहीं आ रहा था की अनुराधा क्या करने जा रही है।

अनुराधा ने कहा कि “देखिये कुछ फैसले हम खुद लेते है और कुछ फैसले हम अपनों के कहने पर लेते है। सही कह रही हूँ न मैं?” रितिका ने हाँ में सर हिलाया। “आपकी बेटियों के ये फैसले आपके पति स्वयं लेने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं उनकी दुविधा जायज है। अरे बेटी के पिता का ह्रदय कमजोर होता है। मेरे हस्बैंड को ही ले लीजिए बेटी को अकेले नहीं छोड़ सकते है। न जाने कब उसे किसी चीज़ की जरुरत पर जाए इसके लिए मुझे उसके

पास रहना पड़ रहा है। पिता को एक सबसे बड़ा डर हमेशा यही रहता है की एक दिन उनकी बेटी उन्हें छोड़ कर ससुराल चली जायेगी। और आजकल तो ससुराल के बराबर ही हो रहा है की बेटियां पढ़ने के लिए बाहर चली जाती है। तो हर किसी का ह्रदय इतना मजबूत नहीं होता की वो इस तरह के फैसलों में खुद को दृढ बनाये रख पाए। ऐसे में वो एक छोटा सा मौका मिलते ही वापस अपनी बेटियों को अपने पास बुला लेना चाहते है और साथ ही यह भी दर्शाना चाहते है की मैंने तो कभी नहीं रोका देखो एक मौका तो दिया था पर अब नहीं दे सकता। सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे, है न। अगर मैं गलत नहीं हूँ तो आगे कहना चाहूंगी।"

रितिका को अनुराधा की बातों में रूचि बढ़ने लगी, "हाँ हाँ जरूर कहिये। आपकी बातें जितनी सत्य है उतनी ही कानो को भा रही है।"

तब अनुराधा ने आगे कहा कि "आप एक काम कीजिए पिता का कमजोर मन कभी तैयार नहीं होगा मगर हाँ अगर कोई उनका ख़ास उन्हें आइना दिखायेगा तो वो अवश्य मान जायेंगे। ऐसा मुझे लगता है। देखिये जब कोई किसी परिस्थिति का भुगतभोगी होता है तो उसे उस परिस्थिति का हल नहीं दिखाई देता मगर दूर खड़ा देखने वाला जो की उस परिस्थिति का साक्षी होता है उसे हर बात सही सही समझ में आती है। तो आप मेरी बात मानिये अपने भाईसाहब से कहिये की वो आपके पति से बात करे मुझे यकीन है की वो उनकी बात कभी नहीं टाल पाएंगे।"

"अरे वाह आपने मेरी समस्या का समाधान कितनी सरलता से कर दिया। आप इतने दिन कहाँ थी? मुझसे पहले मिल लेती तो मेरी समस्या पहले ही हल हो जाती।"

"आप ऐसे अभी मत कहिये पहले आपका काम हो जाने दीजिए फिर आपसे सिर्फ तारीफ नहीं बटोरूँगी बल्कि साथ में चाय समोसे भी खाएंगे।"

तभी संगीता वहाँ से गुजर रही थी तो अनुराधा को वहाँ देख कर रुक गई, इशारों में पूछा की कौन है और क्या बात है? जब अनुराधा ने बताना चाहा तो रितिका ने उसे रोक दिया और कहा की "मैं चलती हूँ।"

तो संगीता को थोड़ा बुरा लगा मगर उसने भी बात काटने के ढंग में अनुराधा से कहा की "अरे बहनजी आप क्या बताएंगी मैं बताती हूँ, एक मजेदार खबर। मैं अभी अभी देख कर ही आ रही हूँ, यहां पास ही में एक चाय वाला है। बेचने को तो लोगों को चाय ही बेचता है मगर उसके दुकान की रौनक और उमड़ती भीड़ तो कुछ और ही बयान करती है।

संगीता कि अटपटी बातें सुन कर अनुराधा ने पूछा कि "क्या मतलब है आपका?"

“लो अब मतलब भी मैं ही समझाऊं।”

तब अनुराधा ने कहा की “हाँ तो वकील तो आप है तो जो भी बोलिये सबूत के साथ बोलिये।” अनुराधा की मुस्कान साफ़ बता रही थी की वो संगीता के मजे ले रही है।

“सही बात है जब पाठ आप पढ़ाएंगी तो मतलब भी तो आपको ही समझाना होगा न।” (सहेलियों में इस तरह से व्यंग्य में बातें होती ही रहती है। ये लोग इसी अजीब गरीब तरीके से ही हंस बोल लेती है।) अनुराधा की मस्ती देख संगीता भी मूड में आ गई अब वकील की ही तरह अपनी बात पेश करने लगी।

“हाँ तो मैं ये कहना चाह रही थी की जरूर दाल में कुछ काला है, या हो सकता है की पूरी की पूरी दाल ही काली हो।” संगीता की मन घड़ंत कहानियों से अनुराधा ऐसे भी उससे परेशान रहती है और आज तो उसका मन मिजाज वैसे भी ठीक नहीं है तो उसने संगीता को फटकार लगा दी।

तब संगीता ने अनुराधा जी को शांत करते हुए कहा कि “अरे बाबा आप तो बात समझती बाद में है और बिफर पहले पड़ती है। मेरे कहने का मतलब यह है की कैसे वहाँ चाय वाले ने बच्चों की जरुरत का कुछ ख़ास ही ध्यान रखा हुआ है, हाँ अवश्य गुप्त रूप से कोई न कोई खिचड़ी जरूर पक रही है। चाय तो हम आप जैसो के लिए है।”

अब संगीता को रोकते हुए अनुराधा ने कहा कि “हाँ सही बोल रही हो तुम अब ये भी बोल दो की उस खिचड़ी की खुशबु तुम्हे यहां तक आ गई। तुम भी ना संगीता बाज नहीं आओगी, है ना। ऐसी बिना सिर पैर की बातों पर मैं तो ध्यान नहीं देती।”

तब संगीता ने कहा कि “आप कहाँ ध्यान देती हैं। आप तो अलग ही दुनिया में रहती है।”

संगीता का टोन मारना अनुराधा को अच्छा नहीं लगा। उसने बस इतना ही कहा की “अगर ऐसा कुछ है भी तो वह तो गलत है। अगर किसी ने पुलिस में खबर कर दी तो। इस तरह तो बच्चों का भी भविष्य खतरे में है और उस चाय वाले का भी।”

“हाँ सो तो है मगर आपको क्या लगता है इनमें से किसी ने भी कच्ची गोलियां खेली है। सब अपना जुगाड़ लगा कर रखते हैं। वैसे भी इण्डिया में जुगाड़ुओं की कमीं हैं क्या।”

अनुराधा को संगीता की बातों पर हंसी भी आने लगी। उसे लगा की संगीता बेकार ही बात को हवा दे रही है। फिर किसी भी फिजूल की बातों में सर खपाने को उसके पास फिलहाल तो ताकत नहीं है और बाद का बाद में सोचेंगे। यही सोच कर कुछ वक़्त के लिए तो उसने बात को टाल दी। खैर छोड़ो वैसे हम कर भी क्या सकते हैं। आज अनुराधा बहुत परेशान है और रितिका से बात करके उसको थोड़ा हल्का लगा। कुछ पल के लिए ही सही मगर

अनुराधा अपनी परेशानियां भूल गई। अब दिव्यांशी के सामने उसने ऐसी कोई भी बात नहीं करनी चाही जिससे की उसकी व्याकुलता बढे। मगर एक डर अनुराधा को हमेशा परेशान करने लगा।

उस बात को कुछ महीने बीत गए। दिव्यांशी भी अपनी पढ़ाई में मन लगाने लगी। सही में उसे तो फालतू की बातों के लिए समय ही नहीं मिलता। अनुराधा भी खुश थी की अब सब सुचारु रूप से चल रहा है। अनुराधा की कुछ सहेलियां बन चुकी है। आते जाते दो चार से बात होती रहती थी बस यूँ ही पहचान बनी और यह पहचान अब दोस्ती तक पहुंच गई।

“कल भोलेनाथ का मंदिर देखने चलना है, तैयार रहना।” जब अचानक से शिल्पा ने अनुराधा से कहा तो अनुराधा एकदम से चौंक गई।

“मंदिर कितनी दूर है?”

“यही कोई १५ किलोमीटर, हमने गाड़ी की है, बस तुम तैयार हो जाना।”

“न बाबा तुम्ही जाओ। मैं नहीं आ रही।”

जब आज फिर अनुराधा ने साथ चलने से इंकार किया तो शिवानी थोड़ी नाराज होती हुई उससे कहने लगी की “क्यों अब क्या हुआ? उस दिन भी जब हम सभी फिल्म देखने गए थे तब भी तुमने मना कर दिया और अब आज भी। एक ही कमरे में तेरा जी नहीं घुटता है क्या? या फिर तू हमें बेवकूफ बना रही है पढ़ाई दिव्यांशी नहीं तू कर रही है।”

इस तरह की बात से दोनों ही हस पड़ी। अनुराधा ने उसकी नाराजगी दूर करते हुए उसे समझाया की “नहीं रे ऐसी बात नहीं है दरअसल मैं अभी कहीं नहीं जा सकती। मेरा जी नहीं चाहता एक बार दिव्यांशी का सिलेक्शन हो जाए फिर इन सबके लिए तो उम्र पड़ी है।”

अनुराधा के त्याग और बलिदान की बातें सुन कर शिवानी ने उससे हाथ जोड़ते हुए कहा की “नमस्कार माते, धन्य है तेरी जैसी महान माताएं। चल तू बन महानता की मूरत हम को तो आम इंसान ही रहने दे। हमसे तो इतना नहीं हो पायेगा।”

“अरे ऐसा क्यों कहती है सब अपनी-अपनी जगह सही है। फालतू के ताने मत मार और जा मजे कर बच्ची।” अपना हाथ शिल्पा के सर पर रख अनुराधा ने उससे परिहास किया।

शिल्पा को तो उसने पार कर दिया मगर खुद सोचने पर मजबूर हो गई की क्या वाकई में वो जरुरत से ज्यादा दिव्यांशी के बारे में चिंतित है। शिल्पा का महिलामंडल क्या सही कर रहा है। अपनी जिंदगी के कीमती वक़्त को सही जगह इस्तेमाल कर रहा है और एक मैं हूँ जो सब कुछ छोड़ के बस दिव्यांशी और सिर्फ दिव्यांशी ही किये जाती हूँ। इनको देखती हूँ तो आश्चर्य भी होता है की कैसे ये लोग कभी फिल्म तो कभी खरीदारी तो कभी मंदिर बस

घूमती ही रहती हैं। इनके जीवन का मकसद सिर्फ मनोरंजन ही मनोरंजन है। अब कुमकुम को ही ले लो न वो तो यहां रहकर गाड़ी चलाना भी सीख ली। इतना उसको समय भी मिल गया और उसकी बेटी डिस्टर्ब भी नहीं हुई। इनके भी तो बच्चे सफलता हासिल करते ही है। ऐसा तो नहीं होता होगा की माएं जब तक तपस्या न करेगी तब तक एक बच्चे को अच्छा उज्ज्वल भविष्य नसीब नहीं होगा। न न मैं भी कहाँ फिजूल की बातों में उलझ रही हूँ हर कोई अपने तरीके से अपना काम करता है। किसी को सीधे कान पकड़ना अच्छा लगता है तो किसी को घुमा के बस इतना ही फर्क है और ज्यादा कुछ नहीं। अपने आप को तसल्ली देने की कोशिश करती अनुराधा थोड़ा भावुक हो गई। जिन बच्चों के लिए आज माँ बाप अपना सबकुछ न्योछावर करने को निश्छल मन से हमेशा तैयार रहते है क्या वही बच्चे बड़े होकर उनके इस त्याग और बलिदान की कीमत समझेंगे? क्या उनके जीवन के वो अनमोल पल जो वो अपनी खुशियों के लिए जीने के हकदार थे मगर ख़ुशी ख़ुशी उन्होंने अपने बच्चों पर वार दिया, उस कुर्बानी का मोल लगाएंगे? जाने दो नहीं भी लगाएंगे तो क्या हुआ हम तो अपने बच्चों के लिए कर रहे है। "अपने" का मतलब ही निस्वार्थ से जुड़ा है तो फिर वापस बदले में कुछ लेने की आकांक्षाएं कैसी? कैसी उम्मीदें, कैसा बदला? यह तो प्यार की परिभाषा नहीं हुई। प्यार, ममता तो सिर्फ देने का नाम होती है। इसमें अगर लेने के भाव सम्मिलित हो जाएंगे तो ममता में मिलावट हो जाएगी। वैसे भी आज के कलयुग में सभी चीजों में मिलावट हो रही है कम से कम ‘‘ममता’’ को तो पवित्र और शुद्ध रहने देते है। प्रेम ही तो एक ऐसी अदृश्य शक्ति है जो समस्त ब्रह्माण्ड के निर्माण का कारण भी है और उसके कायम रहने का भी। प्रेम को तोल-मोल के तराजू में रखना नाइंसाफी होगी।

अध्याय : ६
अठखेलियां

प्रेम की माला जो फेरे, प्रेम रस वही पाए
धन-धन तू क्या करे जब प्रेम रतन धन पाए

एक दिन आलोक का फ़ोन आया एक सांस में ही कहना शुरू कर दिया की “अब ज्यादा मुश्किलें हो रही है सो तुम एक बार घर आ जाओ। देखो न कोई सामान नहीं मिल रहा है। नहालो तो कपड़े नहीं मिलते, दफ्तर जाओ तो टिफ़िन नहीं मिलता और तो और घर आओ तो चैन नहीं मिलता।”

अनुराधा की आवाज तेज हो गई, उसका तो यही हाल है जहां कुछ हुआ नहीं की उसका वॉल्यूम बढ़ जाता है। आलोक से कहती है की “ऐसे करने से कैसे चलेगा। बच्चे मत बनो आलोक। बच्चों के लिए करना पड़ता है।”

दोनों में अच्छी खासी बहस शुरू हो गई। अनुराधा समझाना चाहे तो आलोक नहीं समझे और आलोक कुछ कहे तो अनुराधा जिद्द पकड़ ले। “ठीक है रहो तुम वहीं” बस इतना कहा और फ़ोन कट गया। टू-टू की आवाज आने लगी। अनुराधा ने भी गुस्से से फ़ोन को गद्दे पर पटक दिया। चलो क्रोध में समझदारी नहीं छोड़ी नहीं तो व्यर्थ ही अभी १०-१५ हजार का चूना लग जाता।

थोड़ी देर में ही कमरे के दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। अभी कौन आ सकता है? दिव्यांशी आज इतनी जल्दी। कुछ अनमनी सी अनुराधा दरवाजा खोलने गई। दरवाजा खुलते ही तो अनुराधा का मुँह खुला का खुला रह गया।

“आलोक तुम! क्या बचपना है ये? तुम भी न, क्या करते हो? सब मुझे परेशान करने की कोशिश थी।”

पीछे से आवाज आई, “बिलकुल सही पकड़ा माँ।”

“अरे देविशि तू भी” अनुराधा का चेहरा खिल गया।

तभी एक और आवाज आती है “बेटी मैं भी हूँ।”

“बाबूजी आपको भी इन्होने अपनी टीम में मिला लिया न।”

अब देखो कैसे सभी के चेहरे खिल गए। सबको देख कर अनुराधा बहुत खुश हुई। थोड़ी देर पहले तो फ़ोन तोड़ा जा रहा था अब कैसे ठहाके लग रहे है। वाह रे इंसान कितने रंगो से भरा है तेरा जीवन। इसके आगे तो इंद्रधनुष के रंग भी फीके पड़ जाए। आलोक ने उत्सुकता से सराबोर होते हुए सबको चलने को कहा की “चलो अब जल्दी, दिव्यांशी की क्लास के बाहर ही खड़े रहेंगे। दिव्यांशी जब क्लास से निकलेगी तब उसके निकलते ही उसके भाव मुझे इस कैमरे में कैद करने है।”

सबकी उत्सुकता देख एक खुशनुमा माहौल बन गया। सब उत्सुकता से सराबोर दिव्यांशी की राह देख रहे थे। देविशि कैमरे का डिपार्टमेंट संभाल रही थी और बाबूजी आड़ में खड़े

किसी तरह अपनी हंसी पर लगाम लगा रहे थे। आलोक तो ठीक गेट के सामने ही खड़ा हो गया जैसे ही दिव्यांशी आई आलोक मुस्कुराने लगा और उसे देख दिव्यांशी चिल्लाती हुई उछल पड़ी।

“डैडी आप, शायद आज मैं कुछ और भी मांग लेती तो मुझे मिल जाता। मैं न जाने सुबह से कितनी बार सोच ली की कब आपसे मिलना होगा? अभी तो दूर दूर तक कोई छुट्टी नहीं है।”

“देख ले गुड़िया इसे ही टेलीपैथी कहते है। तुम याद की और हम हाज़िर।”

“हम मतलब डैडी?”

अब सब सिपाही आड़ से निकल निकल कर बाहर आने लगे और दिव्यांशी का चेहरा ख़ुशी से लाल होने लगा।

“दादू आप आये सो स्वीट।” देविशि को गले लगाकर दिव्यांशी अद्भुत आनंद का अनुभव कर रही थी।

थोड़ी देर मिलना मिलाना हुआ, खूब हंसी ठिठोले हुए। अब आती है पढ़ाई की बारी। सब सही जा रहा है कहते हुए दिव्यांशी थोड़ी उदास हो गई। आलोक हवा का रुख अच्छी तरह पहचानता है। आलोक अपनी बेटियों के हाव-भाव बखूबी जानता है। न ही कभी भी कोई दूसरा उसे उसकी बेटियों के बारे में बताता है और न ही कोई उससे छुपा सकता है। आलोक ने अपना मन हल्का कर सारी परेशानियां बताने को दिव्यांशी से कह ही रहा था की दिव्यांशी की आँखे आद्र होने लगी। काफी देर से वह कृत्रिम भाव दर्शाने की कोशिश कर रही थी मगर आलोक से छुपा न सकी। उसने आलोक को सारी बाते विस्तार से बताई। उस दीदी की बातें, पढ़ाई का ओवरलोड, समय का अभाव और सबसे जरुरी और कष्टदायक मन की बेचैनी। कुछ न कर पाने का डर और सबको निराश करने की शर्मिंदगी के दलदल में थोड़ा थोड़ा वो रोज़ धंस रही है। साथ में यह भी बताया की “यहां लड़कियाँ बहुत फैशन में रहती है और मुझे चिढ़ाती रहती है, ‘अरे बुद्धु इतना पढ़ कर क्या होगा। चल थोड़ा चिल मार।’ ऊपर से पता नहीं क्या क्या खाती पीती रहती है मुझे तो उबकाई आने लगती है। और कुछ नहीं तो मुझे बोलेगी थोड़े पैसे हैं क्या। शुरू शुरू में तो मैंने दे दिए मगर इनका तो रोज का काम हो गया। अब मैं नहीं देती हूँ तो मुझसे नाराज हो जाती है कहती है पहले घर से पैसे ला तब दोस्ती करेंगे। उनका ग्रुप अच्छा नहीं है। उनकी संगति भी सही नहीं है। लड़को के साथ ज्यादा खुश रहती है। अभद्र कपड़े पहनती है और लड़को के साथ बाइक पे कहाँ चली जाती है पता ही नहीं और मुझे बोलेगी अगर मम्मा का फ़ोन आये तो कह देना मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं क्यों झूठ बोलू।”

साथ में दिव्यांशी ने यह भी कहा की “मैं माँ को बताने की बहुत कोशिश करती हूँ मगर नहीं बता पाती।”

ये सब सुन कर अनुराधा उदास हो गई। उसे अपनी विफलता, अपनी कमजोरी, अपनी नाकामयाबी नजर आने लगी। उसके यहां होने के बावजूद दिव्यांशी अकेलापन महसूस कर रही थी यह बात उसको बिच्छू के डंक सी डंसने लगी। अब आलोक क्या करे दिव्यांशी को देखे या अनुराधा को।

उसने दिव्यांशी से शुरू किया, “अच्छा चलो हमलोग कौन बनेगा करोड़पति खेलेंगे। सही जवाब देने वाले को सबसे अनमोल इनाम मिलेगा जो अभी नहीं बताया जायेगा।”

खेल की बात सुन कर अनुराधा को ताज्जुब हुआ, उसने आलोक से कहा “ये क्या बात हुई आलोक इतनी गंभीर परिस्थिति में भी तुमको खेल सूझ रहा है। ये क्या बोल रहे हो आलोक? क्या तुम स्वयं को सुन पा रहे हो?”

“हाँ अनुराधा दो मिनट दो मुझे तुम्हे अभी सब समझ आ जायेगा।”

“क्या आईडिया है डैडी चलिए ना खेल शुरू करते है।”

आलोक और दिव्यांशी ने अनुराधा को भी बैठा लिया और खेल शुरू किया, अब आपके सामने आता है पहला सवाल आलोक ने माहौल को हल्का करते हुए खेल शुरू किया “दिव्यांशी तुम क्या बनना चाहती हो और क्यों?”

“इसका जवाब आप जानते है।”

दिव्यांशी के ऐसा कहते ही आलोक ने बात काटी। “मैं कुछ नहीं जानता अभी सब तुम मुझे बताओगी।”

“ओके। मुझे डॉक्टर बनना है क्यों की मुझे लोगो का इलाज मुफ्त में करना है। मैंने ऐसे बहुत से गरीब देखें है जिनके पास पैसे न होने की वजह से उनके अपने उनसे दूर हो गए और पीछे वो अकेले दुःख के साये में तड़प कर रह गए।”

“वाह क्या जवाब दिया है। सुनने में कितना भारी भरकम है,अगर अभी दानवीर का कोई इनाम होता तो वो तुम ही जीतती।”

“दिव्यांशी थोड़ी शर्मा गई।”

“कोई न अब दूसरा सवाल कितनो के नाम हैं जिन्होंने बस चुटकी बजाई और सफलता उनके क़दमों में आ गिरी, ऐसा जिनके बारे में तुमने सुना हो?”

“कोई भी नहीं।”

“अच्छा तुम्हे ये पता है।”

“हाँ डैडी।”

“बच्चे मुझे न बताओ, अभी तो तुम खुद को सुनो। अब बारी है तीसरे सवाल की क्या तुम्हे वाकई में डॉक्टर बनना है? सोच कर जवाब देना। कोई दबाओ नहीं है, कोई जबरदस्ती नहीं है। जो भी जवाब दो सोच समझ कर देना। जो भी फैसला लो उसमें सिर्फ तुम्हारी ही मर्जी होगी।”

“हाँ डैडी, मुझे डॉक्टर बनना है मगर।”

“अरे जब बनना है तो "मगर" कहाँ से आ गया।”

ये “मगर” तो उस बेशरम पड़ोसी की तरह लगता है जो जब चाहे मुँह उठाये चले आता है। माहौल थोड़ा सामान्य होने लगा। अब दिव्यांशी भी सहज होने लगी।

“नहीं डैडी मगर से मेरा मतलब बहुत कठिन से है। और शायद इसके लिए मुझमें काबिलियत की कमी है। और यही अभाव मुझे खलता है।”

“बस इत्ती सी बात, काबिलियत क्या लोग साथ लेकर ही जन्मते है? अच्छा एक बात तो बताओ जब तुम स्कूल जाना शुरू की थी तो तुम्हे ए बी सी सब आते थे क्या। मुझे लगता है पहले दिन से ही तुमने कविता सुनानी शुरू कर दी थी, हैं न।”

“उम्म्म डैडी, ऐसा थोड़े ही था।”

“वही तो मेरा बच्चा तुमको समझना है की कोई भी कुछ सिख कर नहीं आता। मगर हाँ, देखो मेरा भी "मगर" है। मगर समझदार तो वो हुआ न जो सीखने की जी तोड़ कोशिश करता है। कोशिश करना हमारा कर्तव्य है और परिणाम देना उस ऊपरवाले का। तो हमें अपना काम करना है वो भी पूरी शिद्दत के साथ। ‘कर्म कर, फल की इच्छा मत कर’।”

दिव्यांशी को अपने पिता की बात कुछ-कुछ समझ में आने लगी। “तुम सोचो अगर तुम्हारी तरह थॉमस अल्वा एडिसन ने हार मान ली होती तो क्या हमें बल्ब की सुविधा मिलती, नहीं न। कई बार विफल होने के बावजूद उन्होंने कोशिश नहीं छोड़ी। ये तो सिर्फ एक की बात है ऐसे कई महानुभाव हैं जैसे ए पी जे अब्दुल कलाम, डॉ येल्ला प्रगदा सुब्बाराव, विक्रम सारा भाई जिन्होंने इस दुनिया में जन्म लिया जिन्होंने अपनी लगन, मेहनत, तपस्या, त्याग, बलिदान, अपनी इच्छा शक्ति और सबसे अहम् अपना उस चीज के प्रति प्रेम के कारण उसे हासिल किया और अपना नाम इतिहास के पन्नों में अमर करवा लिया। तुमने सपने देखे अच्छी बात है पर उन सपनों को पाने के लिए जो चाहिए उससे तुम बचने की कोशिश कर रही हो। ऐसा नहीं होता है, उड़ना है तो फिर काहे की धूप और कैसी छाओं। जब तक तुम

उस सपने से प्यार नहीं करोगी तब तक उसे पाने की प्रबल इच्छा तुम्हारे अंदर जन्म नहीं लेगी और तब तक तुम्हें ये परेशानियां परेशानियां ही लगेगी। अच्छा बताओ तो कभी बाजार में पिज़्ज़ा या गुपचुप खाते वक़्त मिर्ची लगती है, नहीं न। लेकिन घर पर उस साधारण सी दाल में भी रोज कितनी मिर्ची लग जाती है, है न। ऐसा क्यों होता है कभी सोचा है। क्योंकि पिज़्ज़ा, गुपचुप सब तुम्हारा प्यार है तुम्हे बेइंतहां पसंद है और उसको खाने के लिए ये मिर्ची क्या चीज है। उसी तरह अपने सपनो को अपना प्यार बनाओ। अपने विचारों को भावनाओं से जोड़ो। अपने शब्दों को सुनो। तब देखना सफलता कैसे तुम्हारे कदम चूमती है।

कल्पना करो की तुम्हारे विचार तथा शब्द एक रॉकेट यान है और तुम्हारी भावनाये ईंधन। अब राकेट तो बिना ईंधन के कैसे चलेगा। यही ठीक तुमको विचारों और शब्दों के साथ करना है। उन्हें ईंधन देना है। और रही उन लड़कियों की बात तो ये संसार है जो करोड़ो प्रकार की प्रजातियों से भरा है और उसमें सबसे महान प्रजाति हम इंसानों की आती है। महान मतलब हमें सोचने समझने की शक्ति ने हमें सबसे अलग बनाया है। और हम आज जिस जगह खड़े हैं वो हमने अपनी सोचने और समझने की शक्ति के बदौलत ही हासिल की है नहीं, तो आज भी हम घुमन्तु भोटिया ही रह जाते या इन जानवरों की ही तरह निरुद्देश्य जीवन ही बिताते रहते। तो तुमको क्या चाहिए ये शायद तुम्हें समझ में आ गया होगा।"

"हाँ डैडी मैं भी सोच समझ कर फैसले लूँगी।"

"शाबाश मेरा बच्चा, अपनी सूझ बूझ से काम करो अपनी हर परेशानियों को अपने मार्ग से फैंकने के लिए जरुरी कदम उठाओ। अगर बोलो तो उन लड़कियों से मैं जाकर बात कर सकता हूँ मगर मैं चाहता हूँ की तुम अपने से सब गुत्थी सुलझाओ ताकि तुम्हारे अंदर आत्मविश्वास भी जगे और हर समय तुम किसी पर निर्भर न रहो।"

"बिलकुल सही कहा आपने अब मैं किसी को भी मुझे परेशान नहीं करने दूंगी।"

"ये हुई न मेरी बहादुर और समझदार गुड़िया वाली बात।"

आज अनुराधा आलोक पर कुछ ज्यादा ही मोहित हो गई। कितनी अच्छी तरह उसने मुश्किलों के दलदल में डूबती दिव्यांशी को ऊपरी सतह पर ले आया। दिव्यांशी में एक नई ऊर्जा का प्रवाह होने लगा। आज उसके अंदर से सभी नकारात्मक सोच का विसर्जन हो गया और पूरे धूम धाम से उसने सकारात्मकता को जगह दी। हम गणपतिजी का धूम धाम से स्वागत करते है और उनके आने से हमारे घर से कैसे सभी विषमताओं का विषर्जन होता है ठीक वैसे ही।

अनुराधा को भी आलोक ने समझाया की बच्चे दूध की तरह होते है जिनको बड़े जतन से रखना पड़ता है। जैसे दूध को कम आंच पर उबालना होता है नहीं तो वो पैंदे में लग कर पूरे दूध का स्वाद ख़राब कर सकता है, ठीक वैसे ही इस उम्र के बच्चों को भी धीमे धीमे हौले हौले समझा कर प्रेम से रखना होता है। नहीं तो उसके ह्रदय के पैंदे में भी बातें जल कर उसके जीवन को कड़वा कर सकती है। दूध को समय पर फ्रिज में नहीं रखते है तो गर्मी से या तो वो खट्टा हो जायेगा या फट जायेगा, उसी तरह युवावस्था में बच्चों को पूरी सावधानी के साथ संभालना होता है।

"अनुराधा ये लड़कियों वाला क्या मामला है।"

"पता नहीं आलोक यहां का हवा पानी कुछ अजीब ही है, यहां की कुछ लड़कियों के हिसाब किताब तो सही नहीं लगते मगर बोले कौन। ऊपर से एक चाय वाले के भी कुछ किस्से सुनने में आते हैं की वो बच्चों को अलग से ऐसा कुछ देता है जो गलत है। मगर पूरी सच्चाई किसी को भी नहीं मालूम। और तुम तो जानते ही हो की बेकार के पचड़ों में पड़ने से सभी भागते हैं।"

कोटा का हाल जान कर आलोक ने अनुराधा से कहा "हाँ हाँ सही बात है तुम भी सावधान रहना। चिंगारी है तो आग तो होगी ही, बचके चलों तो ही भला है। वैसे भी आजकल सभी जगहों पर ये सब होता ही है, हो सकता है ड्रग्स का मामला हो या और किसी तरह के नशे की सुविधा हो। आज के दिन किसी से नहीं छुपा है की बच्चों पर पढ़ाई का प्रेसर बेहिसाब है और उससे बच्चे कमजोर पड़ रहे हैं तो उन्हें अगर यह लालच दिया जाए की अगर वह इसका सेवन करता है तो उसकी याद करने की क्षमता दुगुनी हो जायेगी, या इसको लेने से उसको नींद नहीं आएगी और थकान भी नहीं लगेगी या नहीं तो इस सबके इस्तेमाल से उसके सर का दर्द भी गायब हो जायेगा और उससे पढ़ने की स्पीड भी बढ़ जाएगी फिर वो सबसे आगे निकल जायेगा। बस एक थके हारे इंसान को और क्या चाहिए। एक डोज़ में इतनी मुश्किलों का इलाज है तो सोचो बच्चे क्यों नहीं लेंगे।"

"हाँ आलोक ठीक कह रहे हो। इन्ही सब दुष्कर्मों का ही तो नतीजा है की बच्चों में आत्महत्या या डिप्रेशन जैसी बीमारियाँ घर कर रही है। इन सब बातों से ही मेरे तो रोंगटे खड़े हो जाते है जरा सोचो जिन माँ बाप के बच्चों के साथ ऐसा कुछ होता होगा तब उनका क्या होता होगा?"

"क्या कर सकते हैं अनुराधा पैसों की हवस ने लोगों को अंधा बना दिया है।"

"सिर्फ पैसों की नहीं लोगों को जीतने की, सबसे आगे निकलने के जूनून ने अंधा बना दिया है।"

“अरे मेरा कहना है की “सोने” (gold) के लिए भागना तो जायज़ है मगर उसके लिए मरना कहाँ की अक्लमंदी है। ये तो वही अली बाबा और चालिस चोर वाली बात हो गई। जानते बुझते थोड़े से स्वार्थ के लिए गुफा में कदम रखना मौत को दावत देना ही हुआ न।”

“सही बोल रहे हो आलोक मगर क्या किया जा सकता है एक डर हमेशा बना रहता है की न जाने कब क्या सुनने मिल जाए।”

“अपने सावधान रहो और दिव्यांशी का पूरा ध्यान रखो बस और कोई चारा नहीं है। अगर सोचने भी जायेंगे तो फूस में से सुई ढूंढ़ने जैसा होगा, हाथ कुछ नहीं लगेगा।” अनुराधा तो मुग्ध सी आलोक की बातें सुनती रही।

अनुराधा ने कहा “आलोक एक बात कहूं?”

“अरे अभी मैं तुम्हे शॉपिंग पर नहीं ले जा सकता।”

“धत तुम भी न,” दोनों मुस्कुराने लगे। “तुमने आज कृष्ण की भाँति अर्जुन का जो मार्गदर्शन किया है न उसके लिए मेरे पास शब्द नहीं है।”

“मेरी जान शब्दों की जरुरत भी नहीं है बस हमारी गुड़िया सफलता की हर सीढ़ी पार करती जाए। और एक दिन अपनी मंजिल हासिल कर अपना जीवन सार्थक कर पाए।”

उम्मीदों के सहारे आगे बढ़ना
ख्वाइशों को हमेशा जिन्दा रखना
कभी न हारना, न ही थमने की सोचना
उस झरने के समान, अपना मार्ग स्वयं बनाना

मुश्किलों और सफलताओं का चोली दामन का साथ है
भला क्यों तुम्हे सिर्फ एक की आश है
सफलता पाना है तो मुश्किलों को भी अपनाना होगा
जाना है उस पार तो दरिया की गहराई तो नापना होगा

कर हौसलों को बुलंद तू इस तरह
डगमगा न सके कोई तुझे उस अडिग पर्वत की तरह
दूर नहीं वो दिन जब तू चमकेगा सूर्य के समान
सफलता के अम्बर पर बनकर तू महान
बाधाएँ भी लगेगी तुझे टिमटिमाते तारों की तरह
महकेगा जीवन तेरा उन फूलों की तरह

यकीं है मुझे कहेगा खुद से तू एक बार
"हौसलों", आपको असीम धन्यवाद
किया आपने ही मुझे सात समुन्दर पार
किया आपने ही मेरा हर मुश्किलों से उद्धार

इस तरह दिव्यांशी के अरमानो की मुरझाई लता एक बार फिर से हरी भरी हो गई। ज़रा सा सहारा पाकर ये लता पूरी तेजी से ऊपर की ओर उठने लगी। जिस सफलता को उसने मरीचिका समझा था वह अब उसे हकीकत लगने लगी। सोते, जागते, उठते-बैठते हर समय उसे अपनी सफलता का सूरज चमकता नजर आने लगा। इस कठिन मार्ग पर चलते बच्चों को एक सारथी की कितनी आवश्यकता होती है ये आज जाना। दिव्यांशी को तो जैसे किसी एंटी बाइटिक का डोज़ लगा हो जिससे उसकी बिमारी छू मंतर हो गई। उसे तो उपायों की मणि मिल गई। उसने हृदय में उठ रहे चिंताओं के मंथन को आत्मविश्वास के जल से धो कर मन मंदिर को आज पवित्र कर डाला। आज उसने एक प्रण लिया की कोमल शैशव में उसने जो हवाई आकांक्षाओं की उड़ान भरी थी उसी उड़ान को पूरी निर्भयता के साथ आगे लेकर जायेगी। मन में उमड़ते घुमड़ते चिंताओं के बादलों के बीच अगर किसी सारथी रूपी सूर्य का पदार्पण हो जाए तो उस निराशा की उमस को हटते देर नहीं लगती। काश इस रामबाण इलाज की ओर अगर हर माँ बाप का ध्यान चला जाए तो बच्चों के जीवन के सूर्य को ग्रहण लगने से बचाया जा सकता है।

अध्याय : ७
परोपकार

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम।

एक दिन अनुराधा हॉस्टल की लिफ्ट में फंस गई। फंस गई मतलब बगैर बिजली के लिफ्ट अचानक से जोर की आवाज के साथ झटका लगाते हुए बीच में ही कहीं अटक गई। अनुराधा की तो जान निकल गई। चीख से उसने पूरे हॉस्टल को सर पे उठा लिया। जिसमें तो वो अकेली नहीं थी एक महिला और उसके साथ थी तब तो अनुराधा का ये हाल था, अगर अकेली होती तो पता नहीं क्या करती। अनुराधा का चीखना चिल्लाना बिलकुल व्यर्थ था तब भी वो इतना घबरा रही थी की उससे रहा ही नहीं जा रहा था। साथ वाली महिला ने उसे समझाया की ऐसे करने से बेचैनी बढ़ेगी और प्यास भी लगने लगेगी। शांत हो जाइये लोग कोशिश तो कर ही रहे हैं जल्दी ही कुछ हल निकाल लेंगे। वो महिला कैसे इतना धैर्य रख रखी है यही देख कर अनुराधा अचंभित हो गई और थोड़ी शर्मिंदा भी।

दोनों में जान पहचान हुई, बातें होने लगी जिससे अनुराधा का ध्यान भटकने लगा। बातों बातों में अनुराधा ने जाना की ये महिला जिनका नाम उर्वशी है एक रोगी है, वह महिला “सीलियक” नामक रोग से ग्रसित है। आयरन की कमी का शिकार है। उर्वशी ने पिछले ५ सालों से गेंहू की रोटी नहीं खाई। यह जान कर अनुराधा को घोर आश्चर्य हुआ की अस्वस्थ होकर भी ऐसे लिफ्ट में फसने पर भी उर्वशी कितनी शांत है। उसको चीनी की भी बिमारी है। मीठा खा नहीं सकती, गेंहू की रोटी उसे खाना नहीं है। उर्वशी कैसे तृप्त होती होगी यही अनुराधा के समझ से बाहर हो रहा था। हमलोग को तो एक वक़्त रोटी नहीं मिले तो खाना खाया हुआ सा ही नहीं लगता और बिना मीठे के तो असंभव है। ये तो बेचारी कई महीनो से नहीं खा पा रही है। उर्वशी की बातें सुनकर तो अनुराधा को यही लगा की दुनिया में कितने गम है, मेरे गम कितने कम है। अनुराधा सोच में डूब गई की हम अपनी ही दुनिया में इस कदर व्यस्त है की हमें पता ही नहीं होता की बाहर की दुनिया में क्या चल रहा है। औरो से रूबरू होने से मालूम होता है की हम कितने सुखी हैं। ऐसा लगता है की लोगों को बीच बीच में और लोगों से मिलना चाहिए, उसे ज्ञात होना चाहिए की उसके आस पास की दुनिया में क्या चल रहा है, उसे दूसरों के दुःख बांटने चाहिए, ऐसा करने से शायद उसे अपने दुःख दर्द कम दुखेंगे। किसी भी चीज की तुलना अगर हम दूसरी चीज से करते है तभी हमें दोनों में अंतर नजर आता है नहीं तो किसी भी चीज की कीमत हमें आसानी से नहीं मालूम हो सकती। कोई भी बात या कोई परिस्थिति या कोई समान अच्छा या खराब है तो है बस, मगर कितना? यह तो हमें किसी दूसरे से तुलना करने पर ही न ज्ञात होगा। लेकिन तुलना का अर्थ ये नहीं होता की भाई उसकी तो अच्छी है और मेरी खराब। लो भाई चौबेजी गए थे छब्बे जी बनने दुबेजी बनकर लौटे। देखिये ऐसा नहीं होना चाहिए। पता चला कितने घरों में रोज कलेश हो रहे है। कोई पूछेगा अरे आजकल ऐसा क्यों होने लगा तो बोला जायेगा भाई हमें तो शालिनी बर्मन जी ने सिखाया था की तुलना करो तभी कुछ समझ में आएगा। तभी

तो हमें पता चला की हमारे साथ कैसे कैसे धोखे हो रहे है। लो गई भैंस पानी में। इससे तो अच्छा रहेगा की हम जैसे है वैसे ही ठीक है। है की नहीं? हंसना मना नहीं है। आप चाहें तो खुल कर हंस सकती है।

“शुक्र है की करीब २० मिनट बाद ही सही, लिफ्ट खुली तो। मेरा तो दम घुटने लगा था। वैसे भी मुझे सफ़ोकेशन की शिकायत है।” अनुराधा ने जब बताया तो उर्वशी ने उसे एक योगा क्लास के बारे में बताया जो इसी हॉस्टल के पास ही है “ज्यादा दूर भी नहीं जाना पड़ेगा और वहाँ योगा सिखाने वाले बहुत अच्छे है। योगा टीचर हर बिमारी का इलाज योगा से करने में सक्षम है। बच्चों को भी योगा से मानसिक बल मिलता है, जबसे मैंने जाना मैंने तो अपनी गुड़िया को भी उसमें डाल दिया है। हम दोनों को ही योगा से काफी आराम हुआ।”

“योग मिटाये रोग तो मैंने भी सुना है मगर कभी किया नहीं।” अनुराधा ने मुरझाते चेहरे के साथ कहा, जब हम कोई अच्छी चीज नहीं करते है तो किसी को बताने में थोड़ी झिझक होती है और खास कर योग जैसे रामबाण इलाज के लिए तो शर्मिंदगी होने लगती है। “लेकिन अब मैं भी और मेरी गुड़िया भी योगा शुरू करेंगे।” योग से ध्यान केंद्रित करने में, मन एकाग्रचित रखने में, दिमाग को संतुलित रखने में, सात्विक जीवन जीने में, हृदय विचलित होने से बचाने में मदद मिलती है। एक निरोगी ही सफल परिश्रम कर सकता है, इस बात का ध्यान आते ही ऐसा लगता है की योग से अच्छा आज हमारे लिए और हमारे बच्चों के लिए और कुछ भी नहीं है। इतना एहसास ही काफी था अनुराधा और दिव्यांशी को योग से मिलाने के लिए।

लो हे भगवान्! आज ये नल कैसे ख़राब हो गई। सुबह सुबह ही अड़ंगा लग गया। कभी लिफट ख़राब तो कभी नल ख़राब, और किसी को यहां कुछ बोल दो तो कहते हैं आपका स्वभाव ख़राब। चल क्या रहा है भाई यहां? दिव्यांशी को आज क्लास जल्दी जाना था और आज ही लफड़ा लग गया। “कोई बात नहीं दिव्यांशी तू तो तैयार होकर जा मैं बाईजी को बुलाती हूँ।” झटपट दिव्यांशी तो निकल गई और अनुराधा ने बाईजी को कमरे में बुलाया। बाईजी को सूचना मिल चुकी थी तो उन्होंने अतरंगी को भी साथ ले लिया था। अतरंगी पाइप मिस्त्री है कोई अजीब सा दिखने वाला प्राणी नहीं है, अपने नाम की तरह। बस बेचारे का नाम ही कुछ अनोखा है जिस कारण अक्सर लोगों को ग़लतफ़हमी हो जाती है। नाम भले लोगो को ग़लतफ़हमी में डाल दे मगर उसका काम उसपर विश्वास करने पर मजबूर कर देता है। तभी तो आज इत्ते सालों से अतरंगी ही सभी तरह की टूट फुट ठीक करने का एकलौता वारिस है। आज तक इसका कोई दूसरा उत्तराधिकारी नहीं आया।

अतरंगी अपना काम कर रहा था और बाईजी अपना। अनुराधा से बातों में मसरूफ बाईजी अपनी तनख्वा का रोना लेकर के बैठ गई, जो उनका हमेशा का काम है। हर किसी के सामने वो अपना दुखड़ा अवश्य सुनाती है ताकि शायद उनकी पुकार उनके मालिक तक पहुंच जाए और उनका काम बन जाए। बाईजी का काम ज्यादा है और काम के अनुसार उनको पैसे नहीं मिलते ऐसा उनका कहना है। भला ८००० में आज कल क्या होता है। कुछ हद तक उनका कहना वाजिब लग रहा था। काम में वो कभी कमी नहीं रखती तो फिर उनकी मेहनत के पैसे उन्हें देने में कमी क्यों? देखा जाये तो उनके भरोसे ही बच्चे हॉस्टल में सुरक्षित रहते है। रात दिन पूरी आत्मीयता से, पूरी ईमानदारी के साथ वो अपनी ड्यूटी करती हैं। कभी भी किसी को चाहे माँ हो या बच्चे किसी को भी जरुरत होती है तो बाईजी हमेशा तैयार मिलती है।

एक दिन तो पता चला की आधी रात में एक बच्ची की तबियत बिगड़ गई तो बाईजी ने ही उसके घर वालों को खबर की और उस बच्ची को फ़ौरन अस्पताल भी लेकर गई। रत्ती भर भी सिकन नहीं थी उनके चेहरे पर की रात को उनको परेशान किया जा रहा है। माना की ये उनका काम है मगर क्या हर कोई अपना काम बराबर करता है। चाहती तो वो मटिया कर सोइ रह सकती थी, या फिर झुंझला भी सकती थी। मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। अक्सर देखती भी हूँ की झलकियाँ उनसे बहुत खुश रहती है। आंटी आंटी करती ही रहती है। बाईजी से बातें करते करते अनुराधा को न जाने क्या ख्याल आया अपनी एक साड़ी निकाल कर उन्हें देने लगी। पहले तो बाईजी ने आना कानि की मगर बाद में बहुत खुश होकर ले कर गई। उनके साथ ही अनुराधा भी नीचे उतर गई। कुछ शोरगुल हो रहा था, वही देखने वो भी पहुंच गई। नीचे आने पर पता चला कि रात को गली में पुलिस आई थी, कुछ हंगामा हुआ था। उसी सिलसिले में पुलिस अब हमारे हॉस्टल में भी आई है। “अरे अब ये क्या माजरा है?” सुना था की पुलिस और भूत में वैसे भी ज्यादा अंतर नहीं होता है, दोनों से ही लोग भागते हैं। आज देखने को भी मिल गया। सबके चेहरे की हवाइयां जो उड़ी हुई है। जो भगदड़ मची हुई है और जिस तरह सब छुपने की कोशिश कर रहे है उसे देख कर तो कोई भी बता सकता है की इनके पीछे भूत पड़ा है। किसी दिन अगर रात को हम यह सोच कर डर जाए की घर पर अकेले होने के बावजूद हम अकेले नहीं है, तो कल्पना कीजिए की आपकी अवस्था कैसी होगी। आप मुँह तक चादर भी ओढ़ लेंगे तब भी एक ऊँगली भी नहीं हिला पाएंगे। कहीं उस भूत ने देख लिया तो, इतना भय आपको घेरे रहेगा, ठीक वैसी ही परिस्थिति अभी यहां हो रही है।

मगर माजरा तो पता करे कि हकीकत में हुआ क्या है? कुछ लड़कों ने किसी लड़की का नाम ले लेकर पूरे मोहल्ले में आवाज लगाई और जब लड़की नहीं मिली तो जो कुछ हाथ

लगा तोड़ फोड़ करने लगे। कुछ गरीब फुटपाथ पर सो रहे थे उनमें से एक दो का सर फट गया और दो चार जख़्मी हैं। पुलिस अपना काम करके चली गई उन्हें यहां कोई तसल्ली भरा जवाब नहीं मिला इसी वजह से जरुरत पड़ी तो फिर आने का बोल गई। बाईजी ने जब इतना कुछ बताया तो सबके रोंगटे खड़े हो गए। इतनी जांच पड़ताल करने के उपरान्त भी जब कुछ भी हाथ नहीं लगा तो पुलिस तो चली गई मगर पीछे छोड़ गई एक लटकती तलवार जो शायद हर एक के सर पर लटक रही थी। ये बात पूरे हॉस्टल में जंगल में आग की तरह फ़ैल गई।

अनुराधा का ध्यान तुरंत संगीता के द्वारा बताई गई बातों पर चला गया। अब तो उसे भी शक होने लगा की दाल तो जरूर काली है। मगर कितनी यह कैसे पता करें? हे भगवान्! रोज एक नई मुसीबत क्यों हमारा स्वागत करती है। अब क्या होगा? ऐसे माहौल में बच्चों की पढ़ाई कहाँ से होगी। जरा सा कुछ होता नहीं है कि अनुराधा तो तुरंत कल्पनाओं का पहाड़ खड़ा कर लेती है और उस पहाड़ की चोटी पर विनाश, सत्यानाश, आफत, बर्बादी, जैसे ही नकारात्मक शब्दों का धावा बोला हुआ होता है। अनुराधा चिंतित सी मुँह लटकाये खड़ी थी तभी उसकी नजर शलोनी पर पड़ी। उसने उसी से सारा माजरा जानना चाहा। वैसे भी एक वही है जिसके पास पूरे कोटा की खबर रहती है। उच्च स्तर की जासूस है शलोनी, जिसकी खबर किसी को भले ही ना हो मगर ऐसा एक भी बन्दा नहीं बचता जिसकी खबर इसके पास न मिले। उसने तो खबर बता कर खबरदार ही कर दिया। कहती है की कल रात को उसने भी देखा था। उसकी तो आदत ही है देर रात तक बार्चे में टहलने कि ताकि शायद कोई खबर हाथ लग जाए तो उसका अगला दिन मनोरंजक बन जाए। उसने बताया की उसने कल देर रात दो लड़कियों को गली में चोरों की तरह जाते देखा था। उसने नजरों से उनका पीछा आखिरी छोर तक किया। उसने देखा की कैसे दोनों लड़कियों ने खम्बे के पीछे खुद को छुपा लिया और कुछ देर में ही दो हिप्पी जैसे दिखने वाले लड़के वहाँ आये और इनको कुछ दिया। कुछ इस तरह से दिया की वह साफ़ साफ देख नहीं सकी। और इन दोनों ने भी उन्हें कुछ बदले में दिया। मगर तभी एक लड़के की नियत बदल गई और वह एक लड़की को जबरदस्ती अपनी ओर खींचने लगा। तभी वो लड़कियाँ वहाँ से भाग निकली और साथ में ही अपने जो कुछ भी लाई थी उन लड़को से छीन भी लिया। और फिर वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गई। लगता है कुछ काण्ड करके भागी है।

शलोनी की बातें सुन अनुराधा ने उससे कहा की “क्या शलोनी कुछ भी कहती हो। तुम्हें तो बस खबर पैदा करनी है चाहे इससे किसी का कितना ही नुकसान हो जाये। बस तुम्हारी यही बात मुझे पसंद नहीं आती।”

अनुराधा द्वारा विश्वास नहीं करने पर झुंझलाती हुई शलोनी ने उसे जवाब दिया की "मेरी खबर शत प्रतिशत सही होती है। तुम्हे यकीं नहीं होता तो कुछ दिन रुक जाओ वैसे भी सच किसी की दुल्हन थोड़े ही है जो उसे परदे में रखने में कामयाब हो जायेगा। वह तो सूरज की तरह है जो हर हाल में निकल के रहेगा।"

अब तो अनुराधा का ह्रदय जोर जोर से धड़कने लगा। किस तरह से बच्चों को संभाले समझ में नहीं आता, ऐसे लगता है की एक तरफ कुआँ है तो दूसरी तरफ खाई। अब न तो बच्चों को घर पे रखते बनता है न बाहर भेजते। शलोनी ने भी सहमति दी "बिलकुल सही कहा अनुराधा।" अनुराधा ने आलोक को यहाँ के खस्ता हाल से अवगत कराया। आलोक भी चिंतित हो रहा था उसने इतना ही कहा की "हम कर भी क्या सकते हैं। सुनी सुनाई बातों से व्यथित होने से तो नहीं चलेगा जब सच सामने आएगा तब देखा जायेगा अभी तो बस इतना ही कर सकते है की अपने आप को बचाकर चलो। दिव्यांशी की सुरक्षा ज्यादा जरुरी है बस उस पर ध्यान दो और कोई चारा नहीं है।"

"आज क्लास में प्रधानाध्यापक आएंगे कुछ समझायेंगे, दिव्यांशी तो ऐसा ही बता कर गई है," अनुराधा फ़ोन में आलोक को बता रही थी।

"बात क्या करेंगे अपनी पूरी टीम की तारीफ़ करेंगे और क्या," आलोक थोड़ा झुंझलाता हुआ सा बोला।

"मतलब? तुम कहना क्या चाहते हो आलोक?" तब आलोक ने अपनी झुंझलाहट का कारण अनुराधा को बताया की "अरे तुम्हे नहीं मालूम की आज के दिन कोटा में कोचिंग वालों कि होड़ लगी है। आज के दिन कोचिंग वालों ने जो सफलता हासिल कि है वह हर किसी कि आँखों कि किरकिरी बनी हुई है। अब एक मेवा मलाई खाये और दूसरा रुखा सूखा तो किसे बर्दास्त हो तो इसी कमी को पूरा करने कि होड़ में अब सभी कोचिंग वाले कुछ खास और कुछ अलग करने कि कोशिश में लगे है ताकि उनको भी टॉप १० कि गिनती में शामिल होने का मौका मिल सके। जैसे अकबर ने दिल्ली से अपना राज्य शुरू किया मगर बाद में समस्त भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित करने में उसने कोई कमी नहीं रखी और एक हद तक कामयाब भी हुआ उसी तरह आज कोटा में कोचिंग की स्थापना करने वालों की कमी नहीं है और अपनी कोचिंग को सर्वश्रष्ठ बनाने की इनकी होड़ न जाने कहाँ जाकर ख़तम होगी।" आलोक ने और भी बताया की "तुम्हे याद नहीं है कैसे पिछली साल हमने टीवी पर देखा था कि कोचिंग वालों ने अपने कोचिंग के विजई छात्र को कैसे एक गाड़ी इनाम के तौर पर दी, साथ ही उन बच्चों के सम्मान में कितना भव्य आयोजन किया गया था।"

"हाँ हाँ याद है न।"

अनुराधा ने कहा, "कैसे इतना जोश इतना उत्साह भरते है ये लोग अपने छात्रों में।"

"अरे काहे का जोश, अंगीठी गरम रखेंगे तभी न अपनी रोटी सेकेंगे।"

"हाँ आलोक बिलकुल सही कहा तुमने। कल ही तो बगल के कमरे वाली बच्ची बता रही थी की कैसे उसने दूसरी कोचिंग में नाम लिखवाया और वहाँ के मैनेजर ने इन्हे टोपी पहना दी। मैनेजर उस बच्ची के पिताजी से कहते है की आप सही जगह पहुंच गए है अब आपकी बच्ची को अव्वल आने से कोई नहीं रोक सकता। मैं तो आपको ज्यादा सपने नहीं दिखाऊंगा अपितु आपकी बेटी तो डिस्ट्रिक्ट टोपर बनने की क्षमता रखती है। अरे भाई मैनेजर हो या कोई ज्योतिष जो सिर्फ एक झलक देख के भूत भविष्य सब जान बैठे हो।"

"बताओ क्या हो रहा है," आलोक ने अचंभित होते हुए कहा। आज तो आलोक अपने मन की सारी भड़ास निकालने को उतावला हुए जा रहा था, तभी तो एक सांस ही कहने लगा "माँ बाप के पास कोई उपाय तो होता नहीं है, बस अपने बच्चे के उज्ज्वल भविष्य के लिए जो सपने उन्होंने बच्चों के साथ मिल कर देखे है उनको साकार करने के लिए जो बन पड़ेगा वो करेंगे बस इसी उधेड़बुन में फंसे माँ बाप की लाचारी का फायदा ये कोचिंग वाले उठाते हैं। एक ऐसा सिस्टम चल पड़ा है की अब ये एक मकड़ी के जाले का रूप ले चुका है जिसमें हर कोई एक पतंगे की तरह बस उलछ रहा है।"

"लेकिन आलोक एक बात से हम मुँह भी तो नहीं मोड़ सकते हैं।"

"कौन सी बात?"

"यही की इन कोचिंग के बदौलत कुछ फायदे भी तो हैं। ये है तो मुमकिन है, ये एक औसतन सत्य वचन है। आज डॉक्टर इंजीनियर बनना नामुमकिन नहीं रहा। पढ़ने वाले बच्चे रहें और इन काबिल शिक्षकों का आशीर्वाद उनपर बना रहे तो उसे सफलता मिल सकती है। इन कोचिंग वालों ने ही सब मुमकिन कर दिखाया है। इनके द्वारा दी गई उत्तम तकनीक की सुविधा और उच्च कोटि के शिक्षक का आर्शीवाद पाकर आज न जाने कितने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हुआ है और आगे भी होता रहेगा। इसे हम अनदेखा नहीं कर सकते। हाँ माना की लूट भी मचा राखी है मगर देखा जाए तो बाजार में हर कोई कमाने बैठा है। तो ये भी वही ही कर रहे हैं।"

"अनुराधा तुम्हारी बातों से तो साफ़ झलकता है की जरूर तुम्हे कमिशन मिलता है।"

"हाँ आलोक देते हैं न, १०% तो मिल ही जाता है।" जैसा मजाक आलोक ने किया वैसा ही मजाक अनुराधा ने कर लिया।

“मगर क्या इतनी लूट वाजिब है?”

तब आलोक ने फिर से कहना शुरू किया की “क्या माता सरस्वती को माँ लक्ष्मी के अधीन रखना जायज है। माँ सरस्वती की आराधना अगर बच्चों को करनी चाहिए तो वो लोग शिक्षक भी तो इनकी कृपा से ही बने है तब फिर माँ लक्ष्मी की जिसपर कृपा होगी वही केवल माँ सरस्वती के प्रसाद का हकदार बनेगा ये कहाँ का इन्साफ है? मैं तो यह कहना चाहता हूँ की अगर कोचिंग की फीस या उसकी लागत में थोड़ा मुनाफा कम रखा जाए तो अपने बच्चे को पढ़ाने के लिए फिर कभी भी किसी माँ को अपने गहने नहीं बेचने पड़ेंगे, कभी किसी बाप को अपनी जमीन गिरवी नहीं रखनी पड़ेगी और तो और कभी किसी दादी को अपने बुढ़ापे की लाठी को टूटते नहीं देखना पड़ेगा। वैसे भी जब शिक्षा ग्रहण करना हर एक का जन्मसिद्ध अधिकार है तो फिर क्यों कोई भी बच्चा टायर में हवा भरना ही अपनी तक़दीर मानने पर मजबूर हो या कोई टपरी पर चाय के गिलास पकड़ने और धोने को ही अपना जीवन मान बैठे या फिर मालिकों के बच्चों की बस्ता उठाये उसको विद्यालय के दरवाजे तक छोड़ने में ही वह बच्चा ख़ुशी महसूस करे? क्यों उसे ये सिखा दिया जाता है की इस दरवाजे के आगे जाने के लायक तुम नहीं बने हो? बस सिर्फ इसलिए की उस अभागे के सर पर माँ लक्ष्मी ने हाथ नहीं रखा। थोड़ा मुनाफा केवल कम हो जाए तो सोचो उन पैसों से कितने बच्चे शिक्षित हो कर देश का नाम रोशन करेंगे। क्या पता इन बच्चों में से कोई उनके जैसा निकल जाए।”

“किनके जैसा आलोक?”

“ए पी ज अब्दुल कलाम, या सी वि रमन, एस चंद्रशेखर जैसे अनेकानेक नाम है जिन्होंने अभाव में भी शिक्षा प्राप्त की क्योंकि उन्हें भी तिनके का सहारा मिला जिसके सहारे आगे बढे और आज वो अमर है।”

“हाँ तुम बिलकुल सही कह रहे हो आलोक। हमारी सरकार को इस मुद्दे पर विचार करना चाहिए।”

“हाँ अनुराधा देखना एक दिन अवश्य ऐसा आएगा जब उम्मीदों का सूरज भी चमकेगा। हमारा भारत महान सिर्फ कहने में नहीं है, महान लोगो की जन्मभूमि है उस कारण महान है। इस धरती पर हमेशा महानुभाओं ने जन्म लिया और मानवकल्याण में अपना योगदान दिया वैसे ही फिर कोई आएगा और सब ठीक होगा।”

“आलोक कभी कभी तो तुम इतनी भारी भरकम बातें करने लगते हो न की क्या बताऊँ मुझे ऐसा लगने लगता है की मैं किसी महापुरुष के वचन सुन रही हूँ जो तुम्हारे मुख के माध्यम

से फूट रहे हैं। मुझे इस तरह से भयभीत न किया करो। हम आम इंसान है हमें आम ही रहने दो इमली न बनाओ।”

आलोक अनुराधा की बातों पर खिलखिला कर हंसने लगा, “हट पगली। आज बात चली तो मन उस ओर भटक गया पर मजाल है तुम मुझे कभी भी किसी भी और राह पर जरा भी भटकने दो।”

“हाँ सब समझ रही हूँ मैं, तुम्हारे जो इशारे है न। कभी कोशिश भी मत करना। तुम जानते नहीं हो मेरे वाई फाई के कनेक्शन बहुत मजबूत है, एकदम उच्च तकनीक के तुम तुरंत फंस जाओगे।” हसंते हुए फोन कट गया।

हे प्राणी
तू धर्म कर, तू कर्म कर
औरों पे अन्याय न कर
गर हो सके तो रहम कर
अब दूर तू हर वहम कर
न मान कर, न अभिमान कर
शिक्षा का केवल सम्मान कर
शिक्षा का तू दान कर
दान कर या कन्यादान कर

ईश्वर का तू ध्यान कर
जब तक तेरे साथ सांस है
तू काम कर अपना नाम कर
मगर इंसानियत को न बदनाम कर

कुछ ऐसा कर कुछ वैसा कर
चुकता कर हर एक का कर
कुछ ऐसी मिसाल तू कायम कर
जिससे अपना नाम तू अमर कर

अध्याय : ८
कहीं धूप, कहीं छाओं

दोराहे, राही क्या करे, कैसे पायें पार
चुन गलत राह से, सीधे लगी कटार

दिव्यांशी बहुत बदल चुकी है, अनुराधा मन ही मन सोच रही थी। पहले से ज्यादा जिम्मेदार हो गई, उसमें काफी समझदारी आ गई, अपना भला बुरा अच्छी तरह भाप लेती है, जो भी चीज उसके और उसके मकसद के बीच आती है वो उन्हें बिना कुछ सोचे समझे हटा देती है। अनुराधा को अभी भी यकीं नहीं हो रहा की उसकी चंचल दिव्यांशी इतनी गंभीर, इतनी होशियार हो जाएगी। उसे तो डर था की दिव्यांशी को पढ़ाने में उसका तेल निकल जायेगा मगर वह गलत थी। उसे तो कोई पापड़ नहीं बेलने पड़े। परीक्षा का परिणाम क्या निकलेगा उसकी परवाह नहीं है मगर दिव्यांशी की मेहनत और लगन उसकी सफलता के डंके अभी से बजा रहे है। अनुराधा बहुत खुश है की सफलता की ओर बढ़ते कदम दिव्यांशी में एक नई ऊर्जा की वृद्धि कर रहे है। दिव्यांशी को ज्ञात हो चुका था की पॉसिबिलिटी हर समय होती है भले ही वह दिखाई न दे। बस उसे हासिल करना हमें सीखना होगा। इस प्रक्रम में वो उस समोसे के समान हो चुकी है जो भले ही ऊपर से ठंडा नरम दिखाई दे मगर अंदर में उसके गरमा गरम आलू है जिसकी गर्मी अभी भी उतनी ही है जितनी उस तेल मे थी। दिव्यांशी ने अपने सपने को जीना शुरू कर दिया और हर पल उसे पाने की चेष्टा में लगी रहती है। उसने ठान लिया है की वो शहद पैदा करने वाला फूल बनेगी ताकि मधुमक्खियाँ स्वयं आकर्षित हो। अब वह अपने तक़दीर के दरवाजे को तब तक खटखटाती रहेगी जब तक की वह खुल न जाए। उसकी असीमित मेहनत और लगन एक दिन सफलता को उसके कदम चूमने पर मजबूर कर देंगे। दिव्यांशी के उत्साह को देख कर अब अनुराधा भी उत्साहित रहने लगी। अब वह दिव्यांशी का ज्यादा ध्यान रखने लगी। उसकी परछाई बनी हर समय उसके साथ साथ रहने लगी ताकि उसको जरा भी अकेलापन महसूस न हो। उसे एक पल को भी ये न लगे कि वह अकेली है। यह अकेलापन बड़ा जालिम होता है ऐसे अपनी जंजीरों में जकड़ता है कि इंसान कमजोर पड़ने लगता है। और अब इस मुकाम पर आकर कोई रिस्क नहीं ले सकते हैं। अब हर समय अनुराधा और दिव्यांशी साथ साथ होती थी, बिलकुल दो दोस्त की तरह।

अनुराधा ने दिव्यांशी को बताया की किस तरह उसने धोखा खाया। लोगों को पहचानने में उसने कैसे गलती कर दी। “दिव्यांशी मालूम है तुझे मैं आजकल कुछ दिनों से दो सहेलियों को देख रही थी, जिसमें एक तो साधारण सी कम बोलने वाली लग रही थी और दूसरी तेज तरार लगी। दूसरी वाली के सजने सवरने का ढंग भी थोड़ा आधुनिक था। ऐसा लगता है की इस महिला ने तैयार होने में शायद ही कोई चीज छोड़ी हो या इस बात को हम ऐसे भी बोल सकते है एक सादगी की मिसाल तो दूजी मैडम कमाल (फैशन वाली आंटी)। ऐसा लगता है जैसे बरसों की दोस्ती होगी। एक साथ खाना खाना, जब देखो एक दूसरे के कमरे में बैठे बैठे गप्पे लड़ाना, बाजार साथ जाना, यहां तक की सुबह शाम बाहर टहलने भी एक साथ जाना।

इतना कोई जिगरी और पुरानी दोस्ती वाले ही करते होंगे। इनको देख कर अच्छा लगता है। दोस्ती तो ऐसी ही होने चाहिए, सुख में भी और दुःख में भी एक दूजे के साथ। यहां मैं गलत हो गई। इनकी यारी देख कर कोई भी धोखा खा सकता है। ये याराना कोई पुराना नहीं है इस मित्रता को तो शुरू हुए जुम्मा जुम्मा चार दिन ही हुए है। इस दोस्ती के पौधे का बीज यहीं आकर पड़ा है, मगर देखो कितनी जल्दी फल फूल गया, ताज्ज़ुब है।"

"हाँ माँ, सही में। यह तो वाकई में ताज्ज़ुब की बात है। मानना पड़ेगा औरतो को कुदरत ने एक नायाब हुनर से नवाज़ा है। जो भी हो औरतें अपना मन लगाने का जुगाड़ लगा ही लेती है।"

"यहां ऐसे ही औरतों का गुट बन जाता है बेटा। कभी दो का तो कभी चार का और फिर शुरू होता है फन टाइम। शिवानी बता रही थी तो कि एक दिन औरते अपनी पूरी टीम के साथ दिन भर घूमने का और रात में फिल्म देखने का विचार बना ली, उस विचार को संपन्न भी किया गया, धूप में पहाड़ पर भोलेजी के दर्शन किये, फिर साँझ की छाओं में खरीदारी फिर चाँद की चांदनी में फिल्म और खाना खिलाना चला और देर रात को शीतलहरी में ऑटो में हॉस्टल आना तो हुआ मगर दूसरे दिन थकान से किसी को बुखार तो किसी को जुकाम ने परेशान कर डाला। कहने की हजार बातें है मगर कुछ पल खुश होने का अधिकार सबको है।"

"वही तो माँ खुश होने का हक़ सबको है। जरा आप भी सोच लीजिए।"

"ख़ुशी तक तो ठीक है बेटा मगर ये सब जो आजकल हो रहा है ये खटकते ही रहता है।"

"अब आपको क्या खटकता है माँ? मुझे तो आप से डर लगने लगा, पता नहीं आप कब किसको डांटने लगे।"

"औरतो का घूमना फिरना मौज मस्ती तक तो ठीक है मगर ये सब क्या हो रहा है समझ से बाहर जा रहा है। ऐसे माहौल से तो केवल शक ही पैदा हो रहा है। आज तो हद हो गई दिव्यांशी मेरे तो दिमाग में शक कि घंटी तब बजी जब मैंने उस फैशन वाली आंटी को वापस आते देखा। बात ये हुई कि उस आंटी ने ही आज सभी महिलाओं को जिद्द करके अपने साथ यही पास वाले भोले जी के मंदिर जाने को कहा था, मगर यह क्या सब तो चली गई अब ये खुद चोरों कि भांति वापस क्यों आ रही है? जब मैंने ऊपर बालकनी से सड़क पर देखा तो वही आंटी मुँह को दुपट्टे से ढकती हुई चारो तरफ नजरे दौड़ाती हुई न जाने किधर जा रही थी। अब तो मुझसे बर्दास्त नहीं हुआ। अब तो पानी सर के ऊपर से जा रहा था।"

"क्या माँ आप भी न जासूस बनना बंद कर दो। नहीं तो किसी दिन लेने के देने पड़ जायेंगे।"

दिव्यांशी की बात से अनुराधा को एहसास हुआ की वह गलत बात उठा रही थी इसलिए उसने वहीँ बात ख़तम कर दी। कैसे अनुराधा ने उसका पीछा किया।

अनुराधा ने देखा कि वही आंटी हॉस्टल के अंदर आई और चुपके चुपके एक दूसरे ही कमरे में चली गई। उसका कमरा तो अनुराधा पहचानती है। अनुराधा से अब रहा नहीं गया तब उसने किवाड़ कि आड़ से सुनने कि कोशिश की। ज्यादा तो समझ में नहीं आया मगर इतना जरूर सुनाई दिया कि "अब हमें जो करना है जल्दी करना होगा पुलिस हरकत में आ चुकी है कभी भी खतरा बढ़ सकता है।" इतना सुनते ही अनुराधा के तो होश उड़ गए। वह विस्मय विमुग्ध सी निर्वाक वहाँ जड़ सी खड़ी ही रह गई। एक बार तो उसका मन हुआ कि दरवाजा खोल कर अभी के अभी वह उसे रंगे हाथों पकड़ ले मगर अभी वह अकेली थी और अंदर कितने लोग है ये भी उसे नहीं मालूम था तो बेकार में बात बिगड़ सकती है यही सोच कर उसे थोड़ा और इंतज़ार करना सही लगा।

अब उसके पेट में तो गाद्रा बड़ गया था। क्या कहते है, पेट आफरा हो रहा था मगर इतनी संगीन बात वह किससे कहे किसपर विश्वास करे यह समझना उसके लिए बहुत मुश्किल हो गया। उस आंटी की तरफ से इतना बड़ा विश्वाशघात मिलने के बाद तो अब किसी पर भी विश्वास करना कठिन है कहते हैं न की दूध का जला छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है, कुछ ऐसा ही हाल अनुराधा का हो गया था। अब तो वह दिव्यांशी को भी कुछ नहीं बता सकती है, इसलिए सही समय के इंतज़ार में उसने सब ऐसे छोड़ दिया जैसे कोई सीरियल है जिसका अगला एपिसोड जब आएगा तब देखेंगे। वैसे भी वह इतनी डर चुकी थी की उसके बस का कुछ लग भी नहीं रहा था। अनुराधा इन सब से उठ कर सिर्फ अपनी दिव्यांशी पर ही ध्यान देना चाहती थी। जिस काम के लिए वो यहां आई है उस को अगर ठीक से नहीं कर पाई तो वो आलोक को क्या मुँह दिखाएगी। इसीलिए उसे समझ में आ गया की व्यर्थ में जो वह "शर्लक होमस" बनने चली है, ये उसके बस का नहीं है। इसलिए समझदारी इसी में है की जो कर सकते है वही ही करे नहीं तो सब तरफ से जाएंगे। सत्य ही कहा है किसी ने "जिसका काम उसी को साझे दूजा करे तो ठन ठन बाजे।"

दिव्यांशी पढ़ती तो अनुराधा भी वहीं बैठी कुछ न कुछ करती रहती। अब दोनों खाना खाने साथ जाती। रोज की तरह आज भी अनुराधा दिव्यांशी के साथ नीचे मेस में खाना खा रही थी। अनुराधा ने बात शुरू की, "आज कोई खास दिन है लगता है तभी तो मेस में इतना शोरगुल हो रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे किसी मिठाई पर मक्खियों ने धावा बोल दिया हो। कोई आत्मश्लाघा में व्यस्त तो कोई वृथा ही लोकापवाद में। कोई प्रखर वाणी में विह्वल हो रही है तो कोई प्रशांत चित अपने द्वारा किये गए विवर्जन का गुणगान करने में। कोई अपने हृदय के विषाद को प्रकट कर रही है तो कोई आज किस कारण इतनी प्रफुल्लित है वह बता

रही है। किसी के मुख के सागर पर तारीफों के पुलिया बंध रहे है तो किसी के अरमानों की बगिया में सफलता के फूल खिल रहे है। किसी का स्वास्थ बिगड़ा है तो किसी का मिजाज। आज तो ऐसा लग रहा है की पार्लियामेंट की बैठक हो रही है हर पक्ष बस अपनी कहने में मसरूफ है। इन बच्चियों की मधुर अटखेलियां मन को भाने लगी।

बहुत दिनों के अंतराल में कुछ अच्छा कुछ सुकून भरा मिला, इतना शोरगुल इतनी रौनक देखने को मिली। ऐसा लग रहा था जैसे वातावरण में बदलाव आ गया है। तेज लू के हट जाने के बाद अब ठंडी ठंडी हवाओं का पदार्पण हो रहा है। मगर ये क्या चारो ओर फैले वसंत की बहार के बीच ये कैसी मायूसी। जैसे हरे भरे बगीचे के एक कोने में सूखा कोई वृक्ष, जिसे सूर्य की तपन ने झुलसा दिया या फिर जल की कमी ने सूखा दिया। सभी बच्चियां प्रफुल्लित चहक रही है और ये दोनों बहने उदास मुखड़ा लिए किस चिंता से परेशान है? इन्हे देख कर ऐसा लग रहा है जैसे अचानक ही मौसम ने रंग बदल लिया है। अब न चाह कर भी मेरा ध्यान तो उन लड़कियों पर ही अटक गया है दिव्यांशी।"

"छोड़ो न माँ तुम्हें भी न बहुत पंचात है, होगी कोई वजह जाने दो न।"

"जी तो चाह रहा था की पूछ लूँ मगर औपचारिकता ने कदम रोक लिए। अब मुझे खाना कहाँ भाये। उन दोनों ने भी ठीक से खाना नहीं खाया। कितनी देर से देख रही हूँ मुस्कान की एक भी लकीर उनके मुखमण्डल पर खिंचती नजर नहीं आई। दोनों आई और चली गई किसी का भी ध्यान उनकी ओर नहीं गया। न जाने क्यों मेरा मन उद्विग्न होने लगा। औरो की तरह मैं भी नहीं देखती तो ज्यादा अच्छा रहता। मन तो यूँ विचलित न होता। वैसे भी बच्चों की परेशानी मुझसे देखी नहीं जाती। कल की ही तो बात है ५०६ कमरे की लड़की बोल रही थी की उसकी मम्मी तो उसके पास रहने नहीं आ सकती क्योंकि उसकी दादी की तबियत खराब रहती है। बेचारी कितनी मासूम सी कितनी दुखी सी बोल रही थी। उसकी मम्मी भी कितनी छटपटाती होगी मगर उनके पास उपाय नहीं है। उपाय तो मिसेस भट्ट के पास भी नहीं था जब उनके बेटे को चोट लगी थी और वो तड़प कर रह गई मगर जा नहीं सकी। उस वक्त घर की परिस्थिति ही कुछ ऐसी थी की वह निकल नहीं पाई। सबको मौके नहीं मिलते, कुछ की किस्मत में तड़पना ही लिखा होता है। सब ठीक है मगर इन बहनो को क्या हुआ होगा यह कैसे मालूम होगा। अब मुझे तो चैन नहीं मिलेगा। व्याकुलता बेचैनी उत्सुकता घबराहट इन्ही सब विचारों का आना जाना इस मन में शुरू हो गया। मन हुआ न कोई धर्मशाला हो गई जब जो चाहा चला आया।"

"मां ये क्या आप तो एक सांस ही शुरू हो गई।" अनुराधा की व्याकुलता देख दिव्यांशी उसे समझाने लगी "माँ आप व्यर्थ ही परेशान होने लगती हैं। कोई भी वजह हो सकती है, आप

सबके बारे में इतना क्यों सोचने लगती हैं।” दिव्यांशी ने अनुराधा को कमरे में ले जाना ही सही समझा।

माना बच्चों को पढाई करने के लिए शांत वातावरण की आवश्यकता होती है मगर ऐसा सन्नाटा की सुई भी गिरे तो कानों तक उसकी आवाज गूंज जाए। अगर मम्मियाँ जो की अपनी बेटियों की देख रेख के लिए आई हुई है बालकनी में बैठ भी जाए तो बाईजी आकर सबको कमरे में जाने को कह देती है। बाईजी गलत नहीं करती है, अगर वो ऐसा नहीं करेगी तो पता चला की कुछ दिनों में यहां सिलाई कढ़ाई का भी काम होने लगा है। किन्तु उन बच्चों का क्या जो अकेले में जूझ रहे हैं, अपनी मुश्किलों से अपने सपनों से। उनको कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है मगर उस मुश्किल घड़ी में वो अकेले होते हैं। उस वक्त एक बच्चे को अपनों की सबसे ज्यादा जरुरत होती है। मगर किसी न किसी कारण से वह अकेला ही होता है। तो क्या यह जायज़ है। क्या इतना एकांत उसके बाल मन को घेर कर कमजोर नहीं कर देगा। फिर अगर उसने आत्महत्या जैसे फैसले के आगे हथियार डाल दिए तो किसे दोषी माना जायेगा? हर बच्चा क्या इतना श्रेष्ठ, समझदार, सहनशील, सुयोग्य होता है? क्या हर बच्चे में इतनी काबिलियत होती है की इस तरह की कठिन परीक्षा में वह सफलता हासिल कर सके? नहीं ऐसा नहीं होता है। हर तरह के बच्चे होते है कोई विद्वान् होता है तो कोई सामान्य, कोई चुटकियों में पाठ याद कर लेता है तो किसी को घंटो लग जाते हैं। मगर लोग ये नहीं समझते। आखिर क्यों?

अरे बच्चा है वो कोई रोबोट नहीं जिसे जो आपने कह दिया बस वह करके ही रहेगा। पहले भी तो बच्चे पढ़ते थे मगर उनको तो कभी ऐसे हारते मुरझाते नहीं देखा और ना ही कभी सुना की बच्चे ने पढ़ाई के चलते आत्महत्या कर ली। बच्चे पढ़ाई भी करते और सफलता भी हासिल करते मगर स्पर्धा में कभी जीवन नहीं झौंक देते थे। अनुराधा के मन ने आज तो जैसे उसका कहना न मानने की कसम खा ली है, तभी तो देखो न कहाँ कहाँ के विचार से मन भरा जा रहा है। कभी खुद उत्तेजित हो रही है तो कभी खुद ही अपने आप को समझा रही है, की हो सकता है मैं जैसा सोच रही हूँ वैसा वीभत्स कुछ ना हो, मैं व्यर्थ ही चिंतित हो रही हूँ। विमुख परिस्थिति में कोई फंसा ही हो ऐसा जरुरी तो नहीं होता। और ऐसा तो नहीं की हर कोई वाक्पटु हो। थकान भी तो हो सकती है। इन्ही विचारों में खोई खोई कब रात बीतने को आई अंदाजा ही नहीं हुआ। अरुणोदय से पहले ब्रह्ममुहूर्त में चेतना जगी तो ख्याल आया की अब तो ईश्वर ही कुछ कर सके तो ही हमारा उद्धार हो अपितु राम ही जाने। और फिर अपने सवालों की पोटली को एक ओर झटक प्रार्थना में सिर्फ और सिर्फ बच्चों के लिए ढेर सारा आशीर्वाद मांगने लगी। फिर अब जब रजनी ने अपनी चादर समेटना शुरू किया तब अनुराधा ने अपनी चादर मुँह तक तान कर सोना शुरू किया।

काफी देर से लग रहा है जैसे कोई आवाज लगा रहा है मगर मानसिक थकान और रात की नींद की वजह से अनुराधा जवाब देने की स्थिति में ही नहीं थी। पर दिव्यांशी को लेट हो रही थी जिस वजह से उसने माँ को हिला हिला कर उठाया। तब जाकर अनुराधा ने आँखें खोली।

“क्या बात है माँ तबियत तो ठीक है न, आज कितनी देर हो गई। चलो अब जल्दी करो।”

अनुराधा ने कहा “न कुछ नहीं आज आँख गहरी लग गई,” दिव्यांशी को तो उसने समझा दिया क्योंकि वह अपने ह्रदय के पटल पर महसूस करते भूकंप के झटको को दिव्यांशी के ह्रदय तक पहुंचने नहीं देना चाहती थी। दिव्यांशी को टाल मटोल कर अनुराधा नहाने चली गई। जैसे तैसे नाश्ता कर दिव्यांशी को क्लास भेज कर अनुराधा पहुंच गई बाईजी के पास। अनुराधा को कहाँ चैन था, उसका बस चलता तो वह रात में ही पहुंच जाती। बाईजी के पास से उसे कोई संतुष्टि जनक जवाब नहीं मिला। उसकी व्याकुलता बढ़ने लगी। आक्रोश से भरी अनुराधा का बस चलता तो अभी के अभी वह उन लड़कियों के घर पहुंच जाती। वर्तमान में तो बाईजी को ही खा जाने की दृष्टि से देखी जा रही थी। बाईजी भी क्या करती तो, जरुरी थोड़े ही है की उनके पास हर लड़की का इतिहास या वर्तमान उपलब्ध हो। एक दो थोड़े ही थी पूरी की पूरी ३०० लड़कियाँ थी। अनुराधा की उत्सुकता देख कर तो यही लग रहा है की आज तो वह सच जानकार ही रहेगी मगर कैसे यह उसे पता नहीं।

उसने दिमाग लगाया, काउंटर पर जाकर पता लगा लिया की उनका कमरा कौन सा है। बस उसी कमरे के बाजु वाले कमरे की लड़कियों को टटोलने लगी। ये तो पता ही था की यहां भी सफलता नहीं मिलने की। अनुराधा का हाल कुछ ऐसा हो गया था जैसे मानो किसी ने तपते तवे पर कुछ पानी की बूंदों का छिड़काव कर दिया हो। वह भी चैन से बैठने वाली नहीं थी। उसने सबसे पूछ ताछ शुरू कर दी। संगीता मिले चाहे शलोनी मिले या दूसरी तीसरी जो भी बाईजी मिले हर किसी से बस एक ही बात। मानना पड़ेगा अनुराधा का ये टोटका काम आ ही गया। एक से दूसरे तक दूसरे से तीसरे तक करते करते बात सही आदमी तक पहुंच ही गई। हम बचपन में वो गेम खेलते थे न एक दूसरे के कान में एक ही बात बोलनी है और लास्ट में देखना है बात क्या थी और क्या बनी। आज वही खेल काम आ गया।

जिस बाईजी को उन लड़कियों के बारे में सच पता था उन तक खबर पहुंच गई की कोई जानना चाहता है की आखिर उन लड़कियों का हुआ क्या? बाईजी किसी भी लड़की के बारे में कोई भी बात हर किसी को नहीं बता सकती है। इस नियम का सख्ती से पालन करने की उनको सख्त हिदायत दी जाती है। मगर अनुराधा की व्याकुलता और उसके ममता के आंसुओं ने बाईजी को सच उगलने पर मजबूर कर दिया। उन बाईजी ने जो बताया वह तो

हृदय विदारक है। दुःख और अवसाद से भरी दास्ताँ है। नीर नैनों की कोर लांघने पर मजबूर हो जाए ऐसा उनका जीवन वृतांत है। नम्रता और सुजाता दो बहने विपरीत स्वभाव की होने के बावजूद एक दूजे की पक्की सहेली हैं। जहां नम्रता थोड़ी शांत और गंभीर थी वहीं सुजाता चंचल और खुराफाती। नम्रता को रूप तो प्रभु ने छप्पड़ फाड़ कर दिया परन्तु दिमाग देने में थोड़ी कंजूसी कर दी। और सुजाता को कुछ ज्यादा ही इत्मीनान से बनाया होगा तभी शारीरिक और मानसिक दोनों ओर से वह भाग्यशाली है।

सुजाता को पढ़ने का बहुत शौक है या यूँ कहें की किताबी कीड़ा है। और नम्रता को बस मटरगस्ती का। सुजाता को जब कोटा आने की इजाजत मिल गई तो उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। खुश होती भी क्यों नहीं, उसे अपने सपनों को साकार करने की सही राह जो मिल गई थी। पक्षी को जब उड़ान भरने को खुला आसमान मिल जाए तो उसके असीमित उत्साह की कल्पना भर ही उसके हृदय में तरंगे पैदा करने लगती है। उसके जीवन में उमंगें, स्फूर्ति, ऊर्जा का असीम प्रवाह होने लगता है। वो एक नई सतह पर पहुंच कर अपने आने वाले कल को देखने लगता है। वो ख़ुशी वह आज ही महसूस करने लगता है जो उसे सालों की तपस्या के बाद मिलने वाली है। उमंगो और उत्साह की लहरों का ज़ोर इतना होता है की राह में आने वाली परेशानियां उसे परेशानियां नहीं लगती। बस ऐसे ही ख्वाबों के उड़नखटोले पर सवार हो कर सुजाता भी यहां आई मगर उसकी देखा देखी नम्रता ने भी उसके साथ आने की जिद्द पकड़ ली। घरवालों ने समझाया मगर वह मानने को तैयार नहीं थी। सुजाता को भी उसका दिल तोड़ना अच्छा नहीं लगा सो दोनों साथ आ गई। सबको यही लगा था की कुछ दिन में नम्रता का जोश ठंडा हो जाएगा और वो वापस चली जाएगी मगर अनहोनी का किसे एहसास था। नम्रता को छोटी छोटी बातों पर राई का पहाड़ बनाने की आदत थी। उसे हमेशा अपनी तारीफ सुनना अच्छा लगता, और किसी की तारीफ से वह परेशान हो उठती भले ही वह सुजाता की ही क्यों न हो। कहते है न की कोई अपना हार जाता है तो दुःख होता है मगर फर्स्ट आ जाए तो ज्यादा दुःख होता है। ऐसा ही कुछ नम्रता के साथ था। सुजाता ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था की ऐसा भी कुछ हो जाएगा जिसके लिए उसे इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। उसने इतना तो सुन रखा था की सफलता उस माननीय मेहमान की तरह होती है जिसकी खातिरदारी बड़े ध्यान से करनी पड़ती है नहीं तो उसे बुरा मानते देर नहीं लगती परन्तु उसे यह नहीं मालूम था की उसे अपनी छोटी बहन की खातिरदारी भी बड़ी जतन से करनी होगी नहीं तो उसे बुरा लग जायेगा।

वही हुआ जिसका डर था। सुजाता को मिलती सफलता और नम्रता की विफलता ने जल्द ही नम्रता की मानसिक स्थिति को डांवाडोल कर दिया। हालाँकि उसने अपनेआप को

नियंत्रित रखने की कोशिश की मगर इससे ज्यादा उसके बस का नहीं था। फिर क्या था इसका अंजाम बुरा हुआ। मन में धधकते लावे ने ऊपरी सतह को लांग ही लिया और सर्वनाश कर डाला। नम्रता को अपनी विफलता की वजह सुजाता लगने लगी और उसने उसे ही अपना सबसे बड़ा शत्रु मान लिया। अब हर समय वह चिड़चिड़ी सी रहने लगी। अपना तो पढ़ती नहीं थी और सुजाता को भी पढ़ने नहीं देती। नम्रता हर मुमकिन कोशिश रहती की किसी भी तरह वह सुजाता के नाक में दम करके रखे ताकि उसकी विफलता का वह आनंद उठा सके। ऐसे दिमाग से भले नम्रता कमजोर थी मगर अपने मतलब में देखो कितनी सयानी थी। इसका नतीजा बुरा हुआ सुजाता भी अब नम्रता से दुखी होने लगी। लाख समझाने पर भी नम्रता मानती नहीं थी और सुजाता कब तक उसको बर्दास्त कर पाती, नम्रता कि शैतानियों का तो कोई छोर ही नहीं था। तंग आकर अब सुजाता उसे वक़्त बेवक़्त फटकारने लगी। फटकार का तो उल्टा ही असर होने लगा अब तो नम्रता बिचर बिचर कर रोना शुरू कर देती। मामला संगीन होने लगा। जब बात सुजाता के हाथों से फिसलने लगी तब उसने घर पर बताया। घर वालों ने भी सुजाता को ही समझाया कि बच्ची है तू ही थोड़ा बर्दास्त कर लिया कर। वो तो नासमझ है मगर तू तो हमारी सबसे समझदार गुड़िया है न।

फिर क्या था वही हुआ जिसको सबने नजरअंदाज किया। नम्रता का बचपना कहो या जूनून अपनी हद पार करने लगा। हम अगर किसी घाव को अनदेखा करेंगे तो वो ठीक थोड़े हो जायेगा, उस घाव को नजर अंदाज करके हम सिर्फ खुद को तसल्ली दे सकते हैं न कि उसका इलाज कर सकते हैं। ठीक तो उसका इलाज करने से होगा नहीं तो वह तो नाशूर बनकर ऐसी पीड़ा देगा जो असहनीय हो सकती है। नम्रता के केस में भी वही हुआ अब नम्रता आपे से बाहर होने लगी। पहले तो वह छुप छुप कर सुजाता को तकलीफ पंहुचाने कि कोशिश करती थी मगर अब तो उसने जैसे सुजाता को बर्बाद करने कि कसम ही खा ली हो। हीन भावना से ग्रसित नम्रता अपने साथ सुजाता को भी ले डूबी। नम्रता कि बर्दास्त करने कि शक्ति जितनी थी उसने सारी लगा दी अब उससे अपनी कमज़ोरी कह लो या सुजाता कि काबिलियत कुछ भी बर्दाश्त करना नामुमकिन हो गया था। इसी घुटन ने उसके विश्वास का गला घोंट दिया और उसे अस्पताल पंहुचा दिया। घरवालों और डॉक्टर का भी यही मानना था कि अगर सुजाता पढ़ती है तो नम्रता को खोना होगा, अब फैसला सुजाता को ही लेना होगा कि उसे जीवन में क्या चाहिए। ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति सुजाता के जीवन में आ गई जिसकी शायद उस बच्ची ने कभी कल्पना भी नहीं कि होगी। अनापेक्षित घटना जीवन में पूछ कर थोड़े ही प्रवेश करती है, इस तरह कि अप्रत्याशित घटनाएँ पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहती है जब जिसके जीवन में उन्हें पदार्पण करना होता है वो किसी से राय नहीं

मांगती। सुजाता को अपना कैरियर और बहन में से एक को चुनना था तो उसने वही किया जो एक सच्ची और अच्छी बहन को करना चाहिए था। किस तरह सुजाता के सपनों की नाव वहाँ डूबी जहां पानी कम था।

सुना है की भाग्य, सफलता, खुशनसीबी ऐसी कुंजी है जो आप इस ब्रह्माण्ड से मांगो तो आपको अवश्य मिलेगा, किस्मत का दरवाजा अगर मन से खटखटाओ तो जरूर खुलेगा और सफलता की मणि खोजने से अवश्य मिलेगी मगर सुजाता की कहानी में क्या लागू होगा? उसकी जीवन की कहानी तो लगभग सभी तथ्यों को फेल कर रही है। न ही बेचारी को खटखटाने का मौका मिला न खोजने का और न ही मांगने का। ऐसा लग रहा है की उसे अपंग बना दिया गया है जो लाचार हो गई। ऐसा लग रहा है जैसे रात ने संध्या को अपनी आवरण में ले लिया हो। दोनों के ही साथ बुरा हुआ, भगवान् किसी दुश्मन के साथ भी ऐसा न करे।

अनुराधा की मनःस्थिति गंभीर हो चली थी क्या करे वह? उसने आज तक इस तरह का माहौल नहीं देखा था उसके लिए सब नया नया था। वह कभी घर से निकली नहीं थी कभी किसी से इतनी गहराई में उतर कर उसका हाल जाना ही नहीं था और अब जानने समझने का मौका मिला भी तो देखो कैसी विडंबना है इतनी तकलीफ सुनकर धिक्कारने को जी चाहता है। मगर किसे? किंकर्तव्यविमूढ़ सी अनुराधा सोच में डूब गई। इस सवाल ने रोक लिया। क्या वाकई में दोनों बहने इस परिस्थिति में उलझ कर अपना जीवन यूँ ही दाँव पर लगा देगी? क्या ऐसा नहीं हो सकता था की कोई सारथी इनको भी मिल जाता और इन्हे इस बवंडर से बचा लेता? इस प्रतिस्पर्धा की गहराई से नम्रता को स्नेह से अवगत कराता तो क्या वह नहीं समझती? उसकी रूचि उसकी काबिलयत के आधार पर उसमें उत्साह जगाने की क्या किसी को कोशिश नहीं करनी चाहिए थी? उसको प्रोत्साहन देकर उसे उत्साहित कर या उसे लाड दुलार कर उसे सुजाता के मार्ग से सही समय पर नहीं हटाना चाहिए था? भला गेहूं के साथ घुन क्यों पिस गया? उसे पहले ही छानना, चुन बिन नहीं लेना चाहिए था। डूबते को तो तिनके का सहारा ही काफी होता है तो क्या परिवार में या समाज में कोई नहीं था जो आज इस परिस्थिति को बनने से पहले ही रोक लेता। जरा सोचो दो जिंदगियां संवर जाती। उनकी तरह हजारों लाखों बच्चे बच्चियां है जिन्हे सही मार्गदर्शक की सख्त जरुरत है जिससे वो एक आम जीवन जी सके। अपनी व्यथित ह्रदय के साथ संताप में डूबी विषाद से घिरी अपनी मन में उठते सवालों के उफान को ठंडा करने की राह ढूंढ़ती हुई अनुराधा वहां से चली गई।

अध्याय : ९
गुरु और शिष्य

तीरथ गए से एक फल, संत मिले फल चार
सतगुरु मिले अनेक फल, कहे कबीर विचार

अनुराधा बात-बात पर दुखी भी होती और असमंजस में भी पड़ती। मगर यह जानती भी थी की यह अर्थहीन प्रलाप है। अकेला चना भांड नहीं फोड़ सकता। वह चाह कर भी कुछ नहीं कर सकती। मगर वह यूँ ही हाथ पर हाथ धरे भी नहीं बैठ सकती थी। अगर हर कोई यही सोच ले की कुछ नहीं हो सकता तो सही में कुछ नहीं होगा क्योंकि कोई कुछ करेगा ही नहीं तो कुछ होगा कैसे? अनुराधा को दिव्यांशी को भी देखना था उसी के लिए वो यहां आई है, तो अब आती है बात की वह कैसे क्या करे ताकि दिव्यांशी को भी दिक्कत न हो और उसका मन भी शांत हो जाए। अपने बच्चों को हर कोई अपने पैरों पर खड़ा करना चाहता है और ये चाहत होनी भी चाहिए। बस ध्यान देने की बात यह है की बच्चों का मनोबल कैसे हमेशा ऊंचाई पर रखा जाए। बच्चों में जब आत्म विश्वास की कमी होती है तब जंग वहीँ से शुरू होती है। तो क्यों न बच्चों में एक ऊर्जा जगाई जाये जिसकी गर्मी इनमें उत्साह और हौसलों के बल्ब को हमेशा जला कर रख सके। माना हिन्दुस्तान में कोयले की कमी आने वाले समय में बिजली की आपूर्ति करने में शायद सक्षम ना हो पाए मगर हमारे अंदर ईंधन की कोई कमी नहीं हुई है बस उसकी खुदाई की आवश्यकता है। अब हम खदान की ओर अग्रसर होंगे और उस ईंधन को ढूंढ निकाल कर उसका सही जगह इस्तेमाल करके एक प्रगतिशील जीवन का निर्माण करेंगे।

अनुराधा को एक रास्ता नजर आ रहा था। क्यों न मेडिटेशन क्लास शुरू किया जाये। अनुराधा एक गुरूजी को जानती भी है जो मेडिटेशन बहुत अच्छा करवाते है। उसने झट से गुरूजी के शिष्य को फ़ोन लगा लिया। वो शिष्य ही गुरूजी तक उसकी बात पंहुचा सकते थे। अनुराधा ने उनको अपनी परेशानी और उसका हल बताया। शिष्य ने भी उत्सुकता दिखाई कहा "यह तो नेक काम होगा। मैं गुरूजी तक आपका सन्देश अवश्य पहुंच दूंगा।" अनुराधा को थोड़ी राहत मिली। हॉस्टल के मालिक से भी अनुराधा ने बात कर ली वो भी तैयार हो गए। अब अनुराधा का मिशन "बच्चे" शुरू हो गया। अनुराधा को एक नई ऊर्जा का एह्त्साह होने लगा। दूसरे ही दिन शिष्य का जवाब आ गया की गुरूजी रविवार को कोटा आ जायेंगे और एक हफ्ता क्लास करवा कर देख लेंगे। आगे का उसके बाद तय किया जाएगा। और हाँ यह एक हफ्ता की क्लास निःशुल्क रहेगी, गुरूजी का कहना है। अनुराधा को तो यकीं ही नहीं हो रहा था की वह कुछ करने जा रही है। हॉस्टल में हर बच्चों को अलग अलग बोल दिया गया, बाकायदा सभी के कमरों में अलग अलग जाकर कहा गया की मेडिटेशन क्लास जरूर करे। एक तो मुफ्त में है और समय का ख्याल रखते हुए सिर्फ आधा घंटे के लिए ही रखी गई है। तो कृपा कर कोई न छोड़े। बच्चों को यह भी कह दिया गया की अगर बाहर के उनके कोई दोस्त भी आना चाहे तो आ सकते है। सबके साथ और सबके लिए

और सबसे जरुरी है यह क्लास। ये हफ्ता कितना लम्बा बीता, अनुराधा को तो इंतज़ार ही नहीं हो रहा था।

आखिर वह दिन आ ही गया जिसका इंतज़ार अनुराधा को बेसब्री से था। यकीं नहीं हो रहा इतनी ज्यादा संख्या में बच्चे जुटे, इतनों की तो कल्पना ही नहीं की गई थी। मगर कोई न दो शिफ्ट में क्लास रख लेंगे। अनुराधा ने यही सोचा और वह संभव भी हो गया। गुरूजी ने भी बच्चों को मेडिटेशन के फायदे बताये और इतनी अच्छी तरह मेडिटेशन करवाया की बच्चे एक ही क्लास में ऊर्जा से भरने लगे। गुरूजी ने उन्हें अपने दिलो दिमाग से सभी नकारात्मकता को हटाने और सकारात्मकता को भरने का पाठ भी पढ़ाया। एक नई राह दिखाई जिसपर आगे बढ़ने से उन्हें चमकता हुआ सूरज दिखाई देगा जो उनका मार्ग हमेशा प्रसस्त करेगा। वह राह है आत्मविश्वास कि, हिम्मत कि, हौसलों कि। उस सूर्य की चमक हमेशा उसकी राह को ऊर्जा और रोशनी से भरा रखेगा। बस जरुरत है खुद को हमेशा खुश रखने की और उन मौको की तलाश करने की जो तुम्हें हमेशा आगे बढ़ाये। वाकई में गुरूजी की शिक्षा का अद्भुत ही असर दिखने लगा। बच्चों के मुरझाये चेहरे पर एक अलग ही चमक दिखने लगी। अनुराधा ने आज राहत की सांस ली। बच्चों के लिए थोड़ा ही सही मगर वह कुछ कर पाई। "नहीं से थोड़ा ही भला।"

आज अनुराधा का चेहरा बहुत खिल रहा है। क्यों न खिले दिव्यांशी अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान जो दे रही है। क्लास में अच्छी जगह बना ली है। महीने के आखिरी में जो परीक्षाएं होती है उनमें अच्छा स्कोर कर रही है। शिक्षक भी उसे पहचानने लगे हैं। अब संतोष मिलता है, थोड़ा हल्का महसूस होता है की दिव्यांशी सफलता जरूर हासिल कर लेगी। वैसे भी उम्मीद पर तो दुनिया कायम है। और जब उम्मीद लगानी ही है तो अच्छे की ही न लगाएंगे। इतना तो हर इंसान को मालूम होना चाहिए की उसे दो बात का हमेशा ख्याल रखना चाहिए की किसी भी काम का हमेशा अच्छे होने की ही आशा करनी चाहिए ताकि हमारा सबकॉन्शस दिमाग उसे अच्छा करने की कोशिश करे और दूसरी बात यह की खुद को हमेशा दृढ और सामर्थ्यवान ही समझना चाहिए। खुद को उत्तम ही आंकना चाहिए, जब हम ही स्वयं को कम आंकेंगे तो भला दूसरा क्यों हमें ज्यादा समझेगा। वह तो अपनेआप ही हमें छोटा और गलत समझने लगेगा। इसलिए खुद की इज्ज़त हमेशा करनी चाहिए। आत्मसम्मान सबसे बड़ी पूंजी होती है जिसे हमें हमेशा संभाल कर रखना चाहिए।

दिव्यांशी कल अपनी क्लास की बातें बता रही थी की कैसे सर हमेशा मजाक करते है और इतनी अच्छी तरह समझाते है की मजा आ जाता है। "सर मजाक करते हैं तो हमलोग भी मज़ाक करने लगते है। कल सर बोले की तुमलोग ये होमवर्क करके आना तो सबने एक साथ आवाज लगाई सर इतना कैसे होगा? सर कुछ भी सुनने को ही तैयार नहीं थे और बस

इतना ही कह रहे थे की हो जाएगा करके आना। तब एक लड़की ने कहा की सर जैसे सीरियल है न की "सास भी कभी बहु थी" उसी तरह अब एक सीरियल और बनाएंगे की "शिक्षक भी कभी विद्यार्थी थे।" उसका तो इतना कहना था और सभी का ज़ोर से हसना था। फिर सर ने कहा की सीरियल बाद में बना लेना पहले होमवर्क बना लो। लो ये तो सोने पे सुहागा हो गया। अब तो सभी खिल खिला कर हंस पड़े।

माँ एक और बात आज सर अपने भाई के बारे में भी बता रहे थे। उनके भाई एक नंबर के आलसी हैं। अभी छोटे ही हैं यही कोई १७ या १८ साल के होंगे। कहते हैं की रोज़ देर रात तक जागना और सुबह दिन चढ़ने तक बिस्तर में दुबके रहना ही उनकी फितरत है। और कोई कुछ भी कहेगा तो क्या कहते है उनके भाई की - कभी कभी तो मुझे लगता है की इसका कारण मेरा आलसी होना हो सकता है परन्तु कभी लगता है कि निंद्रा देवी की नियत ही कुछ ठीक नहीं रहती। मुझसे निंद्रा देवी को एक अलग ही प्रेम है तभी तो मुझे छोड़ कर वो जाना ही नहीं चाहती। सारा काम निबटा कर देर रात के बाद तो मेरी बाहों में आती है और प्रातः जब तक भास्करजी सर चढ़ कर आग बबूला न होने लगे तब तक छोड़ने का नाम ही नहीं लेती। मैं एक नादान, भोला भाला, सीधा साधा इंसान क्या कर सकता हूँ निंद्रा देवी के प्यार के आगे मैं विफल हो जाता हूँ। मगर ये बैरी जमाना हमेशा से ही प्रेम का दुश्मन रहा है। हमारा प्रेम भी हमारे बाबूजी से देखा नहीं जाता, रोज वही गुस्सा, वही शिकायत, वही मुझे पैदा करने का अफसोस। मैंने उन्हें समझाने की कितनी बार कोशिश कि की निंद्रा देवी की ही मर्जी होती है की वो कितनी देर किसके साथ वक़्त बिताएगी, यह वो ही तय करती है।

अब आपको ही ले लीजिए आप तो जल्दी सोना चाहते है मगर आपको नींद कहाँ आती है आपको तो दवाई का सहारा लेना पड़ता है ठीक वैसे जैसे रोटी का टुकड़ा फंसा कर चूहे को पिंजरे में पकड़ने की कोशिश करते है। सुबह चाह कर भी आप देर तक सो नहीं सकते क्यों की निंद्रा जी आपके साथ इससे ज्यादा समय नहीं बिताना चाहती उनकी मर्जी के सामने आपकी कहाँ चलती है। तो भला आप ही बताइए की मैं कैसे अपराधी हुआ। पिताजी भी मेरे तर्क के आगे हार मान लेते है। माँ का सही है कि जब तक पिताजी का पारा हाई रहता वह अपना पारा उससे ज्यादा हाई रखती है ताकि पिताजी थोड़ा नरम पड़ जाए और मैं उनकी क्लास में मुर्गा बनने से बच जाऊं। "वाह माँ तुस्सी ग्रेट हो।" माँ के डॉयलोग्स मुझे कंठस्त हो चुके है, माँ भले एक आधा भूल जाए मगर मैं नहीं भूल सकता। कैसे कहती है? हाँ याद आया, "निकम्मा, नाकारा, आलसी, न जाने किसपर गया है,सारा जग काम पे लग गया मगर इसे तो मानो पुरखों से कहीं की रियासत मिली है जो साहबजादे को काम करने कि जरुरत ही नहीं पड़ती, अरे बाबा कभी तो किसी कि सुन लिया कर वगैरह वगैरह।" पिताजी

को भी थोड़ा सुकून मिल जाता कि मुझसे सिर्फ वो ही परेशान नहीं है और भी है जो उनकी इस लड़ाई में उनके साथ है।

एक बात तो है कि माँ, बाप-बेटे के बीच में एक ऐसी कड़ी होती है जो उनके रिश्ते की डोर को अपनी ममता के सहारे बाँध कर रखती है। ठीक उस फूलों कि माला के धागे कि तरह। ये है उसके बोल, सर बता रहे थे। साथ ही सर ने ये भी कहा की मैं उसे रोज यही समझाता हूँ की भाई संभल जा नहीं तो उम्र बीत गई तो पछतावा ही साथ रह जाएगा। तब न ही पिताजी समझाने आएंगे, न माँ बचाने और न ही भाई मदद करने। जीवन तो बीतेगा ही कैसे यह तू तय कर ले की आखिरी समय में क्या करना चाहता है अफ़सोस या संतोष। माँ क्या तुम्हें मालूम है की सर हमें यह कहानी क्यों सुनाये? ताकि हम भी चेत जाए।

हमारी कक्षा में बहुत से बच्चे हैं जो पढ़ाई के अलावा सबकुछ करते हैं और उनके भविष्य की चिंता हमारे सर करते हैं। वो बच्चों को पढ़ाई में लगाने के लिए हर मुमकिन कोशिश करते है। कभी कहानी कभी किस्से कभी डाँट तो कभी स्नेह से कुछ न कुछ करके वो अपने विद्यार्थियों को अपने पैरों पर खड़ा होते देखना चाहते हैं और साथ में ये भी समझाते रहते हैं की अपने घरवालों के पैसों को बर्बाद न करे और उनकी उम्मीदों पर खड़ा उतरने का प्रयास करे। एक मोटिवेशनल कहानी थी, है न माँ। पता है माँ सर ने एक कविता भी सुनाई, मैं आपको सुनाती हूँ -

जिंदगी मिली थी मुझे एक सखी बन कर
अपनाया था उसे मैंने एक पहेली समझ कर
उलझा रहा गुत्थियों में इस कदर
न समझ सका इसके रहस्य ताह उम्र
अबोध बना रहा बचपन कि आड़ लेकर

सावन के झूले सा झूमता रहा जवानी का आँगन
अक़्ल ठिकाने आई बुढ़ापे की खाट पर
जब बीमारी का साम्राज्य छाया, जीवन प्रांगण
हर कदम पर समझाती चली
सखी का हर फ़र्ज़ वह निभाती चली
मैं रह गया मस्तमौला अलबेला
डूबा रहा चाशनी में रसगुल्ले कि तरह
ज्ञात न रहा कि, खटास एक दिन उसमें भी आती है
मक्खियों कि भिन-भिनाहट उसी भी सताती है

देखो गलतियां कैसे पग - पग पर सामने आती है
देखो गलतियां कैसे पग - पग पर सामने आती है

काश जोहरी कि नज़र पा जाता
जीवनरूपी अनमोल रत्न को परख पाता
दोस्ती के रिश्तों को बखूबी निभा पाता

आज मृत सैया पर बैठा
न पछ्ता रहा होता, न पछ्ता रहा होता

देखा माँ कितनी सही बात कही है न सर ने। जीवन का सार एक कविता में आ गया।"

"वाह रे दिव्यांशी तेरे सर तो वाकई में कोई जादूगर है देख कितना अच्छा पढ़ाते है और साथ में बच्चों को मोटिवेटेड भी रखते है। कितना अच्छा रहे अगर सभी सर ऐसा सोचे और करे तो। बच्चों का कितना भला हो जाए, बच्चों का ही क्यों मैं तो कहूँगी उनके घरवालों का भी भला हो जाए।"

"हाँ माँ तुम बिलकुल सही कह रही हो, अगर सभी सर इतनी शिद्दत से खेल खेल में और हमेशा जोश दिलाते हुए हिम्मत बंधाते हुए पढ़ाएं तो मजा ही आ जाये। अब देखो न जितना इंतज़ार इन सर की क्लास का होता है उतना और किसी का होता ही नहीं है, और इन्ही सर के विषय में ही मुझे पूरे अंक मिले। मुझे ही क्यों लगभग लगभग सभी विद्यार्थियों इस विषय में अच्छा किया।"

लोहा गरम देखते हुए अनुराधा ने अभी वार करना सही समझा ताकि लोहे को सही आकार दिया जा सके। इन सबके बीच अनुराधा ने दिव्यांशी को समझाया की "कभी भी तुम अपने शिक्षक का अपमान मत करना। माँ बाप तो जन्म देते है मगर उस जीवन को गुरु ही है जो सवांरते है और सुयोग्य बनाते है।

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान
शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान

कबीर जी ने कितनी सही बात कही है की अगर शीश देकर भी गुरु मिले तो वो भी सस्ता ही होगा। सोचो गुरु की क्या अहमियत्ता है।

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागूं पाए
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताये।

गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर रखा जाता है तो भला कोई भी उनका अपमान कैसे कर सकता हैं?"

"हाँ माँ आप बिलकुल सही कह रही है, मगर पता नहीं क्यों लोग करते है। मेरे क्लास में ही ले लो न लड़कियों के मन में जो आता है बोल देती है।"

"नहीं बेटा तुम तो कभी मत करना। हमेशा उनका आदर करना। आगे जाकर भी उनके संपर्क में रहना और जब तुम अपने पैरों पर खड़ी हो जाओगी और वो बूढ़े तब तुमसे जो बन पड़े उनके लिए करना। उनके आशीर्वाद से वंचित मत होना।"

सब धरती काजग करूँ, लेखनी सब वनराज
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाए।

"हाँ माँ मैं अवश्य कोशिश करुँगी। पर आज आप ये सब मुझे क्यों बता रही हो। मेरे से कोई गलती हो गई क्या वैसे मैं इन सब बातों का पूरा ख्याल रखने की कोशिश करती हूँ की मुझसे कभी भी बड़ों का अपमान न हो जाये। और आप कह रही है तो मैं और ध्यान रखूंगी।"

"न रानी तुम्हारी बात नहीं है कल मैं लिफ्ट में आ रही थी तब दो लड़कियों को बातें करते सुना तब मुझे बहुत तकलीफ हुई की किस तरह वो दोनों अपने शिक्षक का मजाक उड़ा रही थी। गलत बातें, गलत विचार, गलत तरीका कभी भी तुम्हें सफलता नहीं दे सकता। हाँ क्षणिक ख़ुशी भले प्राप्त हो जायेगी मगर वो कोई काम की नहीं होती।"

"अच्छा बाबा मेरी माते, अब बस करो मुझे तो लगता है की आप जाने से पहले सब को सुधार कर जाने का निर्णय कर चुकी है।"

"हाँ सही पकड़ी, जैसे मेरे बस का है। चल जा अपना काम कर।" माँ बेटी के इस तरह विचारों का आदान प्रदान या तो सोने की वक्त होता है या फिर खाने की टेबल पर वो भी कम समय में ज्यादा मुद्दों को ख़तम किया जाता है क्योंकि दिव्यांशी का एक एक मिनट कीमती था। बातें भी सिर्फ उन्ही मुद्दों पर होती जो दिव्यांशी की भलाई के लिए हो बाकी किसी भी मुद्दों पर बात करके व्यर्थ ही उसे परेशान करने से कोई लाभ नहीं था।

अध्याय : १०
चकाचौंध

शीतल मन और निर्मल विचार
सुखमय जीवन के दो हि आधार

“दिव्यांशी तुझे याद है वो आंटी जो हमलोगों को रोज क्लास जाती वक्त मिलती है।”

“कौन माँ वही आंटी जो दूर से ही आपको देखते ही आवाज लगाती है की ‘हो गई आपकी गुड़िया तैयार’।”

“हाँ वही,” दोनों खूब हसने लगी।

“हाँ मां वो आंटी थोड़ी फनी है भी उनका बोलने का तरीका ही कुछ ऐसा है की लोग हसे बिना नहीं रह पाएंगे।”

“हाँ बेटा वही आज जब मैं तुम्हें क्लास तक छोड़ कर आ रही थी तो उन्होंने पीछे से आकर मेरा हाथ पकड़ लिया और कहने लगी आज हाथ लगी है आप, अब नहीं जाने दूंगी।”

“क्या बोल रही हो माँ,” हँसते हँसते दोनों का बुरा हाल था। “फिर क्या हुआ माँ तुमने तो आज चटाखेदार कहानी तैयार कर रखी है।”

“अरे नहीं रे चटाखेदार क्या मैं तो बुरी फंसी। मैं पहले तो चौंक गई फिर उन्हें देखकर मेरी हंसी नहीं रुके। मैंने पूछा बात क्या है तो कहती है अरे बात वात छोड़ो आप तो इतना बताओ की कौन सी चक्की का आटा खाती है। अकस्मात् ही मेरे मुँह से निकल गया, ‘हैं! क्या मतलब? अरे नादान न बनिए अनुराधा जी। आपकी फुर्ती और आपकी तपस्या के चर्चे शायद पूरे कोटे में ही प्रसिद्ध हो चुके होंगे। हमने तो दिन रात इस हॉस्टल में यही सुना है, की आप कभी भी इधर उधर नहीं भटकती। अपने से ही मतलब रखती है। एक हम है जो सब तरफ मंडराते ही रहते है। स्थिर होकर एक कमरे में बैठने से तो हमारी नानी मर जाती है। कुछ साधना वाधना करते है तो जरा हमें भी बताइये। थोड़ा चरणामृत हमें भी दे दीजिये तो हमारा भी जीवन सफल हो जाए।’”

“वाह माँ आप तो जानी पहचानी हस्ती हो गए है।”

“क्या तुम भी न बेटा, यहां तो ‘खाया पिया कुछ नहीं और गिलास तोड़ा बारे आना’ वाला हाल हो गया।”

“तो आपने क्या कहा।”

“क्या कहती मुस्कुराकर उनसे किसी तरह पीछा छुड़ाया।”

“क्या माँ आप भी न, आपका कोई इंटरव्यू लेने आया और आपने उसे टाल दिया। इट्स नॉट फेयर।”

“हाँ रे आई बड़ी, तेरे पिताजी को मालूम चल जाता न की मैं सड़क पर खड़ी इंटरव्यू दे रही हूँ तो सोच जरा मेरा क्या होता।”

“माँ आप अकेली रोज आती है तो बोर नहीं होती हो क्या?”

“न रे, मैं कितना कुछ देख लेती हूँ अगर किसी के साथ बातों में उलझती रहती तो क्या ये सब देख पाती।”

“क्या सब माँ?”

“देख तेरी क्लास से लेकर हॉस्टल तक आने में एक जगह मिस्त्रियों का काम चल रहा है न उनके परिवारों को देखती हूँ कैसे अलपरवे बिंदास सड़क के किनारे ही प्लास्टिक और कुछ ईंटों से ही रहने लायक टेंट बना लिया है और वहीं पर खुले में ही बिस्तर लगा मच्छरदानी बाँध टेबल पंखा लगा मजे से सोते रहते है। न ही उन्हें कोई रोशनी तंग करती है न ही गाड़ियों का शोर परेशान करता है। न ही वो लोग, क्या कहेंगे लोग वाले रोग से ग्रसित है। वहीं एक बगल छोटू सा माटी का चूल्हा बना हुआ है जिसपर उनकी घरवाली खाना भी बनाने लगती है। लगता है महिलायें तड़के ही उठ जाती है।”

“हाँ तो माँ महिलाओं को लोटा पार्टी में तो अँधेरे ही जाना होता होगा न।”

“हाँ सही बोली। सोच हमें जितनी सुविधाएं प्राप्त है हम उतने ही परेशान रहते है। खास कर नींद की समस्या से।”

“हाँ माँ ठीक कह रही हो। उस राजकुमारी की कहानी तुमको याद है जो बचपन में दादी ने सुनाई थी।”

“कौन सी? वही जो राजकुमारी को मखमली गद्दे पर भी नींद नहीं आ रही थी तो महाराज रोज कुछ और सुविधाएं जुटाते मगर राजकुमारी को तब भी नींद नहीं आती थी। तब एक बार राजा ने ऐलान करवाया की इसके पीछे का कारण जो भी बताएगा उसे पांच सोने की मुद्राएं इनाम में दी जायेगी। तब कैसे अलग अलग लोगों ने अपनी अपनी धारणाये बताई और अलग अलग उपचार बताये। एक ने तो यहां तक कह दिया की राजकुमारी के बिस्तर पर बाल था जो उन्हें चुभ रहा था जिससे वो सोने नहीं पा रही है मगर एक दिन एक राजकुमार आया और उन्होंने राजकुमारी को दिन भर उद्यान में भ्रमण करने, महल का चक्कर लगाने, राज काज में राजा की मदद करने रानी को हाथ बटाने में दिन बिताने की सलाह दी और उस सलाह को मानने से राजकुमारी को जो नींद आई। फिर क्या था उस राजकुमार से रानी की शादी कर दी गई। थकने से कितनी मीठी नींद आती है ये तो इन मजदूरों को देख कर ही समझ में आता है।”

“हाँ बेटा बिलकुल सही बात है। वहाँ से आगे आती हूँ तो एक माँ को देखती हूँ कैसे वो अपनी बेटी का भारी भरकम बैग कंधे पर उठा कर चलती है और उनकी बेटी मस्त एकदम

सीना तान कर चलती है।”

“सही में माँ।”

“हाँ बेटा। कितनी गन्दी बात है माँ। अपनी मम्मी से बैग क्यों उठवाती है? क्या वो इतनी बड़ी हो गई है, कितनी गलत बात है।”

“हाँ बेटा गलत तो है पर आज कल के बच्चों को पता नहीं क्या होते जा रहा है, उन्हें तो गलत सही की पहचान ही नहीं रह गई है।”

“मम्म माँ ऐसा क्यों कह रही हो आप। मैं भी तो आज कल की ही बच्ची हूँ क्या मैं ऐसा करती हूँ?”

“अरे तू तो मेरी लाडो है, तू तो सबसे समझदार है। और वैसे एक आधी ही गन्दी मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है, पूरा तालाब थोड़े ही गन्दा रहता है।”

“वही मम्मी। मेरी दोस्त भी है न वो भी बड़ों का बहुत आदर करती है।”

“हाँ बेटा, बोली तो कोई एक दो ही गलतियां करते है, और मेरे ख्याल से उसमें भी उनकी गलती नहीं होती बड़ो को उन्हें समझाना चाहिए तब न वो समझेंगे।”

“वही तो माँ।”

“और पता है एक अंकल है वो इतना स्लो मोशन में दौड़ते है न, की क्या बताऊँ। पसीना पसीना हुए रहते है और एकदम धीरे धीरे दौड़ते रहते है। हाँ, उनकी टाइमिंग मानना पड़ेगा रोज एक ही जगह पर एक ही समय पर वो मुझे दिखते है। संजोग हो सकता है मगर फिर भी ताज्जुब होता है।”

“हाँ, ताज्जुब तो है माँ।”

“अरे क्या बात है आज इतनी इत्मीनान से कैसे बैठी है। चलों आज का ये भाग यहीं ख़तम होता है बाकी का अगली छुट्टी में।”

“हाँ माँ बहुत देर हो गई अब सोते है।”

सुबह फिर वही भागम भाग, वही रास्ता और वही मुसाफिर। गाड़ी अपनी रफ़्तार से दौड़ रही थी। आज जब दिव्यांशी क्लास से निकली तो मौसम मजेदार था न ही धूप और न ही बारिश। ठंडी ठंडी हवाएँ बदन को छूकर इधर से उधर जाने की कोशिश में गुदगुदी सी किये जा रही थी। तब दिव्यांशी ने पैदल ही हॉस्टल आना मुनासिब समझा। ऑटो वाले भैया का तो इंतज़ार थोड़ा महंगा पड़ता है और आज वैसे भी एक ही है दूसरे वाले भैया तो आज छुट्टी पर हैं। तो बेकार समय खोटी करना है। दिव्यांशी अपनी धुन में चली जा रही थी तभी रास्ते

में एक लड़के ने उसकी तस्वीर खींच ली, ऐसा उसे महसूस हुआ। हो सकता है ये उसका वहम हो। पर अब उसकी उत्तेजना देखने लायक थी। मुझसे बात करती हुई ही आ रही थी तो बोलने लगी अभी बताती हूँ उसे इतनी मुश्किल से मैंने उसे रोका। वह तो ट्रैफिक पुलिस से शिकायत करने जाने लगी मैंने मना किया तो मेरे ऊपर चिल्लाने लगी। हॉस्टल आने पर मैंने उसे इतनी मुश्किल से बस में किया ये मैं ही समझ सकती हूँ। लड़कों को भी क्या मिलता है न ये सब ओछी हरकतें करके भगवान् जाने। नीचे गई तो उर्मि मिल गई। अब उर्मि कौन है मैंने आपको नहीं बताया क्या? दिव्यांशी की सहेली सुहानी की मम्मी। वो भी कभी कभी नीचे मिल जाती है। वह सीधी भी है और थोड़ी मुंहफट भी। शर्म लिहाज, औपचारिकताओं से उसका दूर दूर तक कोई वास्ता नहीं है। आजकल की औरतों के जैसे उसे सजना सवरना भी नहीं आता और अपनी इस खूबी का उसको जरा भी घमंड नहीं है। मस्त बिंदास रहती है। हम दोनों सोफे पर थोड़ी देर बैठ गए। उसने मुझसे पूछा की "क्या आपको राखी की बात पता है?"

मैंने कंधे हिलाते हुए कहा "कौन सी बात मैंने तो कुछ नहीं सुना।"

"अरे आप कहाँ से सुनेंगी? सारा दिन तो कमरे से निकलती नहीं हो।" उसने झट से मेरे पे व्यंग्य कस दिया। वो भले मेरे से उम्र में छोटी थी मगर मुझे ताने मारने का एक भी मौका नहीं छोड़ती थी। मैं भी उसकी बातों का कभी भी बुरा नहीं मानती थी। अरे नासमझ है तभी न ऐसी बचकाना बातें करती है। हमेशा तो आत्मश्लाघा में ही उसे संतुष्टि मिलती है तो मैं क्यों उससे सर खपाऊँ। "अरे अनुराधा जी राखी और रिद्धि वही लड़कियां है जो हमारे कमरे के बाजू वाले कमरे में रहती है। राखी तो गरीब घर से है और रिद्धि ठहरी रईसों के खानदान से। दुर्भाग्य से राखी की रिद्धि से दोस्ती हो गई है।"

"दुर्भाग्य से क्यों?"

"दुर्भाग्य ही कहा जायेगा न। दोस्ती रिस्तेदारी सब बराबर वालों में ही ठीक जमती है नहीं तो दुखदाई बनते देर नहीं लगती।"

"कहना क्या चाहती हो उर्मि सही सही बताओ नहीं तो मैं चली।" झुंझलाती हुई अनुराधा उर्मि पर शुरू हो गई। वैसे भी अनुराधा किसी से भी बात करती है तो हड़बड़ी में ही रहती है या फिर उकताई हुई सी ही बात करती है। उसे इधर उधर की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं होती मगर उसका संजोग ही है की उसे जो भी मिलता है किसी मसालेदार खबर के साथ ही मिलता है। और उसकी खबर सुनना एक तरह से अनुराधा की मज़बूरी होती है। क्या करे तो अगर इतना भी नहीं सुनेगी तो सब उससे मुँह ही मोड़ लेंगी, उनके साथ तो अनुराधा कहीं नहीं जाती अब इतनी बातें भी नहीं करेगी तो यहां रहेगी कैसे।

अनुराधा की झुंझलाहट देख कर उर्मि ने उसे समझाया, “अरे आप तो बुरा मान गई। सुनिए राखी है गरीब तो उसकी जरूरते भी सिमित ही होंगी और जितनी भी होंगी जरुरी नहीं की उतनी भी पूरी हो पाए। वह शुरू से इन सबकी आदि होगी और यहां उसे मिल गई रिद्धि। जिसकी हर ख्वाइश चुटकियों में पूरी की जाती है अब चाहे वो जायज हो या नाजायज। ये सब देखने के लिए अब राखी दिन रात उसके साथ रहती है, मतलब संयोगवश। क्योंकि दोनों ने एक ही कमरे में रहने का इंतजाम कर लिया है। राखी को भी मजा आ रहा था उसे भी तो नए नए उपहार, स्वादिष्ट पकवान, सुंदर सुंदर कपड़े जो मिल रहे थे। मगर अमीर घर की लाड़ली बेटी को जरा भी अंदाजा नहीं था की उसके दिए गए उपहार राखी के लिए अभिशाप बन सकते हैं। अब धीरे धीरे राखी को इन सब महंगी चीजों की आदत होने लगी। इंसान की भी क्या फितरत है न कोई भी आदत वह इतनी जल्दी पकड़ लेता है की क्या कहें। अब उसे अपने जीवन में और अपने घरवालों में कमियाँ ही कमियाँ नजर आने लगी। जिसका दुष्परिणाम जल्द ही सामने आ गया। राखी का चिड़चिड़ा स्वभाव और पढ़ाई में लापरवाही उसके घरवालों को दुखी करने लगा। परिवार वालों का तो जैसे धर्म ही हो गया है की वो बस परेशान ही रहे। तभी तो देखिये न वो पुलिस वाला मामला तो सुलझा ही कहाँ अभी तक।”

“क्या बात कर रही हैं आप?”

“हाँ एक दो दिन से पुलिस आती है कुछ लोगों से पूछ ताछ करती है, मगर कोई सुराग हाथ नहीं लगता है।”

“अरे हद हो गई।”

“हाँ तो इस महीने कितना कुछ घटा भी तो है। एक लड़की की और खबर आई है बेचारी कल दिनदहाड़े सड़क पर बेहोश हो गई। भीड़ इकट्ठा हो गई। जाँच में पता चला की उसके खून में कुछ मिलावट थी।”

उर्मि का इस तरह से एक के बाद एक पहेली गढ़ते देख अनुराधा चिड़चिड़ी सी एक सांस ही बोलने लगी “क्या हो रहा है? कैसे हमारे देश का हमारे समाज का, हमारे परिवार का भविष्य धुंधला हो रहा है। धर्म की, धन की, राजनीती की, सत्ता की लड़ाई क्या कम थी जो अब बच्चों की सुरक्षा की या यूँ कहें हमारे देश के भविष्य की लड़ाई छिड़ चुकी है।”

तब उर्मि ने उसे शांत करते हुए उससे कहा की “सही कहा आपने मगर किसके साथ यह लड़ाई है समझना मुश्किल है। परिवार वाले खुद बच्चों को धकेल रहे हैं और बच्चे इस दलदल में धंस रहे हैं।”

तब अनुराधा ने भी कहा “करें भी तो क्या करें। अगर बच्चा पढ़ना चाहेगा तो कोई बला उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती और अगर बच्चा जबरदस्ती पढ़ाया जायेगा तो हर आफत उसको जकड़ने के फिराक में रहेगी।”

“हाँ तो अनुराधा, पुलिस ने बताया तो एक बच्चे ने गुस्से में आकर खूब पी ली थी, और बालकनी में खड़े होकर दुनिया को, अपने परिवार वालों को, इस सिस्टम को बुरा भला कह रहा था तभी अचानक से ही वह बेहोश हो गया अस्पताल जाने पर पता चला कि उसकी सासों कि गति थम चुकी है। वो सबको अलविदा कह गया।”

“नहीं उर्मि इतनी दुखद दास्ताँ तुम मुझे मत सुनाया कर। मेरे लिए असहनीय होती है।”

“अच्छा उन सहेलियों का तो सुनिए, रही सही कसर तब पूरी हो गई जब दोनों सहेलियों की तबियत एक साथ खराब हो गई और रिद्धि के तो माँ बाप दोनों आ गए और वो भी उत्तम व्यवस्था के साथ। अच्छे डॉक्टर, अच्छे फल दवाइयां और भी न जाने क्या क्या। और इधर राखी ने जब घर पर सूचना दी तो दो चार जली कटी के साथ समय पर दवाई खाने को कहकर अलविदा बस इतना ही।”

“तो क्या करे गरीब माँ बाप जैसे तैसे पढ़ाई के लिए तो जोगार कर रहे है अब बार बार आने जाने का पैसा कहाँ से लाये। उनके लिए तो पहाड़ तोड़ने के समान हो जाता है।”

“अब क्या था, रिद्धि की माँ ने राखी का भी खूब ख्याल रखा। अच्छे इलाज से दोनों सहेलियां जल्दी ठीक हो गई। तन तो ठीक हो गया मगर राखी का मन अब भी ख़राब था। अपने में उसे हीनभावना महसूस होने लगी। बताओ बच्चों का क्या करे? कैसे उन्हें परिस्थिति से अवगत कराएं? क्या माँ बाप उनके दुश्मन हो सकते हैं? मगर ये बात उन्हें समझ में क्यों नहीं आती?”

“उर्मि इसमें बच्चों को क्या कहे आजकल की ये चकाचौंध वाली दुनिया है न ये सबकी शत्रु बन रही है। महंगे महंगे शौक और मंहगा महंगा रहन सहन। अब जिनके पास धन है वो तो सफल जीवन जी रहे है मगर जो ये सब जोगार नहीं कर पाते है उनका मरण हो रहा है। पहले क्या था अपार धन है तो अच्छा पहनावा और अच्छा खाना खा कर लोग मस्त हो लेते थे मगर आज तो धनवान अपने बच्चों को कम उम्र से ही उस धन का अपव्यय करने के लिए छुट्टे छोड़ देते है। मैं ये नहीं कहती की बच्चों को सुख सुविधाएँ मुहैया न कराई जाये। मेरा बस इतना कहना है की समय पर सब मिले तो चंगा होता है। बच्चों को पढ़ने के लिए भेजा है, कुछ बनने के लिए भेजा है तो कुछ बनने तो दो, जीवन में कुछ करने तो दो, तब देना कितना धन और कितनी सुख सुविधाएं देनी है। मगर जब वो गीली माटी है तो सही ढांचे में ढलने तो दो। क्यों अपने ही हाथों से मासूम के आकार में विकार उत्पन्न करते हो

भाई। कीमती फ़ोन, लैपटॉप, बहुमूल्य गेजेट्स महंगी महंगी गाड़ियां और हाई फाई रहन सहन साथ वाले का दिमाग ख़राब करने के लिए काफी होता है। एक तो पढ़ाई का खर्चा ऊपर से देखा देखी अच्छे कपड़े कीमती सामान का बंदोबस्त हर कोई नहीं न कर पाता है। मगर आज किसी को समझ में नहीं आ रहा की कम उम्र में ज्यादा धन हाथ लगने से बच्चों के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। सही समय पर जब काम होता है तो ही वो फलदायक होता है नहीं तो नुकसानदायक होते देर नहीं लगती। पहले के राजा महाराजा के बच्चे भी जब गुरुकुल जाते थे तब वो भी एक सामान्य बच्चों की भाँति ही रहते, न की उन्हें वहाँ पर अलग व्यवस्था प्राप्त होती। क्या वो माँ बाप उनके सौतेले हुआ करते थे? क्या उन्हें अपने बच्चों से प्यार नहीं था? ऐसा नहीं था, अपने बच्चों के उज्वल भविष्य के लिए उन्हें धरती से जुड़े रखना आवश्यक है इसीलिए वो ऐसा करते और इतिहास गवाह है की वो बच्चे बड़े होकर एक समझदार इंसान, एक सफल योद्धा, एक महापुरुष, एक ज्ञानी महा ज्ञानी ही बने और आगे जाकर अपने कुल का नाम रोशन किया। सही समय पर सही चीज का इस्तमाल सही राह पर लेकर जाता है और सही परिणाम निकल कर आता है।” “हाँ अनुराधा जी आप बिलकुल सही फरमा रही है किन्तु यह सही की राह सही मायने में आज सबकी नजरों से सही में ओझल हो चुकी है। अब न जाने कितनी ही राखियों और कितने ही बालकों का दिमाग ख़राब हो चुका है और न जाने कितनो का खराब होने वाला है। कितना अच्छा रहे की आज भी पहले जैसे गुरुकुल की ही प्रथा का चलन शुरू हो जाए तो सारी समस्या का समाधान पलक छपकते ही हो जाए।”

“हाँ सही कह रही हो यार काश ऐसा हो जाए।”

“क्या बात है दिव्यांशी आज तेरा मूड क्यों ख़राब है?”

“क्या करूँ मम्मा ऑटो वाले भैया परेशान करते है। अधिकतर तो एक ही आते है और वो भी बहाना मारते रहेंगे। जब भी फ़ोन करो पहले तो पतली गली पकड़ेंगे की मैं दूसरी गली में जा रहा हूँ समय लगेगा, और जब देखेंगे की उनकी दाल यहाँ नहीं गलने वाली तब आएंगे मगर देर करके। भूख से और धूप से दिमाग का ऐसे ही बैंड बजा रहता है ऊपर से इनका अलग ही तानपुरा चलते रहता है।”

“अरे बेटा क्यों इतना गुस्सा करती है गुस्से से तेरा ही नुकसान होगा उनका तो ये रोज का काम है उनको तो आदत है और तू बेकार में अपना खून सुखाती है जाने दे न थोड़ा बर्दास्त किया कर।”

“हाँ माँ हमेशा मैं ही बर्दास्त करूँ उस दिन उस लड़के ने मेरी फोटो खीचीं तो उसमें भी मैं ही बर्दास्त करूँ और आज भी मैं ही।”

“अरे पगली क्यों इतना सोचती है। आ पहले खाना खा तो, मुझे मालूम है भूख से तेरा दिमाग ख़राब हो रहा है।”

“ये अच्छा है। देखो तो माँ रमन भैया भी तो रसोई में अपना काम करते है, इनको तो कभी हमें ज्यादा नहीं बोलना पड़ता। जब भी उन्हें हम अपनी तकलीफ़ बताते है तो वो सुनते है और उपाय भी करते है मगर ये ऑटो वाले भैया।”

“जाने दे न बेटा, अब ख़तम कर।”

दिव्यांशी का गुस्सा तब शांत हुआ जब ऋषभ को एक बार फिर से लड़कियां छेड़ना शुरू कर दी। ऋषभ भी मेस में ही ड्यूटी करता है, बड़ा ही शर्मीला लड़का है और लड़कियां उसी का फायदा उठाती है। बेचारा ऋषभ आज फिर फंस गया और उसे देख दिव्यांशी का भी गुस्सा गायब हो गया।

“माँ चेतना बाईजी दिन रात यहीं रहती है उनका कोई घर नहीं है क्या?”

“हाँ है न घर भी है परिवार भी है।” “तब फिर वो रात में भी यहीं क्यों रहती है?”

“अरे एक दिन वो बता रही थी की बेटे की शादी में कर्जा ज्यादा हो गया था उसी को चुकाने के लिए ज्यादा काम कर रही है ताकि कर्जा जल्दी चुकता हो जाए।”

“बाप रे इनको भी कितनी आफत है। पहले तो इनकी पति से नहीं बनती थी अब कर्जा माथे पर।”

“हाँ रानी ऐसे ही है करोड़ों लोग और करोड़ों उनकी दास्ताँ।”

“माँ पता है मेरे क्लास में एक लड़की है अंजलि उसे किसी से प्रेम हो गया है।”

“क्या बक रही हो दिव्यांशी।”

“हाँ माँ सही में पूरी क्लास को पता है। एक मधूप इस मुकुल के इर्द गिर्द हमेशा चक्कर लगाते रहता है। और दोनों के प्रेम के चर्चे हम सबकी पढ़ाई में विघ्न डाल रहे हैं।”

“अरे ऐसा क्यों, कोई कुछ भी करे तुम्हें इससे कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए और न ही तुम्हें उससे कोई लेना देना होना चाहिए।”

“लेना देना नहीं है माँ मगर फिर भी कानों में जब वो सब बातें पड़ती है तो अपने आप मन भटकने लगता है।”

“नहीं दिव्यांशी मन को इतना कमजोर रखोगी तो कभी भी तुम स्थिर नहीं हो पाओगी। अरे हमारे अगल बगल हमेशा ही कुछ न कुछ घटित होते ही रहेगा तो क्या तुम यूँ ही अपना नुकसान करती रहोगी। तुमने कभी गौर किया है की एक बेल कभी भी अपने आजु बाजु नहीं

देखती की उसके बगल में कौन सा पेड़ है और उससे उसको क्या चाहिए वह बस एक पेड़ का सहारा पकड़ कर ऊपर बढ़ती चली जाती है। अगर वह सबसे मतलब रखेगी तो बता उसका जीवन आगे बढ़ेगा? नहीं न। तू भी समझ की तुझे अभी कुछ नहीं देखना या सुनना है।"

"माँ क्या करूँ बताओ न उस लड़की ने तो प्यार में सबकुछ गवाना मंजूर कर लिया है और उसके किस्से कहानी सुन सुन कर हमारा भी दिमाग उलझते जा रहा है।"

"वही तो बेटा तुझे समझा रही हूँ की ये अली टाइप के जो लड़के होते हैं न इन्हे न ही अपने कैरियर की फ़िक्र होती है न ही लड़की के। इनसे दूरी ही तुम्हे बचा सकती है। इन्हे प्यार व्यार कुछ नहीं होता बस समय बिताने का साधन मात्र ही होता है जिसे ये प्यार का नाम दे बैठते हैं। प्यार तो एक खूबसूरत एहसास होता है, एक हसीन ख़्वाब होता है, एक दूजे का साथ एक साहस होता है, जो जीवन को खुशहाल बनाता है न की ये झूठे चोचले जो केवल चिल्लाने से प्यार नहीं कहलाया जा सकता, यह जो कह रहे हैं न यह केवल एक विनाश का मार्ग होता है जिसपर चलकर हार ही मिलनी है। सब तरफ से हार। फिर तुम देख लेना अगर मेरी बात गलत साबित हुई तो तू जो बोलेगी मैं वो मानूंगी।"

"नहीं माँ तुम कभी गलत नहीं हो सकती। अरुंधति बता रही थी तो की उसकी दीदी को भी प्यार का बुखार चढ़ा था जो उसे ले डूबा। बेचारी का समस्त जीवन बोझिल हो गया। उस लड़के ने उसकी दीदी को प्यार के झूठे वादे किये, सुनहरे सपने दिखाए, जीवन में सब सुख देने की उसके मन में लालसा जगाई मगर जब उस लड़के का व्यवहार अरुंधति की बहन को रास नहीं आया तो उसने उसके साथ आगे बढ़ने से इंकार किया तो उसी लड़के ने जो उससे बेइंतहा प्यार करने का वादा कर रहा था उसी ने उसके मुँह पर तेज़ाब फेंकने की कोशिश की।"

"क्या बोल रही हो दिव्यांशी," अनुराधा घबराई हुई सी उसे पूछी।

"हाँ माँ, एक दिन भरे बाजार में उस लड़के ने उस पर तेज़ाब फेंक दी। वो तो उसकी बहन ने अपने चेहरे को बचा लिया मगर तेज़ाब उसके हाथों और गले पे गिर गई।"

"उफ्फ्फ ऐसी पाशविकता," डरी हुई अनुराधा धिक्कारने लगी।

इस मानव समाज को जिसमें ऐसे ऐसे पिशाच भरे है। ऐसी कुरूपता, ऐसी क्रूरता खुद को ये इंसान कहते है। दिव्यांशी ने माँ को हमारे समाज के एक और पहलु से अवगत कराया जहां आज भी लड़कियों को सिर्फ और सिर्फ भोग की वस्तु ही समझा जाता है। किस तरह एक हंसती खेलती बच्ची का जीवन नरक की प्रताड़ना झेलने को मजबूर हो गया। उस लड़के को जेल हो गई मगर अरुंधति की बहन सदमे में चली गई। उसके लिए इंसान की ऐसी कुरूपता

सहन करना आसान नहीं था। क्या इंसान का इतना ही वजूद है की वो इतनी जल्दी अपने अंदर के शैतान से हार जाता है। अब उसकी दीदी की पढ़ाई भी बंद हो गई और कम उम्र में जिल्लत और लानत से तंग आकर उसने अपनेआप को एक कोठरी में बंद कर लिया। बताओ क्या तो वो यहां डॉक्टर बनने आई थी और क्या आज उसे हर पल एक डॉक्टर की सख्त जरुरत रहती है। वही कहती हूँ मेरे बच्चे की माँ बाप की अवज्ञा करके तुम लोग क्या हासिल करना चाहते हो? जरा गौर करो तो जवाब तुम्हे अपनेआप मिल जायेगा।

अध्याय : ११
त्यौहार: उमंगें और उत्साह

"बुराई पर अच्छाई की जीत"

दिवाली की छुट्टियां शुरू होने वाली है, प्रायः सभी घर जाने को उत्सुक है। एक तरफ उत्साह है तो दूसरी तरफ चिंता और घबराहट। अब कौन बताये कि पुलिस ने कुछ पता लगाया भी कि नहीं। यूँ ही बस पॉकेट गरम कि और चलते बने। अगर उस गली का रहस्य सुलझ जाता तो दिवाली मनाने की ख़ुशी ही दुगुनी हो जाती। एक सुकून कि सांस आती की अब कोई बच्चा सूली नहीं चढ़ेगा। कभी कभी यही ख्याल आता है कि जो बच्चे पढ़ने के शौक़ीन हैं जो दिलों जान से मेहनत कर रहे हैं उनको भी तो ये लोग बाधा पहुंचाने की कोशिश करते ही होंगे। उन्हें भी तो सुरक्षा की कितनी जरुरत होती है। सब तरह के बच्चे है कोई खूब पढ़ना चाहता है तो कोई बस काम चलाने भर तो कोई जबरदस्ती पढ़ाया जा रहा है तो कोई किसी से भागने के लिए पढ़ रहा है, हर तरह के विद्यार्थी है मगर हर विद्यार्थी एक नासमझ, निर्मल मन का, भोला भाला बच्चा तो है ही और उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी हर किसी कि है चाहे वह उसके माँ बाप हो या शिक्षक या पुलिस या कोई और। तो सबको मिलकर कुछ करना होगा ही। अनुराधा के विचलित ह्रदय से आवाज आई मगर इस आवाज को अनसुना कर अभी तो घर जाने की धुन में उलझ गई। लम्बे समय के बाद घर जाने को जो मिलेगा, उत्साह अपनी चरम सीमा पर था। अब ये चार दिन सिर्फ और सिर्फ मस्ती और परिवार के लिए है। उधर बच्चों का उत्साह भी पर्वत की चोटी को छू रहा था। अब कोई भी पढ़ाई की बात नहीं करेगा नहीं तो उसके साथ जो होगा उसकी जिम्मेदारी कोई नहीं लेगा।

अभी अभी ये सब गंभीर फैसले बच्चों द्वारा मीटिंग में लिए ही जा रहे थे कि तभी एक लड़की ने पूछा कि “अरे यार तुमलोग कोई भी किताब लेकर नहीं जा रही हो क्या?” लो, गई भैंस पानी में। अगर वह इस मीटिंग में थोड़ा भी ध्यान दे रही होती तो वह नहीं होता जो उसके साथ अभी अभी हुआ। बेचारी पर एक साथ सब टूट पड़ी। भाई कोई इतना बड़ा अपराध भी तो कैसे कर सकता है। सब एक दूसरे को अलविदा कर और दिवाली की मिठाई के साथ ही दुबारा मिलने का वादा कर जाने लगी तब सर लोगों ने भी माहौल को और खुशनुमा बनाते हुए उनके लिए भी मिठाई लाने को कहकर त्यौहार की ढेर सारी बधाइयां देकर लड़कियों को विदा किया। कोई तो सिर्फ सोने के लिए घर जा रही थी, तो कोई माँ के हाथ का खाना खाने, तो कोई अपने कमरे में सुकून पाने, तो कोई अपनों के साथ समय बिताने। कुल मिला कर कुछ राहत की सांस लेने को सब उतारूं थी। बिलकुल वैसे जैसे गर्मी से त्राहि त्राहि करते हुए जब हम ठन्डे ठन्डे पानी से स्नान करते हैं तो कैसा सुकून मिलता है ठीक वैसा ही सुकून पाने ये सब जा रही थी। नहीं से तो कुछ पलों की राहत भी काफी है हमें भी तो वापस उसी गर्मी में पसीना पसीना होना ही होता है मगर दिन भर में दो बार स्नान कर लेने से एक बार कि तो राहत मिल ही जाती है। कुछ पलों के लिए ही सही तरोताजा तो हो ही जाते हैं।

अब लो ट्रेन में फिर दिव्यांशी शुरू हो गई “मम्मी कोई खबर दो जल्दी जल्दी।”

"अरे अब खबर कहाँ से लाऊँ, मै कोई रिपोर्टर थोड़े ही हूँ।"

"नहीं मम्मा आपके पास बहुत खबर है मुझे मालूम है। अच्छा सुबह आप और क्या क्या देखते है वही बताओ।"

"अरे बेटा तुम भी न कहाँ की बात पकड़ लेती हो न। अच्छा चल बताती हूँ, अब जब बात शुरू हुई है तो वही बातें करते हैं। जब मैं लौटती हूँ तब एक दूध की डेयरी वाले अंकल को रोजाना देखती हूँ। इतना बड़ा पेट है उनका देखने से ऐसा लगेगा जैसे पूरे ९ महीना ही चल रहा है। और उसपर से दूकान का चबूतरा धोते रहते हैं। मेरा मन तो होता है की मैं उनके हाथ से झाडू ले लू मगर मैं ऐसा नहीं न कर सकती हूँ। एक आंटी है जो जगह जगह लगे पेड़ों से दो चार फूल चुनती रहती है। अच्छा तरीका है एक पंथ दो काज हो जाते है। सुबह की ताज़ी हवा में थोड़ा टहलना भी हो जाता है और पूजा के लिए फूलों का भी इंतजाम हो जाता है। लूँ लगे न फिटकरी रंग चोखो आये। सबसे निराशाजनक वह दृश्य होता है जो सारी ताज़गी को नेस्तनाबूद कर देता है।"

"क्या माँ?"

"अरे बेटा मायें बच्चों की पलटन को सड़क के किनारे बनी नालियों पर शौच करवाती रहती है।"

"छी माँ, इतनी गन्दगी।"

"हाँ बेटे मोदीजी बेचारे क्या करेंगे, उनके द्वारा बनाये गए सफाई अभियान की तो रोजाना यहां धज्रियां उड़ती है।"

"क्यों मम्मा हमारे देश की जनता क्यों नहीं समझती है की सफाई मोदीजी अपने लिए रखने थोड़े ही कहते है। स्वच्छ भारत तो हमारा ही गौरव होगा, इससे हमारा ही फायदा होगा, हमें ही प्रदूषण से मुक्ति मिलेगी और बिमारियों से निजात पा सकेंगे।"

"ये तुम हम कह रहे है और समझ रहे हैं मगर आज भी लाखों करोड़ों लोग हैं जिन्हे शिक्षा का वरदान नहीं मिला है जिसकी कमी के कारण वो ये समझने में असमर्थ हैं की सफाई और स्वच्छता हम सब के लिए कितनी अहमियत रखते हैं। विदेशों में हम भारतीय सभी नियम बखूबी निभा लेते हैं और भारत लौट कर वहाँ की तारीफ और यहाँ की बुराई दिल खोल कर कर लेते हैं मगर अपनी कमजोरी और अपनी गलती से अनभिज्ञ ही रहते हैं या यूँ कहो की अनजान बने रहकर अपने देश की होती दुर्दशा को देखकर अनदेखा करते हुए वहाँ से हट जाते हैं।"

“हाँ माँ यह हम भारतीयों का दुर्भाग्य है की हम एक सबसे अहम् और सबसे छोटी सी बात को नहीं समझ पा रहे है।”

“शत प्रतिशत सत्य है गुड़िया। मुझे सुबह सबसे अच्छा लगता है जब बच्चियां मुझे प्यार से गुड मॉर्निंग आंटी कहती है। रास्ते भर लड़कियाँ नमस्ते आंटी, कैसे है आंटी, दीदी को छोड़ आये वगैरह वगैरह बोलती है तो मुझे तो सब प्रोटीन विटामिन मिल जाते हैं। इतना प्यार मिलता है की मन गद गद हो जाता है।”

“वाह मम्मा आप तो जगत माँ हो गई है।”

“चल मसकरा बाजी करती है।”

“माँ मैं भी तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ।”

“क्या बोलना चाहती है गुड़िया बोल न।”

“माँ मैंने भी एक बार एक लड़की से दोस्ती की थी जब शुरू शुरू में मेरा मन नहीं लग रहा था तब। मैंने डैडी से बात की थी न उससे पहले।”

“हाँ तो क्या हुआ बेटा दोस्ती करनी कोई बुरी बात थोड़े ही होती है।” “नहीं माँ बुरी है इस दोस्ती में बुराई है।”

“तू खुल कर बताएगी या मेरा कलेजा बाहर निकलने का इंतज़ार कर रही है।”

“अरे माँ, आप ऐसे घबराओगी तो मैं नहीं बता रही।”

“अरे बाबा मैं ठीक हूँ तू बस ये सस्पेंस मत बना इससे मुझे बेचैनी होती है।”

“माँ कैसे कहूं तुम मुझसे नाराज हो जाओगी।”

“तुम अगर अब नहीं बताई तो जरूर हो जाउंगी।”

“माँ वो जो दोस्त बनी थी न, बाद में मुझे पता चला की वो अच्छी नहीं है। उसने मेरा फायदा उठाना चाहा और मुझे वही दवाई देनी चाही।”

“फिर, फिर क्या हुआ तुमने वो दवाई ले ली?” डर के मारे अनुराधा का चेहरा पूरा लाल हो गया था। उसकी आवाज में चिंता के भाव साफ़ झलक रहे थे।

“नहीं माँ मैं ऐसा कैसे कर सकती हूँ। पर मैंने जब उसे मना किया तो उसने मुझे फ़साने की कोशिश की।”

“अरे कैसे और कब तूने मुझे तब क्यों नहीं बताया?”

“मैं तुम्हे बताना तो चाहती थी माँ, मगर हिम्मत ही नहीं जुटा पाई।”

“फिर आगे क्या हुआ? उसने पहले तो मुझे धमकी दी की तुम हमारी टीम में आ जाओ नहीं तो बुरा होगा। परन्तु जब मैं उसकी बात नहीं मानी तो उसने एक चाल चली। उसने एक दिन मेरी बैग में ही दवाई की पैकेट डाल दी और सर से मेरी शिकायत लगा दी।”

“हे भगवान् इतनी दुश्मनी। वो कभी तेरी दोस्त बनी तो थी क्या। कोई दोस्त तो ऐसा कभी नहीं करेगी। उसने तो तेरी पूरी जिंदगी भर के लिए इंतजाम कर डाला था।”

“हाँ माँ, लेकिन वो ये भूल गई थी की "जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोई।”

“आगे क्या हुआ गुड़िया।”

“होना क्या था माँ जब सर ने मुझे पूरी क्लास के सामने कहा की तुम्हारी शिकायत आई है इसलिए तुम्हारी बैग की तलाशी लेनी होगी मेरे तो होश उड़ गए। मुझे तो दिन में ही तारे दिखने लग गए। ये क्या हो रहा है। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वो तो उस दिन निर्मला ने मेरा साथ नहीं दिया होता तो,” बताते बताते दिव्यांशी अपनेआप को रोक नहीं पाई और माँ के गले लग कर खूब रोने लगी। “जब सर ने मेरी बैग की तलाशी ली तो गनीमत है निराशा के अलावा उनके हाथ कुछ नहीं लगा। निर्मला ने चालाकी से पहले ही वो पैकेट निकाल लिया था नहीं तो उस दिन पता नहीं मेरा क्या होता। उसके बाद उस लड़की को वो पैकेट कभी नहीं मिला। हमने उस पैकेट को आग लगा दी थी। मैंने डैडी को फ़ोन में सारी बात बता दी थी। सब कुशल मंगल हो चुका था तो डैडी भी निश्चिंत हो गए थे और मौका देख कर आपको बताने को कहा था नहीं तो यहां आप अकेले ज्यादा परेशान हो जाती।”

“अरे नहीं गुड़िया मैं यहाँ सिर्फ मन बहलाने थोड़े ही आई हूँ। तू मुझे इस तरह से पराया समझेगी तो मैं अब दिवाली के बाद तेरे साथ वापस नहीं आ रही।”

“नहीं मां आप पराई कैसे हुई पराई तो बेटियां होती है ना।”

“हाँ, माँ को पटाना तो तुझे अच्छी तरह आ गया जरूर तेरे डैडी ने ही तुझे सिखाया होगा, है ना।” अनुराधा ने दिव्यांशी को गले लगा लिया।

अनुराधा ने दिव्यांशी को समझाया कि “कभी भी कोई भी परेशानी हो माँ या पिता से जरूर साझा करनी चाहिए। दुनिया में उनसे ज्यादा तुम्हारा शुभचिंतक दूसरा कोई नहीं हो सकता है। मुश्किलें और परेशानियां तब विकराल रूप लेती है जब उसका निवारण सही समय पर और सही ढंग से नहीं किया जाता है। उलझने भी तभी बढ़ती है और निराशायें भी हमें तभी घेरती है। सारी बातें तुम ही सोच लोगी तब हम बड़े किस लिए बैठे है। आगे से ध्यान रखना मेरी गुड़िया बात को बढ़ने से पहले ही रोकना अक्लमंदी होती है और उसमें बड़ों का सहारा एक संजीवनी बूटी कि तरह ही काम करता है।”

पश्चाताप के आँसूं लिए दिव्यांशी ने माँ को सॉरी कहा, “हाँ माँ सॉरी, आगे से पूरा ध्यान रखूंगी।”

आलोक स्टेशन पर बेसब्री से अनुराधा और दिव्यांशी का इंतज़ार कर रहा था। इतने समय के बाद घर पर रौनक होगी। दिवाली तो आलोक के लिए आज ही आ गई है। उसके अपने जो घर आ गए है। कितने दिनों से घर सुना सुना था। “आज चमकेगा मोरा घर अंगना, घर आया देखो मोरा सजना” कुछ ऐसा ही आलोक महसूस कर रहा था। डैडी को देखते ही दिव्यांशी की तो ख़ुशी का ढिकाना ही नहीं था। बाप बेटी एक दूसरे की जान है। जितना स्नेह आलोक दिव्यांशी पर रखता है उतना ही प्यार दिव्यांशी अपने पिता से करती है। आलोक दिन भर में दस बार दिव्यांशी को फ़ोन करता होगा तब भी अगर एक समय भी फ़ोन करने में थोड़ी देर हो जाए तो बाप बेटी दोनों का ही मूड उखड़ा उखड़ा हो जाता है। माँ की ममता तो सुनते आये है मगर बाप का लाड तो आजकल देखने को मिलता है। आज तो खूब भरत मिलाप हुआ। मौका देख कर आलोक ने अनुराधा के गालों पर अपने होंठों के निशान बना ही दिए।

घर पर दादा जी और देविशि अनुराधा और दिव्यांशी के स्वागत की तैयारी में जुटे थे। अनुराधा को बताया गया था की बहुत दिनों से काम वाली नहीं आ रही है तो घर अस्त व्यस्त हो रहा है। जहां देखो वहाँ गंदगी हो चुकी है। अब तुम आ गई हो तो सब सम्भालो। हमें स्वादिष्ट स्वादिष्ट पकवान बना कर खिलाओ। अनुराधा को थोड़ा डराने की उन लोगों की चाल थी ताकि बाद में एक सरप्राइज दिया जा सके। जब देखो तब सरप्राइज। इन लोगों के सरप्राइज के चक्कर में तो एक बार हद हो गई।

बात तब की है जब अनुराधा और आलोक की सगाई हुई थी और पहली बार अनुराधा आलोक से फ़ोन पर बात करने वाली थी। वैसे वो आलोक के घर वालों से पहले भी बात कर चुकी थी क्योंकि ये रिश्ता तो बाद में तय हुआ अनुराधा का तो आलोक कि बुआ से पहले से ही रिश्ता है। पर जब सगाई के बाद बात कर रही थी तब अलग शर्म थी और मन घबरा रहा था। उस मनः स्थिति में जब आलोक ने “हेलो” कहा तो अनुराधा को उसकी आवाज बिलकुल उसके भाईसाहब की आवाज सी लगी। अब अनुराधा को लगा की ये लोग सरप्राइज देने की कोशिश कर रहे है। अब दुविधा में फंसी अनुराधा कैसे बात करे। उसने आलोक से पूछा भी की “आप मुझे आलोक नहीं लग रहे है।”

तब आलोक को खूब हंसी आने लगी। “अनुराधा तुम क्या कहना चाह रही हो की मैं तुम्हारा होने वाला पति नहीं बल्कि उसके भाई साहब तुमसे बात कर रहे हैं। वाह तुम भी कमाल करती हो।”

अनुराधा को भी ख़राब लगा की वो भी बेवकूफों वाली हरकत कर बैठी। पर अब उसके पास कोई उपाय नहीं था। ओखली में जब सर दे ही दिया तो मुसल से क्या डरना। जब आलोक ने घर वालों को ये बात बताई तो सब अनुराधा के खूब मज़े लेने लगे। अनुराधा घर पहुंचने तक आलोक को शिकायत ही किए जा रही थी की मेरे लिए इतना काम क्यों फैला कर रखे हो। आलोक भी उसे और तंग किये जा रहा था। आलोक अनुराधा की चिंता के होम की अग्नि में घी डाल डाल कर उसे बढ़ाये जा रहा था ताकि घर पहुंचने तक वह यूँ ही प्रज्वलित रहे। जब गाड़ी घर के सामने रुकी तो दरवाजे की सजावट देख कर घर के अंदर का हाल अनुराधा समझ गई। अरे जनाब लिफाफा देख कर खत का हाल जान लिया गया। जब दरवाजे पर फूलमाला, बांदरवाल, गणेशजी की सुंदर मूर्ति सजाई गई है तो अंदर तो न जाने क्या क्या किया गया होगा।

अब तो अनुराधा को मस्ती सूझी, दरवाजे पर ही शुरू हो गई, “आलोक मैं अभी अंदर नहीं जा रही हूँ।” पहले तो आलोक को हसीं आई की काम का टेंशन से अनुराधा अंदर नहीं जाना चाह रही है मगर जब अनुराधा ने उससे कहा की “तुम मुझे झाड़ू लादो तो मैं यहीं से सफाई शुरू करती हूँ। अब समय कहाँ है? काम जल्दी जल्दी करना होगा।”

आलोक भौचक्का सा उसे देखने लगा। आलोक के चेहरे का रंग अब उड़ना शुरू हो गया, “अरे बाबा पहले सबसे मिल तो लो।”

“जाओ तुम बाबूजी को यहीं ले आओ।”

“क्या बोल रही हो अनुराधा? अंदर चलो तो देविशि भी तुम्हारा कितना इंतज़ार कर रही है और तुम हो की सफाई।”

“ठीक है आलोक पर एक ही शर्त पर।”

“अब कैसी शर्त”

“यही की मैं दरवाजे के पास ही खड़ी रहूंगी और तुम अंदर जाकर सबको ले आओगे।”

कुछ देर तक अनुराधा जबरदस्ती आलोक को परेशान करती रही आखिर में आलोक ने तंग आकर उससे कहा की “घर तुम लोगों के लिए सजाया गया है चल कर देखो तो सही।”

अब आया न ऊंट पहाड़ के नीचे, अनुराधा खिलखिलाती हुई आलोक की ओर देखने लगी। “मैं तो दरवाजे की सजावट देख कर ही सब समझ गई थी की तुम लोग कुछ सरप्राइज देने वाले हो तो मैंने भी तुरंत जो समझ में आया तुमसे छोटा सा मजाक कर लिया। अब बाबूजी और देविशि को मत बताना, उनका सरप्राइज मेरे लिए सरप्राइज ही रहने देना। ये सब मस्ती मजाक तुम्हारे और मेरे लिए था।”

“ओह तो ये बात है अब तुम मुझे परेशान करोगी” और आलोक ने अनुराधा को कस के अपनी बाहों में जकड़ लिया।

दिव्यांशी तो अपने दादू के पास भाग गई वह अच्छी तरह जानती है की उसके मम्मी पापा का ये सब अब चलता रहेगा। ये लोग कभी बड़े नहीं हो सकते। वाकई में घर तो कमाल का सजाया था।

“बाबूजी ये सब क्या है” अनुराधा ने बाबूजी के पैर छूते हुए पूछा।

“मुझे तो कुछ नहीं मालूम बेटा। ये सब बाप बेटी की कारस्तानी है। तुम लोगों के स्वागत की तैयारी कितने दिनों से चल रही है। दिवाली की मिठाई, सजावट, नए कपड़े सब तैयार है ताकि अब हम सब एक साथ बैठे खूब मस्ती करेंगे।”

“वाओ दादू और डैडी क्या सुपर प्लानिंग है। देविशि कमाल कर दिया तूने तो” और इतना कहती हुई दोनों बहने गले मिलने लगी। अनुराधा का चेहरा ही खिल गया। इतनी अच्छी दिवाली तो उसने आज तक नहीं मनाई। रसोई दिनु काका संभाल रहे थे और सब घरवाले बैठे किस्से कहानियों का आनंद तरह तरह की मिठाइयों और नमकीन के साथ उठा रहे थे। ख़ुशी से सभी का ह्रदय सराबोर हो रहा था।

दिन बीतने का इंतज़ार आलोक और अनुराधा का अब खतम होने को था। दोनों के मिलन की घड़ी आने वाली थी। जब आलोक ने इतनी तैयारियां की है तो अनुराधा के लिए कुछ ख़ास तो अवश्य ही किया होगा। रात के आगोश में दो हंसों का जोड़ा आज इतने दिनों की जुदाई को ख़त्म करते हुए एक होने का भरपूर आनंद उठाना चाहते थे। और उसी के लिए आलोक ने अपने कमरे को कुछ ख़ास अंदाज में सजाया था ताकि अनुराधा अपने आप उसकी बाहों में पिघलने लगे। वही हुआ कमरे की मदहोशी ने अनुराधा और आलोक को इश्क के नशे में पूरी तरह से डुबो दिया। मिलन की यह घड़ी न ख़त्म होने की चाहत लिए दोनों एक दूजे में समाने लगे। इस प्रेम सागर में गोता लगाते लगाते कब सवेरा हो गया इनको एहसास ही नहीं हुआ।

दिवाली का दिन आ गया पूजा अर्चना कर आतिशबाजी करने सब छत पर चले गए। बड़ों के पैर छूकर और छोटों को प्यार देकर एक दूसरे को दिवाली की ढेर सारी बधाई देते हुए रसोई का आनंद उठाने के लिए आतुर सभी बड़े बूढ़े और बच्चे व्याकुल होने लगे। अब देविशि से रहा नहीं गया उसने अपनी भूख का दुखड़ा सबको सुनते हुए कहा की “अब थाल परोसों न मम्मा कितने पकवान बने है और आप लोग है की खाने ही नहीं दे रहे है। पहले पूजा फिर कोई काम दूजा तो समझ में आता है मगर पेट पूजा का भी तो ख्याल करो। पेट में चूहों ने आतंक मचा रखा है।” सभी ने देविशि की हाँ में हाँ मिलाया। खानदानी रसोई को खानदानी

थाल में परोस कर एक साथ खाने की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए सब ने स्वादिष्ट रसोई का आनंद उठाया।

“मम्मा ऐसा खाना केवल आज ही के दिन क्यों बनता है साल भर में फिर ये स्वाद कभी क्यों नहीं मिलता।”

देविशि के सवाल का जवाब अनुराधा ने हमारी भारतीय धार्मिक सभ्यता की खूबी को दर्शाते हुए बताया की “ये आज माँ लक्ष्मीजी का प्रसाद है न बेटे इसलिए इसका स्वाद अलौकिक होता है। कुछ भी भोजन हो अगर उसे भोग लगा दिया जाये तो वह प्रसाद हो जाता है और उस प्रसाद का स्वाद अप्रतिम हो जाता है।”

सब खाना का आनंद उठा रहे थे तभी दिनु काका कि जोर से चिल्लाने कि आवाज आई। सब एक साथ रसोई कि तरफ दौड़े। अरे ये क्या गैस सिलेंडर में आग लग गई। देखते ही देखते अफरा तफरी मच गई। आग अभी तक तो पाइप में लगी हुई है अगर सिलेंडर का नॉब बंद कर दिया जाए तो ख़तरा टल सकता है। मगर बंद करने जाए कौन? दिनु काका तो पहले ही रसोई से बाहर आ गए। अब आलोक ही है जो कुछ कर सकता है मगर आलोक को अकेले खतरे के मुँह में जाने कैसे दे सकते है। देविशि ने समझदारी दिखाई जब सब आनन् फानन में घबरा उठे थे उस वक़्त उसने अपना मानसिक संतुलन बिगड़ने नहीं दिया और अग्निशामक दल को सूचित कर दिया। अब जब तक वो दल पहुंचता तब तक घर वाले अपनी कोशिश में लगे हुए थे। आलोक का दिमाग भी काम पर लग गया उसने अनुराधा को जल्दी से कोई बोरा या कम्बल देने को कहा। पास में बोरा ही दिखाई पड़ा उसने आलोक के हाथ पर रख दिया फिर आलोक ने पूरी ताकत से बोरा से उस आग पर दे मारा। ज्यादा दबाव होने से आग बुझने को हुई मगर फिर जलने लगी। इस बार आलोक ने दुगुनी ताकत लगाईं और अनुराधा को झट से नॉब बंद करने को कहा। इस तरह से थोड़ी हिम्मत और थोड़ा धैर्य से काम लेने से एक बड़ा अपशगुन होने से बच गया। तब तक अग्निशामक दल भी वहाँ पहुंच चुका था, बाकी का काम उन्होंने निपटा दिया।

“आज तो माँ काली ने बचा लिया नहीं तो खतरा तो बहुत बड़ा था।”

“हाँ बाबूजी अंत भला तो सब भला।”

दोनों बहनों को उदास देख अनुराधा ने उन्हें समझाने की कोशिश की, “अब ये क्या दोनों की दोनों मुँह क्यों लटकाये बैठी हो? कोटा जाने का समय तो आना ही था। अरे जैसे सुबह होती है फिर शाम होती है फिर सुबह होती है फिर शाम, यह चक्र चलते ही जाता है। ठीक उसी प्रकार जीवन में भी आने जाने का, ख़ुशी और गम का चक्र चलते ही रहता आया है और आगे भी चलते ही रहेगा और परिस्थिति के अनुसार इंसान को चलते ही जाना है। चार

दिन तो पलक छपकते ही बीत गए। अब वापस दौड़ में शामिल होने का समय आ गया। चलों बच्चों हर एक को अपना कर्तव्य निभाना है और जीवन में कुछ कर दिखाना है और इसके लिए मैदान में तो उतरना ही होगा। माना की हम जितने उत्साह के साथ घर आये थे उतने ही उदास मन के साथ वापस वहीं जाने को है जहां से हमारे कठिन सफर की शुरुवात हुई थी। वही राह जो दिव्यांशी को उसकी मंजिल तक पंहुचायेगी। मगर मेरी परियों ये भी तो सोचो अगर नहीं गए तो जो चाहिए वो कैसे हासिल करेंगे।"

माँ की बातों से दोनों सहमत हुई और जाने को तैयार होने लगी। बच्चों के साथ भी कितना मुश्किल है न घर पर रहने को तरसते हैं, माँ के हाथों का खाना खाना चाहते हैं, मगर उन्हें ये सब कहाँ नसीब होने का। जब बच्चें एक बार पढ़ने घर से दूर चले गए फिर तो उन्हें वही हॉस्टल का खाना ही मिलता है, जो न जाने कैसे कैसे बनाया जाता होगा? एक बार फिर अनुराधा की अपनेआप से मीटिंग शुरू हो गई।

कैसा समय आ गया है? बच्चों को ज्यादा समय या तो हॉस्टल में या फिर नौकरी के सिलसिले में घर से दूर ही रहना होता है। उज्ज्वल भविष्य की खातिर। मगर इस उज्ज्वल भविष्य की ललक में आज बच्चों का शरीर दाँव पर जो लग रहा है उसकी और किसी का भी ध्यान केंद्रित नहीं होता। हर समय मेस का खाना क्या वाकई में खाने लायक होता है? सफाई और स्वच्छता का कोई ख्याल नहीं रखते हुए, पौष्टिकता को अनदेखा करते हुए, जले हुए तेल मसलों का इस्तमाल कर जो खाना बनाया जा रहा है और बच्चों को खिलाया जा रहा है क्या वह इन मासूम के शरीर में नुकसान नहीं पंहुचायेगा? इस ओर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया बस होड़ में लगे हुए हैं। कोई तो हल होगा ताकि आज जिस तेजी से यह चलन बढ़ रहा है की बच्चे घर से दूर रहकर ही जीवन व्यतीत करते जाएंगे तो हम सबको मिल कर इस गंभीर समस्या का समाधान अवश्य निकालना चाहिए। बच्चे न ही सिर्फ एक परिवार का वारिस होता है बल्कि वह एक देश का भविष्य भी होता है और अपने देश की सुरक्षा के साथ किसी तरह का भी समझौता आने वाले समय में एक गंभीर खतरा बन सकता है। मगर हाँ यह "मगर" सबके साथ ही आगे बढ़ रहा है। सब यही ही तो कहते हैं मगर क्या करे, उपाय नहीं है।

एक बार फिर अनुराधा अपने अन्तः मन से बातें करने में मशरूफ हो गई। जब दिव्यांशी ने आवाज लगाई तब उसकी अपने आप के साथ होने वाली मीटिंग बर्खास्त हुई। इस बार आलोक स्टेशन नहीं गया। इन चार दिनों की मस्ती ने उसे और कमजोर बना दिया था जिस वजह से वह उन्हें जाते नहीं देख पायेगा। बाबूजी और देविशि ही स्टेशन गए और सुस्त घर लौटे। घर में इतना सन्नाटा पसरा हुआ था जैसे घर से कितने लोग चले गए हो। आज तो ऐसा लग रहा था की सन्नाटा को बहुत दिनों के बाद पैर पसार कर बैठने का मौका

मिला है और ये मौका वह अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहता है इसलिए पूरा ही फैल कर बैठ रहा है।

अध्याय : १२
प्रकृति

"हमारी जान मान और शान
इसी के बल से धनवान है हर इंसान"

आज तो कोटा में भी चहल पहल नहीं है। बच्चे तो लगभग लगभग सभी आ गए है मगर मुरझाये हुए चेहरे के साथ। घर की तो याद आएगी न भाई। दो चार दिन लगेंगे फिर से गाड़ी पटरी पर दौड़ने लगेगी। हम इंसान को ऊपरवाले ने एक कीमती तोहफे से नवाजा है वो ये की हमें भूलना सिखाया है। भूलने की हमारी ताकत हमें जीवन में कभी कमजोर नहीं पड़ने देती कभी रुकने नहीं देती। बड़े से बड़े दुःख दर्द को भी एक समय के बाद इंसान भूल कर आगे बढ़ता है। क्योंकि जब तक जीवन है तब तक इंसान को अपनी सभी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना ही होता है। अब बच्चों को भी घर परिवार को भूल कर अपनी मंजिल की ओर बढ़ना होगा। कुछ समय लगेगा मगर सब वापस से पहले जैसा हो जाएगा।

आज अनुराधा का मन नहीं लग रहा वैसे ही यहां रहने वाली हर माओं की सबसे बड़ी समस्या भी यही है की दिन भर क्या करे? जो गृहणी है उसका रसोई में ज्यादा मन लगता है और यहां तो रसोई का कोई काम है नहीं। हाँ जो मायें फ़्लैट भाड़े में लेकर बच्चे के साथ रहती है उनका तो समय आसानी से कट जाता है वो तो एक तरह से पूरी गृहस्थी ही बसा लेती है। जो दफ्तर या और अपना कोई कारोबार करती है तो उसका तो वैसे ही यहां मन नहीं लगने का। हर कोई मन लगाने के नए नए तरीके तलाशती रहती है। कोई दो चार लोगों के साथ बैठ कर गप्पे लगाती रहती है तो कोई आस पास की कोई देखने लायक जगह का अता पता पूछ घूम आती है तो कोई सो कर अपनी नींद ही पूरी करती रहती है। बेचारी कोटा की माओं का हाल बुरा, ना बुरा तो नहीं कहा जायेगा, हाँ कुल मिलकर ठंडा गरम चलते रहता है। थोड़े दिनों तक तो आराम ही कह सकते हैं बाद में यही आराम हराम लगने लगता है।

इसी तरह एक दिन अनुराधा भी अपना मन बहलाने पास वाले बागान में टहलने चली गई। सुबह सुबह का समय था मन उदास हो रहा था तो सोचा की कमरे में और जी नहीं लगेगा तो क्यों न थोड़ी ताजा हवा ही खा कर आया जाये। यही सोच कर वह चली गई। बागान तो पास में ही है, बड़ा ही सुंदर है। हरी हरी मखमली घास चारो ओर बिछी थी और जगह जगह पर फलों और फूलों के वृक्ष इसकी खूबसूरती में चार चाँद लगा रहे थे। पंछियों की चहचाहाहट मन मुग्ध कर रही थी, कहीं कबूतरों का झुण्ड था जो दाना खाने में व्यस्त था तो कहीं सुग्गों का जो चना और मिर्च का लुफ़्ट उठा रहा था। कौओं के लिए भी रोटी डाली हुई थी और चिड़ियों के लिए बिस्कुट। हम इंसान पंझियों और जानवरों को खाना खिलाने के लिए हमेशा इच्छुक रहते हैं। मान्यता भी है या यूँ कहें की विश्वास है की पंझियों को या जानवरों को खाना खिलाने से पाप कट जाते है, इंसान पुण्य का हकदार हो जाता है। आज इस कलयुग में अगर पुण्य कमाने का इतना आसान टोटका मिल जाये तो भला कौन चूके। अब सदयुग के इंसान बनने वाले ढाँचे तो रहे नहीं और कलयुग के इंसान की फितरत ही

ऐसी है की कोई न कोई पाप तो हो ही जाते हैं तो पुण्य कमाने का मौका मिल जाए तो छोड़ना तो बेवकूफी ही होगी ना।

अरे भाई हम इंसानों का भी ध्यान था तभी तो हमारे लिए कद्दू और करेले के रस की सुविधा थी। बड़ी उत्तम जगह थी ऐसी की मन तरोताजा हो जाये और तन दुरुस्त। काफी चहल पहल थी। कोई टहल रहा था तो कोई प्राणायाम कर रहा था। कोई योग तो कोई कसरत। इतने लोगों को इतना जागरूक देख कर अच्छा लगा। वहीं एक ओर कोई गुरूजी प्रवचन भी दे रहे थे और काफी लोग उन्हें सुन भी रहे थे। अनुराधा का मन भी अशांत तो था ही सो वह भी उस भीड़ में जाकर बैठ गई। गुरूजी की बातें उसे अच्छी लगी। कोई इधर उधर की बातें नहीं थी। सुबह सभी लोग प्रकृति का आनंद उठाते हुए अपनेआप को स्वस्थ रखने के लिए ही वहाँ आये थे तो बस इसी बात की ओर सबका ध्यान केंद्रित करने की उनकी कोशिश थी। और जिसमें शायद वो बहुत हद तक कामयाब भी हुए। गुरूजी बताना शुरू किये की एक दिन कि बात है, मैं किसी विद्यालय में योग सिखाने गया। मैं कुछ असमंजस में पड़ गया। जिसको देखो उसके चेहरे पर बारह बज रही थी। सब हताश-निराश बैचैन हो रहे थे। कोई या तो बात नहीं करना चाह रहा था और जिसको करना पड़ रहा था वह कुछ ज्यादा ही सुरीली तान छेड़ रहा था। जिससे सन्नाटा सा छाया हुआ था। जब मैं विद्यालय के एयर कंडीशन हॉल से बाहर निकला तब सारा माजरा समझ में आया। क्या गर्मी? झुलसा दे ऐसी आग, कुछ मिनटों में ही शरीर का सारा पानी सोख ले ऐसी तपन। हर कोई छाओं ढूंढ रहा था। आज तो दिनकरजी जीत गए, अपनी आग कि ताकत का परिचय देकर सबको एक साथ परास्त कर दिया। देखो कैसे हर कोई उनसे आँखे चुरा रहा है। कोई छाओं ढूंढ रहा है तो कोई एयर कंडीशनर से बाहर ही नहीं निकलना चाह रहा। सड़के जो कभी खाली नहीं रह पाती है वो भी अकेली सुनी मुसाफिर कि राह देख रही है। आज न तो गाड़िया उसको धकेलती हुई निकल रही है न ही राही उसको किसी भी प्रकार कि बाधा पंहुचा रहे है। देखो कैसे बर्फ का गोला वाले भैया भी किनारा पकड़ लिए। बच्चों को खिलौने से लुभाने वाली काकी भी आज मटिया रही है, रोज अमरुद-इमली स्कूल के बाहर खिलाने वाले चाचा आज बच्चों को अकेला छोड़ सुस्ताने में व्यस्त है। क्या कर सकते है तो भास्करजी के आगे किसकी मजाल जो पन्गा ले। अभी लू लग गई तो फ़ोकट में लेने के देने पड़ सकते है।

प्रकृति का खेल भी निराला होता है। कभी गर्मी तो कभी सर्दी, कभी बरखा बहार तो कभी बसंत विहार, कभी दिन कभी रात। मानव इस प्रकृति के गुलाम, न गुलाम क्यों प्रकृति कि संतान, प्रकृति के प्रेमी। ठीक ही कहा न, प्रकृति तो हमारा पालन पोषण करती है, हमें कितना कुछ देती है। पांच धातु से हमारा सृजन हुआ, प्रकृति ने हमें जीवन दान दिया हमारा भरण पोषण किया। प्रकृति से ही तो हम कितना कुछ सीखते है, सूर्य हमें समय का पाबंद

बनाता है, तो चन्द्रमा शांत शीतल रहना, हवा हमेशा बहते रहना सिखाती है तो नदी गंभीर धैर्यशील आगे बढ़ना बतलाती है, पर्वत अडिग रहकर अपना वजूद कायम रखना सिखलाता है तो वृक्ष सदा हरे भरे रहना खुशहाल रहना तो फूल हसना सिखाता है और अपनी खुशबु से पूरा वातावरण को महकाना, धरती अपने विशाल ह्रदय में सबको शरण देने कि सिख देती है तो धूप छाओं जीवन के उतार चढ़ाओ से अवगत कराते है तो वर्षा सींचना बतलाती है। कण-कण कुछ न कुछ सिखाता है, हमें हमेशा देता है। इतना कि हमारी सोच से भी परे है। लेने के लिए अनगिनत हाथ हैं तो क्या हुआ देने के लिए तो ऐसा महा सागर कि जो कभी खाली नहीं होने का। ऐसा कुबेर का खजाना जिसकी कोई क्षितिज नहीं है।

जब आज मन इन गहरे विचारों में डूब ही गया तो थोड़ा व्यापारी भी होने लगा लेने के लिए हम है, प्रकृति हमें हमेशा देती ही है, हमेशा, एक छोटे से फूल को देखता हूँ तो ख्याल आता है कि ये नन्ही सी जान कोई ताकत नहीं कोई रहस्य नहीं मगर कितना कुछ लुटा रही है अपनी खूबसूरती से सबके चेहरे पे मुस्कान बिखेरती है, अपनी महक से मादकता फैलाती है, टूटने के लिए ही बनी है मगर रंगों से मन मोह लेती है। ऐसी कौन सी जगह है जहां इसकी जरुरत नहीं होती, मंदिरों में पूजा के लिए इसे सबसे पहले रखा जाता है, शादियों में इसके बिना अधूरापन रह जायेगा, प्रेमी अपनी प्रेमिका को इसी के माध्यम से अपने दिल की बात कह पाता है, औरते इसे अपने बालों में सजा कर बड़ा इठलाती है। इस संसार में आने से लेके जाने तक के कार्यक्रमों में इसकी जरुरत होती है मगर देखो तो इनकी मासूमियत जरा भी घमंड नहीं है। इतने काम के अगर हम इंसान हो जाते तो न जाने हमारा तो चाचरा कब का सातवें आसमान पर पहुंच चुका होता।

नीलाम्बर शुभ्र निर्मेघ चमकता
सिंदूरी सा कभी रंग भरता
आँख मिचोली निशा संग संध्या बेला की होती
थाल भरे तारों से मोती

सूर्य चंद्र की सांठ-गाँठ भी
तम उजियारे की कीमत भर्ती

विहग ललाम के मधुर गीत
कोमल कुसुम की मधुर महक
सुनहली किरणों के पग पखारती
सोये जग को आप जगती

क्षीरनिधि की फेनिल तरंगे
मुखरित झरनो की चंचलता
नदियों का कल कल बहना
नीरव हिमालय की अडिगता
आलौकिक रचना उस करतार की
नहीं उपमा इस इंद्रजाल की
सुभग जीवन पाया हमने
रत्न जड़ित हो जैसे सपने

लुटेरों से भरा सारा संसार है
क्षति पँहुचता समस्त मानव समाज है
कृतज्ञ बनो कृतघ्न नहीं
यह सम्पदा सगी है कोई सौतेली नहीं
अपितु पंखुड़ी सी पलकें छपकाते
दृग से सारे सपने खो जाते।

कभी सोचा है हम क्या दे रहे है, प्रकृति को? एक हाथ दे एक हाथ ले तो सबने सुना ही होगा। दे रहे है न पर्वतों को काट काट के उसकी विशालता नष्ट कर रहे है, जंगल साफ़ कर उसके जीवों को बेघर कर रहे है, नदियों को प्रदूषित कर उसकी पवित्रता को भंग कर रहे है, वाहनों, कारखानों से वायु प्रदूषित कर उसकी स्वच्छता मलिन कर रहे है, कचरे का ढेर जहां तहाँ फ़ेंक अपने अपने शहर कि सुंदरता में चार चाँद लगा रहे है, और सबसे अहम् जो मानव जीवन हमें मिला उसको न जिया कर उसके अंदर के शैतान कि जीत होते देख रहे है। क्या हम ऐसा नहीं कर रहे है? क्या हम ऐसा होते नहीं देख रहे है? क्या हमें इनके लिए कुछ नहीं करना चाहिए?

हम बदलेंगे, हमें बदलना होगा, हमे बदलना पड़ेगा, हमे बदलना चाहिए। आज इन्ही विचारों का समावेश हो रहा है। क्यों न हो, इतनी खूबसूरती का खजाना यूँ बर्बाद होते हम नहीं देख सकते हैं। खूबसूरती भी कोई ऐसी वैसी थोड़े ही-चलो अभी हम सिर्फ आकाश कि बात करते है, संध्या बेला का वो आकाश, सिंदूरी उसकी छटा, कहीं काले तो कहीं लाल बादलों कि मादकता उमड़ते घुमडते आँख मिचोली खेलते इधर से उधर घूमते अपनी ही धुन में सराबोर। पंछियों का वो चहचहाना, साथ में झुण्ड में एक साथ पंख फैलाते कलरव करते भिन्न भिन्न आकृति बनाते हुए आकाश में ऐसे उड़ना जैसे मधुर गीत से पूरे उत्साह के साथ दिनकरजी को विदागरी दे रहे है। साथ ही प्रातः आगमन का न्यौता भी देने कि कोशिश कर

रहे हो। देखो जैसे कहना चाह रहे है कि ये तो कुछ पलों का विछोह है हम प्रातः आपके स्वागत में यहीं मिलेंगे इसी उत्साह और इसी उमंग के संग। अपने कर्तव्य का पालन भी बखूबी निभाएंगे-समस्त देशवासियों को आपके आगमन कि सूचना हम ही दे आएंगे। इनका यह प्रेम कैसा निश्छल, निःस्वार्थ प्रेम है।

शाम ढलने को है और हर कोई अपने घर कि ओर प्रस्थान कर रहा है और ये देखो इन पंछियों को क्या सूझी। एक दूर जाता है तो दूजा पास आता है। शायद रूठना मनाना चल रहा है। प्रेमिका ही लग रही है, जरूर प्रेमी खाली हाथ मिलने आ गया है, ये भी कोई बात हुई साँझ तले मिलने आओगे वो भी खाली हाथ। वाह जी वाह। अब करो मिन्नतें, लगाओ चक्कर चार, हम तो नहीं मानेंगे। लगता है आज कि बेला तो सूखा सुखी ही बीत जाएगी। ना! हम जैसे थोड़े ही है कि प्राण जाये पर वचन न जाए, इतनी जल्दी तकरार ख़तम। इतनी सहजता से इनका काम बन जाता है,घोर आश्चर्य कि बात है।

मानव होता तो न जाने कितना कुछ घटित होता और कितने दिनों का चक्कर लगता जिसका कोई हिसाब नहीं। जो साथी अभी दूर दूर जा रहा था कितनी जल्दी चोंच से चोंच मिला रहा है। क्षणिक झगड़ा और असीमित प्यार, जियो मेरे यार। कितना निर्मल प्रेम और कितना स्वच्छ मन है इनका। न तारीफ के लिए लालायित है ये, और न ही इनको किसी मैडल कि चाह है, किसी रेस में इनको नहीं भागना है, किसी से स्पर्धा नहीं है, कोई दिखावा नहीं, और न ही कोई पछतावा। है न पारदर्शी प्रेम। तो हम क्यों ऐसा नहीं कर सकते? हम क्यों ये बनावटी जीवन जीने को मजबूर हैं?

गुरूजी की बातों में सब डूब गए थे।अनुराधा तो भाव विभोर होने लगी। अपने से ही बातें करने लगी। कितनी सही बात कही है गुरूजी ने। ये प्रकृति की अहमियत्ता, पंछियों की रासलीला, मिलन और विछोह की घड़ी का वर्णन मंत्रमुग्ध कर दिया। आज औरों का तो पता नहीं मगर मैंने अवश्य बहुत कुछ सीखा है। मुझे भी आज प्रेम हो गया है, इस मनमोहक प्रकृति से, इन निश्छल, निरीह पंछियों से, इन पहाड़ से, पानी से, फूलों से तो हवा से। हर तरफ से मादकता का रंग मेरे ऊपर चढ़ने लगा है। किसी ने ठीक ही कहा है की ख़ूबसूरती हमेशा देखने वालों की आँखों में होती है। आज तक इस प्रकृति को कभी उस नज़रिये से देखा ही नहीं मगर आज इन आखों में ही सुंदरता उभर कर आ रही है और इसकी ओर खींचे लिए जा रही है। वाकई में हम भागम भाग की जिंदगी में कभी कुदरत की बनाई इस ख़ूबसूरत नायाब प्रकृति की ओर आकर्षित ही नहीं हुए। कभी इस रस का रसास्वादन ही नहीं चखा। हाँ इसे नुकसान अवश्य पंहुचाने में अपना भरपूर सहयोग दे रहे हैं। आज से क्या अभी से ही मैं अपने में बदलाव लाऊंगी और घर में भी सभी को यही सिखाऊंगी। जिस तरह हम अपने बच्चों का ख्याल रखते हैं उसी तरह हमें अपनी प्रकृति का भी ध्यान रखना

चाहिए। माना की हम प्रकृति की संतान है लेकिन एक समय के बाद संतान ही माँ बाप का ख्याल रखती है। देखो सुना था की कोटा में सिर्फ बच्चे पढ़ने सीखने आते है सरासर गलत है, माँ बाप भी कोटा में रहकर कितना कुछ सीखते है इसका अंदाजा तो मुझे आज लगा। यूँ ही बातों बातों में दिव्यांशी को भी समझाऊंगी की प्रकृति से उसे भी अवश्य सीखना चाहिए।

अब अनुराधा से तो इंतजार ही नहीं हो रहा है। जैसे ही दिव्यांशी क्लास से आई उसे बताने लगी। "दिव्यांशी देख तूने कभी ध्यान दिया की नदी कैसे शांत गंभीर बहे जाती है उसे अपना मार्ग ठीक पता होता है और उसी मार्ग पर हर पड़ाव पार कर वह अपने साथ कितना कुछ बहाते और कितना कुछ पीछे छोड़ते हुए बहती ही चली जाती है। पहाड़ की गंभीरता की ओर तूने कभी गौर किया है उसके वजूद पर किसी का प्रभाव नहीं पड़ता। वह अपने स्थान पर अडिग ही रहता है। आंधी तूफान आये या बरसात उसे कोई नहीं डिगा सकता। पेड़ पौधे वन उपवन सभी जीवों का भरण पोषण करते है। कितने जीवों का बसेरा है ये, आसरा है ये।"

"ठीक है माँ मगर यह सब आप आज मुझे क्यों बता रही हो।"

तब उसने इन सब बातों के पीछे की वजह उसे संक्षेप में बताई। उसे समझाया की इनसे तुम्हे बल मिलेगा।

"वाह मम्मा बात तो आपने पते कि की है।"

"वही बेटा, इन सबसे तुझे भी सिख लेनी चाहिए। इनसे तुम्हें हिम्मत लेनी चाहिए। तुम भी प्रकृति से सीखो, वो हमें कितना कुछ देती है और सिखाती भी है।"

"अवश्य माँ।"

अध्याय : १३
पथरीली राहें

"बाधाएँ अनेक उपचार सिर्फ एक- हौसला"

कोटा में रहकर अनुराधा की मनः स्थिति कुछ व्यथित सी ही रहती थी। मिनटों में घबरा जाना मिनटों में उत्तेजित हो जाना लगा ही रहता। कुछ भी ऊपर नीचे होते ही वह तुरंत घबरा जाती। घर से दूर एक बच्ची के साथ रहना, हर कदम पर सावधानी बरतना, एक प्रकार का डर हर समय सताना उसे कमजोर बना रहा था। किसी तरह सुख शांति से बस पढ़ाई पूरी हो जाए और वह अपनी गुड़िया को लेकर घर वापस चली जाये। ऐसा शायद यहां रहने वाली हर माओं के साथ होता होगा। आज के जमाने में जहां सबकुछ बदल रहा है वहाँ एक लड़की के लिए उतना नहीं बदल रहा जितने की उसको जरुरत है। उसकी सुरक्षा आज भी खतरे में ही रहती है। उसकी हिफ़ाज़त को लेकर उसके घरवाले आज भी चैन की नींद नहीं सो सकते है। इसीलिए तो देखा जाता है की लड़की के साथ जितनी पाबंदियाँ आज भी है उतनी लड़को के साथ कहाँ है। मन तो ऐसे ही अशांत रहता है, माँ बाप भला कैसे चैन की नींद सो सकते हैं? न ही लड़को कि फितरत बदलने कि और न ही लड़कियों के माँ बाप कि। अनुराधा और उसकी तरह कि सभी माओं को न जाने कब चैन मिलेगा।

झूठी मोहब्बत, झूठे वादे, समलैंगिकता का बुखार जीवन में बवाल मचा रखा है। किस तरह से प्यार और विश्वास की धज्ज़ियां उड़ाई जा रही है। लड़कियाँ अब अपनी ही जैसी किसी लड़की से ही प्यार के चक्कर में पड़ कर अपनी जिंदगी बर्बाद करने पर तुली हुई है। माना बच्चे तो पवित्र, निर्मल स्वच्छ जल की तरह है मगर उस जल की शुद्धता और स्वच्छता कितनी आवश्यक है यह भी तो देखना होता है। अगर जल की शुद्धता का ध्यान नहीं रखा जाता है तो उसके क्या परिणाम होते हैं ये सबको ज्ञात होता है। आजकल तो "आर ओ" पानी ही पीना चाहिए नहीं तो बीमार पड़ जाओगे, ऐसा सब जानते है और हर किसी के मुँह से सुनते भी हैं। तो सोचनीय विषय यह है की इस निर्मल जल रूपी संतान की शुद्धता और स्वच्छता कैसे बरकरार रखें। बदलता जमाना, बदलता रहन सहन, पश्चिमी सभ्यता का प्रचलन, साज श्रृंगार का बदलता ढंग, शिक्षित होने की अलग परिभाषा, स्वतंत्रता की जिद्द, क्या मुश्किलें पैदा नहीं कर रहे हैं। समझ में नहीं आता है की यूँ ही जैसे चल रहा है वैसे ही चलने दे और हम आँख मीच कर साइड से चले जाए।

जब से अनुराधा ने उन दोनों लड़कियों को साथ साथ देखा है तब से उसका दिमाग खराब हो रखा है। यथार्थ के धरातल पर जब कुछ ऐसे वाकिये हो जाते हैं जिन्हे स्वीकारना इतना सहज नहीं होता है तो मुश्किलें जन्म लेती है। वो अजीबोगरीब हादसे गले में पड़ी हड्डी की तरह होते हैं जो ना ही निगलते बनते हैं और ना ही उगलते। आज अनुराधा का चित विचलित हो उठा, किस ओर बढ़े? जिधर जमाना बढ़ रहा है उस ओर जो की उसके लिए असंभव है या फिर उस ओर जो प्राकृतिक है जिसके साथ युगों युगों से दुनिया चलती आई

है। आज वह इतना तो समझ ही गई की उसकी यह लड़ाई उसके मन के साथ चलती ही रहेगी, कितना कुछ उसने देख लिया और कितना ना जाने अभी देखना बाकी है।

एक दिन कि बात है अनुराधा दिव्यांशी को उसकी क्लास तक छोड़ने उसके साथ जा रही थी, तभी एक सांड ने उन्हें दौड़ा दिया। दरअसल हुआ यूँ कि दिव्यांशी उस दिन केला अपने हाथ में लिए डैडी से बात करते हुए जा रही थी। जो कि उसका रोज का काम है। रोज का काम तो फ़ोन में बात करना है मगर आज उसमें केला जुड़ गया। अब हाथ हिलाती अनुराधा मस्त चली जा रही थी जब अचानक अजीब सी आवाज आई तो दोनों ही हड़बड़ा गई। वो तो भला हुआ कि दिव्यांशी ने केला वहीं फेक दिया और सरपट दोनों भाग निकली। “बाल बाल बचे।” अनुराधा ने कहा तो दिव्यांशी ने तुरंत कहा “माँ बाल बाल कहाँ पूरा का पूरा बचे।”

“हाँ, यहां जान घ्यारी में आई है और तुझे मजाक सूझ रहा है।”

“माँ इंसान को हमेशा हंसते रहना चाहिए।” दोनों के मुखड़े पर मुस्कान बिखर आयी।

अब सब कुछ फ़ास्ट फर्वर्ड होने लगा था। जल्दी जल्दी सिलेबस ख़तम करवाने के लिए क्लास में शिक्षक बड़ी फुर्ती दिखा रहे है और उनकी फुर्ती के साथ चलने में बच्चों कि बैंड बजी पड़ी है। अब दिसम्बर आने को है अब सिलेबस ख़तम नहीं हुआ तो दोहराएंगे कब? दोहराना उतना ही आवश्यक है जितना कि सिलेबस ख़तम करना। अब शिक्षक हो या विद्यार्थी सबकी हालत खस्ता है। अब माहौल थोड़ा गंभीर हो चुका है। सभी बच्चों ने एड़ी चोटी का जोर लगाना शुरू कर दिया है, बाकी तो राम ही राखे। न न राम भरोसे नहीं राम कि कृपा बनी रहे बस।

मुझे तो लगता है कि इस तरह कि कठिन स्पर्धा वाली परीक्षाओं में बच्चों कि मेहनत जितनी जरुरी होती है उतना ही जरूरी उनके ग्रह नक्षत्र भी उनके साथ होने जरुरी होते है। ५०-५० ही दोनों होंगे तब ही एक बच्चे का बेड़ा पार होना मुमकिन है। नहीं तो अगर ४९ और ५१ भी होगा तो मामला बिगड़ते देर नहीं लगेगी। ऐसा मेरा मानना है बाकि तो इतने भुगतभोगी है उनका तजुर्बा अगर वो हमसे साझा करे तब न। अब समय ऐसा आ गया कि शिक्षक के अलावा किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। समय ही ऐसा है अपना अच्छा करने कि चाह में कोई भी किसी कि भलाई का ठेका नहीं लेता और अगर किसी ने भूले भटके मदद कर भी दी तो यथासंभव यकीन करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। फ़्लाइट में कहते है न कि दूसरों कि मदद करने से पहले अपनी सुरक्षा पेटी बाँध लें। उस नियम का पालन यहाँ इस क्षेत्र में बड़ी शिद्दत से किया जाता है। अब तो युद्ध स्तर पर पढ़ाई चल रही थी। मुकाबला भी तो कितना कठिन है।

करीब करीब २१ लाख बच्चों में से केवल कुछ हजार बच्चे ही चुने जायेंगे। सोच कर ही सर चकराने लगता है, धन्य है ये बच्चे जो इस मुकाबले में खड़े होते है। असली हीरो तो ये बच्चे होते है जो आग के शोलों पर नंगे पांव चलने जैसा काम करते हैं। सैल्यूट है आपको, हमारे देश के भविष्य। जैसे जैसे गंभीरता बढ़ रही है वैसे वैसे अनुराधा कि परेशानियां भी बढ़ने लगी। दिव्यांशी को परेशान देख अनुराधा भी परेशान होने लगी। सारा दिन एक ही रट लगाए रहती हैं।

"अरे बाबा, क्या पढ़ाई हो गई कितना करती है फिर भी यही कहना है कि नहीं हुआ। पढ़ाई हो गई न कि बिजली का बिल हो गया जो कितना भी भर दो ख़तम ही नहीं होता।"

"माँ जाने दो न, आप नहीं समझोगी, परेशान क्यों होती हो तुम्हारी बेटी क्या किसी से कमजोर है? मेहनत करुँगी तब न मीठा फल खाउंगी, बस फिर मेहनत करने दो। जितना तपूंगी उतना ही निखर कर आउंगी, आप ही हमेशा कहती हो फिर आज ये नकारात्मकता कि बातें आप क्यों करने लगी।"

"न रे रनिया तुम्हारी हिम्मत देख कर तो मुझे हिम्मत आती है।"

"बस तो माँ आप चिंता छोड़ दो। उनका सोचो जो दोबारा दे रहे हैं। जब उनका नहीं हुआ होगा तब उनके दिल पर क्या बीती होगी सोचो जरा। घर वालों का अलग टेंशन, क्लास में अलग टेंशन, मान मर्यादा कि वाट लग जाती है उसका अलग लफड़ा, जरा सोचो वो लोग कैसे सँभालते होंगे और फिर से उसी राह पर आगे बढ़ते हैं। सैल्यूट तो उनकी हिम्मत को करनी चाहिए माँ।"

"हाँ मेरी गुड़िया बात तो बिलकुल सही कही तुमने। कलेजा ही चाहिए नए सिरे से उस पथरीले रास्ते पर कदम बढ़ाना, कोई मजाक नहीं है। एक बार फिर वही खर्चा, वही मानसिक तनाव, वही मेहनत करना और ये सब सहना आसान नहीं है।"

"वही तो माँ तब भी हजारों बच्चे दोबारा करते हैं और उनके घरवाले उन्हें सपोर्ट करते हैं तब पता है इन सबमें सबसे अहम् क्या होता है? बच्चे और उसके माँ बाप का धैर्य। उनकी सहन शक्ति, उनका धैर्य, उनका साहस, उनका सहयोग, उनका मुस्कुराहट के साथ बच्चे के संग हमेशा खड़े रहना, ये कितना जटिल काम है परन्तु वो करते हैं। अपने बच्चे कि ख़ुशी के लिए और अपनी ख़ुशी के लिए करते हैं।"

"हाँ बाबू करना भी चाहिए बच्चे के मनोबल कि इमारत को किसी भी तरह से ढहने से रोकना चाहिए। हर माँ बाप भरसक मुमकिन कोशिश करते भी हैं। अब देखों ना वह कौन लड़की थी जो हमेशा नीचे मिला करती थी हाँ अराजकता उसका इस बार सिलेक्शन हो गया न।

हमेशा कितनी परेशान रहती थी। मगर हिम्मत कभी नहीं हारी वही तुझे कहती हूँ हिम्मत नहीं हारनी है बाकी तो सब संभल जायेगा।"

"हाँ मेरी माँ, मैं तो समझ रही हूँ पर आप कब समझेंगे।"

"नहीं बाबा मै तो ठीक हूँ बस तू ठीक रह और मेरी गुड़िया को हर कदम पर सफलता मिलती रहे यही प्रार्थना करती हूँ।"

"हाँ गुड मॉम, ये हुई न बात।" आज अनुराधा का मन व्याकुल था उसने दिव्यांशी से जो भी बातें कि उससे उसे थोड़ा तो सुकून मिला पर अब भी उसे चिंता सताये जा रही है। जैसे जैसे समय नजदीक आ रहा है उसकी घबराहट और बेचैनी बढ़ती ही जा रही है।

आज उसने आलोक से भी बात कि उसे भी अपनी व्याकुलता के बारे में बताया तब आलोक ने उसे समझाया। "ऐसा कुछ नहीं है, दिव्यांशी मेहनत तो कर ही रही है और होना नहीं होना वह ऊपरवाले के हाथ में छोड़ देते हैं। सब कुछ तुम हम नही कर सकते हैं। जब जहाँ का अन्न खाना लिखा होता है इंसान अपने आप वहाँ पहुंच जाता है ऐसा तुमने भी सुना होगा।"

"सुना हैं न।"

"बस तो देखते हैं न कि अगली बार दिव्यांशी को कहाँ का भोजन मिलेगा।"

"तुम कितनी सरलता से सब कह देते हो न आलोक मगर इतना सरल है नहीं। देखो न इसी हॉस्टल कि दो तीन लड़कियों ने दो बार दे दिया मगर उनका सिलेक्शन नहीं हुआ और वो लोग तो बता रही थी कि उनकी एक सहेली ने दो बार में भी जब सफलता प्राप्त नहीं कि तो हार कर अब राह ही बदल ली। अपनी मंजिल ही बदल डाली। बताओ कितना मुश्किल है और तुम्हें कोई फरक ही नहीं है।"

"अरे बाबा कितना भार लिए बैठी हो तुम, सब अच्छा ही होगा तुम परेशान मत हो नहीं तो बेवजह दिव्यांशी भी परेशान हो जाएगी। वैसे अगले हफ्ते तो मैं आ ही रहा हूँ, मैं देख लूंगा।"

"हाँ बड़े आये मै देख लूंगा। इतने दिनों से जब मैं देख रही हूँ तो आगे क्यों नहीं देख सकती।"

"अरे हाँ! मैं तो भूल गया था कि तुम अब बड़ी हो गई हो। अब तो तुम अकेले सब संभाल लेती हो।"

"अम्म्म, ऐसे क्यों बोलते हो। मै तो मजाक करती हूँ और तुम्हें मौका मिल जाता है।"

“अरे बाबा मैं भी तो मजाक ही कर रहा था। छोड़ो ये सब बेकार कि चिंता फिकर, ईमानदारी से अगर दिव्यांशी ने मेहनत कि होगी तो उसे सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। और नहीं तो कोई कीमत पर वह सफल नहीं हो सकती। समझी मेरी जान।”

“हाँ खूब समझी तुमको और तुम्हारी चिकनी चुपड़ी बातों, दोनों को।”

“ये हुई न मेरी जाने बहार अब चलो जल्दी से मुझे मिठाई खिला दो तो मैं फ़ोन रखु।”

“तुम भी न! नहीं सुधरोगे, बेटियां बड़ी हो गई मगर बाप बच्चा ही है। चलो मैं फ़ोन रखती हूँ।” अनुराधा मन ही मन गुन गुनाने लगी, जैसे न जाने वह आलोक से कितना कुछ कहना चाह रही है मगर बोलकर वह खुद को और आलोक दोनों को कमजोर नहीं करना चाहती है।

कुछ बातें करनी है आपसे
खास मकसद से अहम् विचार से
आज ठंडी पड़ी है अपने आखिरी पड़ाव से
अब काम चलता नहीं हीटर या रजाई से

इन वियोग की घड़ी को
इन दर्द की लड़ी को
सोचा था छुपा लुंगी
चाहा था निभा दूंगी

न अल्फाज़ों का सहारा था
न कलम स्याही का किनारा था
इस मुखड़े की पारदर्शी किताब ने
सब कुछ बयान कर डाला था

आती है हसीं होती है गुदबुदाहट
नादान थे हम बड़े अनजान थे सनम
नाभि के बंद दरवाजे में खो गए हम
इस मुखड़े की छलकती गागर की सच्चाई
को न भाप सके हम

चाहा था इस शीतलहरी की चुभन को
छलनी न करने देंगे मन की चादर को

पर लाली इन कपोलों की
दर्शा गई दास्ताँ
इन सुनी कंपकपाती रातों की।

आजकल बच्चों को पढ़ाने वाले या यूँ कहें उन्हें सफलता का ताज पहनाने की होड़ में जुटे हर माँ बाप को जुदाई और मिलन, पाना और खोना, जीत और हार, उल्लास और विषाद कुछ इन्ही शब्दों से ज्यादा जान पहचान हो रही है। पल में तोला पल में मासा, पैंडुलम की भाँति कभी धड़कन इस दिशा जाये तो कभी उस दिशा। मगर इन सब दद्वो जहत की वजह क्या है? आप यही कहेंगे की बच्चे तो सभी पढ़ते है मगर सबके साथ उनके घरवाले थोड़े ही रहते हैं। ये तो जरुरी नहीं है।

हाँ आपका कहना बिलकुल वाजिब है। मगर किसी किसी के साथ कुछ परिस्थितियां ऐसी बन जाती है की माँ या पिता साथ रहने बच्चों का मनोबल बढ़ाने, वो अकेले नहीं है पूरा परिवार उसके साथ है ये एहसास जो की उसके हौसलों को मजबूत बनाएगा दिलाने उसके करीब रहने उसके पास चले जाते है, कोई ये भी सोच कर शायद रहने की कोशिश करते हैं की उनके होने से बच्चा अकेला महसूस नहीं करेगा। वो गलत भी नहीं है। जो हो सके उसे करने में बुराई ही क्या है। है की नहीं? अनुराधा के मन का संवाद जो खुद उसके मन से चल रहा था न जाने कहाँ जाकर ख़तम हुआ। वह भी न, अचानक कहाँ की कहाँ पहुंच जाती है। उसके ख्याल न हुए कोई हवाईयान हो गए जो पल में मीलों की दूरी तय कर लेते है।

अध्याय : १४
रिश्ताः एक वृक्ष

"सीचों इसे स्नेह के जल से, त्याग के तप से
बढ़ेगा यह इसी बल से, लदा रहेगा हमेशा फूलों और फलों से"

एक बार फिर से रितिका को हॉस्टल में देख अनुराधा ने अपनी ख़ुशी जाहिर करते हुए उसका स्वागत किया, “रितिका जी आप! आखिर आपके पति मान ही गए। अरे पिता का दिल कमजोर अवश्य हो सकता है मगर कठोर कदापि नहीं हो सकता।”

मगर इसके विपरीत रितिका ने बड़ी फीकी मुस्कान के साथ अनुराधा को जवाब दिया, “आप बिलकुल सही कह रही है अनुराधा जी। इतनी सरलता से तो काम नहीं हुआ मगर हाँ हो गया।”

“थोड़ी मुश्किलें तो हर काम में आती है।”

“जी बिलकुल सही कहा आपने।”

“क्या बात है रितिका जी आप कुछ मुरझाई मुरझाई सी लग रही है। जो ख़ुशी जो रौनक आपके मुखड़े पर दिखनी चाहिए थी वह नजर नहीं आ रही है। कोई परेशानी?”

“अरे नहीं थोड़ी थकान है और कुछ नहीं।”

“अच्छा चलिए फिर मिलते हैं।”

“हाँ ठीक है।”

एक दो दिन बाद रितिका ने अनुराधा से कहा “अनुराधा जी अगर आप फ्री हो तो कुछ पल हम साथ बैठ सकते हैं क्या?”

“अरे हाँ हाँ बोलिये क्या बात है रितिकाजी। कुछ तो दिक्कत है तभी आप उदास परेशान लग रही है।”

“चलिए तो सब बताती हूँ।”

दोनों उसी सोफे पर बैठ गई जहां से उनकी दोस्ती शुरू हुई थी और जहां दोनों ने साथ चाय समोसे खाने का विचार भी किया था। आज एक बार फिर उसी जगह मिलकर दोनों प्रफुल्लित हो रही है, क्योंकि दोनों को ही आशंका थी की क्या पता दोबारा मिलना हो या ना हो? औपचारिकता ख़तम कर अनुराधा मुद्दे पर आती है “बताइये क्या बताना चाहती थी आप।”

जिस कारणवश रितिका के चेहरे की रौनक उड़ी हुई थी वो बात अब उसने अनुराधा से कहनी शुरू की “भाईसाहब के कहने का भी कोई असर नहीं हुआ।” घर से सहमति नहीं मिलने के बावजूद रितिका अपनी बेटियों के साथ कोटा में है यह जान कर अनुराधा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। वह अपनी घबराहट को छुपा नहीं सकी और उत्तेजित सी रितिका से कहने लगी “मतलब, बात नहीं बनी?”

“जी नहीं।”

“तब आगे क्या सोचा आपने?”

“सोचना क्या है बेटियों को पढ़ाना तो है ही मगर कैसे अब ये सोचना है।”

अनुराधा रितिका का फैसला जान कर और दुखी होने लगी। “मतलब?” रितिका भी सर पर कफ़न बाँध कर ही घर से आई है, उसके दृढ फैसले तो यही बयान कर रहे हैं।

“वो तो नहीं मानेंगे अब करना क्या है यही सोचना है। या तो बच्चों का भविष्य दाँव पर लगाना है या खुद का।”

“अरे अच्छी बेवकूफ है आप, ऐसे थोड़े ही होता है।” “नहीं होता है तो कैसे होता है वही तो आपसे पूछना है।”

“मुझसे क्यों पूछना है अपने आप से पूछिए न। आपका मन क्या कहता है?”

“मेरा तो मन अभी सिर्फ और सिर्फ अपनी बेटियों के हित में ही सोच सकता है इसीलिए तो आपसे राय मांग रही हूँ। पतिदेव तो साफ़ मना कर दिए की कोटा नहीं जाना है यहां घर पर रहकर अगर पढ़ाई होती है तो ठीक, नहीं तो वाह बलाह। अब आप ही बताइये अनुराधा जी की क्या ये मेरी अकेली की बेटियां है? उनकी कुछ नहीं लगती? इनकी सफलता क्या मेरा ही सपना है उनको कोई मतलब नहीं है। बस हाथ उठा दिया।”

रितिका को इस तरह आग बबूला होते देख अनुराधा ने उसे शांत कराने के विचार से कहा की “आप क्यों राई का पहाड़ बना रही है उन्होंने पढ़ने से थोड़े ही मना किया है उनका कहना भी तो ठीक है अगर वो चाहते है की घर पर रहकर और पास ही किसी विद्यालय से शिक्षा ग्रहण की जाए तो उनका मन रखने में क्या आपत्ति है। कोई जरुरी तो है नहीं की कोटा में पढ़ने से ही पढ़ाई होती है नहीं तो केवल ढोल ही बजते है।”

“वाह अनुराधा जी आप तो दल बदल रही हैं।”

“अरे ऐसी बात नहीं है रीतिकाजी मैं कभी भी नहीं चाहूंगी की आपका घर टूटे। जो काम बिना किसी अनहोनी के हो जाए उससे अच्छा आज के दिन में कुछ नहीं है, ये आपको भी समझना होगा।”

“कैसे समझूंगी, आप ही बताइये घर पर रहकर डॉक्टर इंजीनिअर की पढ़ाई मुमकिन है?”

“मुमकिन नहीं है मगर नामुमकिन भी नहीं है।” आक्रोश से भरी रितिका आज अपने विपरीत कुछ भी सुनने की हालत में नहीं थी। आज उसे उसके खिलाफ बोलने वाला हर इंसान अपना दुश्मन लग रहा था। इसी वजह से उसने अनुराधा को भी खड़ी खोटी सुनानी शुरू

कर दी, “रहने दीजिए अनुराधा जी आपसे बेकार में ही मैं सर खपा रही हूँ। आपकी ऐसी नौबत नहीं आई है न इसीलिए आपको सब ठीक लगता है। परिवार में एक की सफलता के लिए हर एक को सहयोग देना होता है तब कोई अपना मुकाम हासिल कर पता है, ऐसे ही लड्डू नहीं बट रहे होते जो हर कोई ले लेगा। मगर आपको क्यों ये सब समझ में आएगा आपकी तो हर मुराद चुटकियों में पूरी जो हो जाती है।”

“रीतिकाजी अभी आप बहुत गुस्से में है इसलिए आप भला बुरा नहीं देख पा रही है कुछ वक्त दीजिए समय के साथ सब ठीक हो जायेगा।”

“आप तो सलाह न ही दे तो अच्छा होगा। मुझे मुफ्त की सलाह की कोई जरुरत नहीं है,” और सड़ा सा मुँह बनाकर रितिका वहाँ से चली गई। अनुराधा असमंजस में पड़ गई की मैंने कहाँ गलत कहा। घर तोड़ना क्या सही में इतना आसान हो गया है की औरतें जरा जरा सी बातों में इतना उग्र हो जाती हैं की उन्हें भला बुरा कुछ नजर ही नहीं आता है। अनुराधा को तो आज रितिका जी के लिए सहानुभूति हो रही थी। कुछ वक़्त लेने देती हूँ उससे उसका गुस्सा थोड़ा शांत हो जाये तब एक बार फिर उससे बात करूँगी। उसे अपने हँसते खेलते परिवार को यूँ नष्ट नहीं करने दूंगी। नादान है और भोली भी, मगर मुझे यकीं है वह मेरी बात जरूर समझेगी। यही सोच कर अनुराधा ने रितिका को कुछ वक्त अकेला छोड़ दिया।

दो तीन दिन बीत गए मगर रितिका नजर नहीं आई तब अनुराधा को रितिका की चिंता होने लगी क्या बात है वो वापस चली गई क्या? क्या हुआ होगा बताया भी नहीं? अच्छी पागल है, भला ऐसे भी कोई करता है क्या। बाई जी से पूछने पर पता चला की वो इसी हॉस्टल के बगल वाली ईमारत में एक फ्लैट भाड़े पर लेकर रहने चली गई। हे भगवान् इसे क्या हो गया, अपने ही हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रही है। कपास के धागे को भी प्यार से सुलझाना होता है नहीं तो वो सुलझने की बजाये उलझते ही चले जाता है और यह तो जिंदगी का धागा है। मगर इस अबोध को कौन समझाए। बेटियों को तो पता नहीं क्या बनाएगी, अपने जरूर चंडी बन चुकी है।

अनुराधा से जब रहा नहीं गया तो एक दिन वह पता करके रितिका जी से मिलने चली गई। वहाँ का हाल देख कर तो अनुराधा को वहाँ जाने का अफसोस हो गया। रीतिकाजी तो पूरी महिला मंडली ही तैयार कर चुकी है। नारी के साथ अत्याचार के खिलाफ या यूँ कहो बेटियों को शिक्षित होने से रोकने के अपराध की रोकथाम के लिए मोर्चा निकालने की पूरी तैयारी चल रही थी। बाप रे बाप कैसे ग़लतफ़हमी में पड़ कर लोग अपना सबकुछ दाँव पर लगाने को उतारू हो जाते है। आज तो अनुराधा को रितिका पर तरस आने लगा। अनुराधा ने जब

वहाँ का माजरा देखा तो बिना कुछ कहे वह वहाँ से जाने लगी तब मिसेस भट्टाचार्य ने उन्हें आवाज लगाई। "क्या हुआ जी हमसे मिले नहीं और यूँ चल दिए।"

"न कुछ नहीं आप सब व्यस्त है तो मैं क्या बात करती बस इसीलिए।"

अनुराधा की आवाज सुनकर रितिका तुरंत बाहर आई "अरे अनुराधा जी आप आइये न। कैसे हैं?"

"मैं तो अच्छी हूँ मगर लगता है आप अच्छी नहीं है।"

"नहीं तो मैं तो बिलकुल ठीक हूँ या यूँ कहूं तो ज्यादा सही रहेगा की भली चंगी हूँ।"

"हाँ वो तो दिख ही रहा है। ये सब क्या है रितिका जी?"

"अरे कुछ नहीं मेरी दुखद दास्ताँ सुनकर आपका पत्थर का ह्रदय तो नहीं पसीजा मगर और सभी महिलाओं ने मेरा समर्थन किया और इन बहनो ने ही मुझे सलाह दी की मोर्चा निकालने से बात बन जायेगी। तो अब ये भी करके देख लेते हैं। वैसे इन सब मे से बहुत सी मेरी जैसी ही दुखी है। इन सब मर्दों को लगता है की औरत इनकी पैर की जूती है मगर यह इनकी ग़लतफ़हमी है। हम आज की नारी हैं हम झुकेंगे नहीं बल्कि झुकायेंगे।"

"नहीं रीतिकाजी आप तब भी गलत थी और अब भी गलत है। जरा सोचिये की आपके पति आपसे क्या चाहते हैं की आप और आपकी बेटियां उनके साथ रहे, वो आप सब के बिना नहीं रह पा रहे हैं। तो जरा सोचिये वो आप सब को कितना चाहते हैं।"

"अरे अनुराधा जी आप इन मर्दों के मगरमच्छ के आँसू नहीं पहचानते। आपको कभी पाला नहीं पड़ा न तभी आप ऐसा सोचती हैं। हमारा हाल तो इन सब ने समझा। आप के साथ कोई जबरदस्ती नहीं है आप आना चाहे तो वेलकम नहीं तो भीड़ कम।"

"नहीं रीतिकाजी मैं तो आपके गलत फैसले में आपके साथ नहीं हूँ। मेरा फर्ज था आपको समझाना बाकी आपकी मर्जी।" बस इतना बोल कर अनुराधा जी तो वहाँ से चली आई मगर अब भी उन्हें रीतिकाजी पर तरस ही आ रहा था। किस तरह लोग अपना घर तोड़ लेते हैं जैसे तास के पत्तों का बना महल हो।

रोज किस्से सुनने मिलते थे की महिलाओं ने बवाल मचा रखा है। अरे भाई पति पत्नी के झगड़े में सरकार या आम जनता कहाँ से आ गई। ये सही है कुछ भी हो बिल सरकार पर फाड़ देना है, कुछ हुआ नहीं धरने पर बैठ जाना है और कुछ नहीं हुआ तो अन्नसन पर बैठ जाना है। अरे भाई क्यों तो अपनी मुश्किलें बढ़ाना है और क्यों सरकार की। घर के झमेले घर पर ही सुलझाओ न। इस केस में तो कोई सिर पैर ही नहीं है। बेचारे ने प्यार दिखाया तब भी लोग बुरा मान गए। आखिर इस लड़ाई का अंत क्या होगा?

एक दिन और भी महिला उस मोर्चे की बैठक में गई केवल दर्शक बन कर तो अनुराधा से भी नहीं रहा गया सो वो भी पहुंच गई। वहाँ तो खूब दावतें हो रही है। चाय समोसे देख कर तो अनुराधा को दुःख हुआ की ऐसे चाय समोसे खाने होंगे उसने कभी नहीं सोचा था। देखते ही देखते पुलिस ने धावा बोल दिया। चारो ओर भगदड़ मच गई। पुलिस ने माइक पर कह दिया था की दस मिनट दिए जाते हैं या तो ये जगह खली कर दो नहीं तो थाने की जगह भरने में देर भी नहीं लगेगी। सबने हलके में ले लिया, बेचारे पुलिस वाले का नाम था हलके प्रसाद मगर सबने समझने में भूल करदी अब उसी का खामियाजा भरना पड़ रहा है। किसी को अस्पताल का मुँह देखना पड़ा तो किसी को हवालात का। वो तो अच्छा हुआ की चाय समोसे से अनुराधा का मन व्यथित हो उठा तो वो वहाँ से चली गई थी नहीं तो पता नहीं वो आलोक को क्या बताती? फ़ोकट में ही मारे जाते। फिजूल में ही गेहूं के साथ घुन पिसा जाता। अब क्या, किसी से सुनने में आया की रीतिकाजी को ज्यादा चोटें आई है, दाएं पैर की हड्डी भी टूट गई।

अब क्या होगा? कैसे तो वो घर पर किसी को बताएगी और कैसे वो बेटियों को पढ़ाएगी? ये क्या हो गया? अनुराधा को रितिका की करनी पर क्रोध भी आ रहा था और तरस भी, क्या कर डाला उसने। अब इस रायते को जिसने उसे अपनी नादानी में फैलाया है उसे कैसे तो समेटेगी? कैसे वह अपने आप से नजरे मिलाएगी। अनुराधा रीतिका को इतना तो समझ ही चुकी थी की वह नादान है, जोश में होश खो देती है। दिल की साफ़ है यही सोच कर उससे मिलने अस्पताल पहुंच गई। अनुराधा को देखते ही रीतिका शर्म से नजरें नीचे किये आंशुओं में डूबने लगी। अनुराधा ने उसे स्नेह से गले लगाया और यह भी समझाया की “जो हुआ उसे भूल जाओं अब विपद से भरे नाटक के यवनिका का गिरने का वक़्त आ गया है, और समय है उगते सूर्य की रश्मियों को अर्ध्य देने का। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। जाकर अपने पति से माफ़ी मांगो सब एक बार फिर से पहले जैसा हो जाएगा।”

रीतिका का मुख छवि मलिन था, दर्दली आवाज में उसने अनुराधा जी से माफ़ी मांगी साथ में ये भी कहा की “अगर मैं आपका कहा मान लेती तो आज ये दिन नहीं देखने पड़ते। किसी ने ठीक ही कहा है की अपनों से लड़कर कभी भी सुख हासिल नहीं किया जा सकता।” रीतिका के साथ इतना कुछ घट चुका था और उसे अपने किये पर पश्चाताप हो रहा था, जब वो प्रायश्चित करने को तैयार है तो उसे अब क्यों और दुखी करना है। तो अब उसे और ग्लानि में डालना अनुराधा को ठीक नहीं लगा। उसने रीतिका को सामान्य करने की कोशिश की और हलके प्रसाद जी से कहकर मामले को रफा दफा करने के लिए भी कह दिया। अनुराधा ने बस इतना ही कहा की रिश्ते तोड़ना कभी भी सही फैसला नहीं हो

सकता इसलिए जहाँ तक संभव हो उसे सहेजने की कोशिश करना। पति का साथ जीवन खुशाल बनाता है न की बेजान।

अनुराधा रितिका को तो समझा कर हॉस्टल वापस आ गई मगर एक बार फिर वो विचारों में पूरी तरह से डूब गई। वैसे भी कोटा आने के बाद उसका खुद से बात करने का सिलसिला कुछ ज्यादा ही जोरों से से चल रहा है। आज उसके उर में तम के साये ने अधिकार जमा लिया। कैसी विचक्षणता है, कैसी विडंबना, क्या हो रहा है हमें? जब संतोष सेतू टूट जाता है तो इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है।

रिश्तों की डोर बड़ी नाजुक बड़ी अनमोल

प्रेम और विश्वास के मोतियों से
यह डोर सजती हैं सँवरती है
दादी के भजन और बच्चों की बोली
कानों में मिश्री सी घोलती है

जब आती है बारी खींचातानी और मनमानी की
करते है लोग जब बातें आनाकानी की
टूट जाती है डोर, धरे रह जाते हैं बड़े बड़े बोल
रिश्तों की डोर बड़ी नाजुक बड़ी अनमोल

बड़ों को सम्मान छोटों को प्यार
थोड़े दूर थोड़े पास
अपनों का साथ अपनों से आस
ये ही जल रूपी गुड़मन्त्र है
जो रिश्तों के वृक्ष को हरा भरा बनाता है

क्यों इत्ती सी बात इत्ते बड़े भेजे में अटती नहीं
क्यों अपनों की है बातें अपनों को जचती नहीं
क्यों रिश्ते टूटते हैं, क्यों परिवार बिखरते हैं
क्यों अपनों से रूठते है, क्यों अपनों से चिढ़ते हैं
यह क्यों लोग समझते नहीं
रिश्तों को सहजते है मीठे मीठे बोल
रिश्तों की डोर बड़ी नाजुक बड़ी अनमोल

परिवार से बड़ा कोई खजाना नहीं
यह अनमोल सत्य सबने जाना नहीं
फलों से लदी टहनियां झुक जाती है
अपनी इस कमजोरी पर फिर भी इतराती है
प्रकृति भी हमें रिश्तों को सहेजना सिखलाती है
हरदम हमें यह बतलाती है
रिश्तों को अहंकार के तराजू में मत तोल
रिश्तों की डोर बड़ी नाज़ुक बड़ी अनमोल

अध्याय : १५
सफलता की कुंजी

एक साल पहले

ध्यानमग्न अनुराधा विचलित होने लगी तभी किसी की आवाज ने उसकी मुद्रा भंग की। अनुराधा जी आपके लिए नीचे फोन आया है। अचानक हुई आवाज से अनुराधा चौंक गई, नीचे क्यों? मेरा मोबाइल, अरे ये क्या बैटरी ख़तम हो गई? लगता है बंद हो गया। अच्छा आती हूँ। आलोक ही होगा, मेरा फोन नहीं लगने से परेशान हो गया होगा। आलोक से बात करते-करते अनुराधा के चेहरे पर परेशानी की लकीरें नजर आने लगी। संयोगवश उसी वक्त संगीता का वहां से गुजरना हुआ और अनुराधा के चेहरे के उड़ते रंग ने उसे आगे जाने नहीं दिया। असमंजस में पड़ी संगीता के जहन में सवालों ने पहाड़ खड़ा कर दिए, ऐसा क्या हुआ होगा कि अनुराधा इतनी दुखी हो रही है? उससे तो खड़ा ही नहीं हुआ जा रहा है। अब क्या हुआ, अनुराधा क्या करेगी? आलोक के पास जाएगी या दिव्यांशी के पास रहेगी? दिव्यांशी की मुश्किलें बढ़ेगी या वह सब संभाल लेगी? हमेशा हसती खिलखिलाती रहने वाली अनुराधा की ऐसी हालत देखकर संगीता के मन में अनेक सवाल उठने लगे।

आखिरकार उसने अनुराधा से पूछा कि क्या हुआ है आपको? तबियत तो ठीक है ना आपकी? अनुराधा के गाल गीले होने लगे उसे देख कर संगीता भी घबराने लगी। क्या बात है अनुराधाजी? अनुराधा है कि बस रोये ही जाए। किसी से कुछ कहने की कोशिश भी कर रही है तो वह कह ही नहीं पा रही है। उसके जीवन के धरातल पर तो जैसे वज्रपात हुआ हो। कुछ तो बताइये अनुराधाजी। अनुराधा की तबियत बिगड़ने लगी। उसे चक्कर आने लगे और अचानक वो बेहोश हो गई। तुरंत डॉक्टर को बुलवाया गया। एंजायटी से अनुराधा का ब्लड प्रेशर लो हो गया था। उसे होश आते ही फिर से वह वैसे ही फूट-फूट कर रोने लगी। ''आज उसे जो मिला वह कभी किसी दुश्मन को भी न मिले।

जो मेरे पास था
कितना खास था
मेरा रह ना सका
कोई और उसका हकदार था

मन उदास था
कुछ बेबस था
लाचार था, परेशान था
क्यों हो ना सका वो मेरा?
जो मुझे इतना खास था

माना कोई और उसका हकदार था
पर मेरा तो किसी पर ऐतबार था

जीने का वो जरिया था
खुशियों का दरिया था
देखने वालों का नजरिया था
जैसे दिनु काका का वो हरिया था
सावन का महीना था
औरत का गहना था
बेसकीमती नगीना था
पर वो मेरा अपना था

कुछ भी कहो वो मेरा खास था
अब सोचो तो केवल दर्द का एहसास था

जो मेरे पास था…

अनुराधा की तबियत खराब देख उसे रोते बिलखते देख कुछ ही देर में वहाँ भीड़ लग गई। हॉस्टल की और भी महिलाएं वहाँ जमा हो गई। “रोहित, रोहित।” जब सुबकती अनुराधा एक सांस रोहित को याद किए जा रही थी तो संगीता से सहन नहीं हो रहा था उसने कहा की “कौन है ये रोहित और क्या हुआ है उसको? तबियत खराब है क्या उसकी? कुछ तो बताइये।”

“अब कभी भी उसकी तबियत खराब नहीं होगी।”

“मतलब? पहेलियाँ मत बुझाइये अनुराधाजी, शंका ने ऐसे ही खून सुखा रखा है। कुछ तो बताइये।”

संगीता को बार बार पूछते देख अनुराधा ने बताना शुरू किया की “रोहित मेरा भतीजा है। उस लड़के को कोटा में ज्ञान का सागर मिला या नहीं कहना मुश्किल है हाँ इतना जरूर पक्का है की उसे बहकने का हर वो साधन मिल चुका था जिससे उसे कोसों दूर होना चाहिए था। उसके बहकते कदम ने उसे जीवन के ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया जहां से उसका लौटना कठिन हो गया था। उसने भ्रांतियों के आकर्षण में पड़कर खुद को हानि में डाल दिया। इंसान की ही कमजोरी होती है जो उसे विनाश की ओर खींचती रहती है और वह सम्मोहन विद्या के उस जाल में सम्मोहित होता चला जाता है। अभिमन्यु ने जो गलती

की वही इससे भी हुई, चक्रव्यूह में जाने का रास्ता तो इसे मिल गया मगर वापस आने का यह ढूंढ ही नहीं पाया या कहो इसे मालूम ही नहीं था। इसी "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" का ही परिणाम आज पूरा परिवार भुगत रहा है।"

"हुआ क्या है अनुराधाजी ? आपके वचन तो किसी अनिष्ट की ओर संकेत कर रहे हैं।"

"हाँ संगीताजी आपने सही समझा, अनिष्ट ही हुआ हैं, घोर अनिष्ट। मेरे कलेजे के टुकड़े टुकड़े हो गए संगीताजी।" विलाप कलाप में डूबी अनुराधा से यह भूचाल असह्य हो रहा था, वह बोले ही जा रही थी जैसे वह अपने वश में ही ना हो।

कहने लगी कि "मेरा लाल मुझे छोड़ कर चला गया। वह इस जालिम दुनिया को अलविदा कह गया। वह मुझसे इतनी दूर चला गया जहां से उसे मैं वापस कभी नहीं ला पाऊंगी और न ही कभी उसे डांट भी लगा सकूंगी। अब उस तक मेरी कोई आवाज भी नहीं पहुंच सकती है संगीताजी। नहीं तो मैं उससे जरूर पूछती कि उसने मुझे छोड़ कर जाने की सोची भी कैसे? अब मैं किसे दुलार करूँगी? मैं तो राह देख रही थी कि जिस दिन मेरा बच्चा इंजीनियर बन कर मेरे सामने आएगा उस दिन मैं कैसे कैसे उसे दुलार करूँगी। मगर यह तो मैंने कभी दुःस्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उसकी मृत देह को मुझे देखना होगा।" इतना कहते ही अनुराधाजी की सिसकियाँ भरने लगी।

उन्हें संभालना मुश्किल हो गया। रोहित पर उनका स्नेह कुछ ज्यादा ही था, उनको खुद को लड़का तो था नहीं, उसे ही ये अपना बेटा मानती थी। किसे पता था कि जब ऊपर वाले ने ही नहीं दिया तो इंसान कैसे ले सकता है। शिवानी ने जब ये सच सबको बताया तो अनुराधाजी के प्रति सभी को बहुत अफसोस और सहानुभूति हुई। अनुराधाजी रोती बिलखती, विषाद में डूबी बताने लगी कि किस तरह से कोटा में आने के बाद वह अपनों से दूर हो गया।

अपना मानसिक संतुलन बनाए रखने में असमर्थ अनुराधाजी की आवाज ने जोर पकड़ लिया, उन्होंने चीखते हुए कहा कि "समझ से बाहर हैं कि कोटा क्या है "समस्या है या समाधान।" क्या है ये जगह? कुछ लोगों को देखती हूँ तो लगता है कि कोटा सभी की समस्याओं का समाधान है मगर आज एहसास होता है कि सिर्फ और सिर्फ समस्याओं की जड़ है और कुछ भी नहीं है ये जगह।"

"खुद को संभालिये अनुराधाजी।"

"कैसे संभालूं संगीताजी, मेरा रोहित जो कि कोटा डिग्री हासिल करने आया था उसने ६ मंजिला इमारत से छलांग लगा ली।"

“क्या?” एक साथ सबकी चीखें निकल गई।

अनुराधाजी तो काँप रही थी, अवसाद से उनकी शारीरिक और मानसिक हालत बिगड़ती ही जा रही थी। हाँ, सही सुना आपने, मेरे लाल ने उस नाटक के यावनिका को गिरा दिया जिसने उसके जीवन को निर्विकार और नीरस कर दिया था। किस कदर उसका दम घुट रहा होगा कि उसने खुली हवा में नए शरीर में साँसें लेना ज्यादा बेहतर समझा। इंसान यह क्यों नहीं समझता, क्यों नहीं जान पाता कि इस जीवन में इस जीवन से बढ़कर और कुछ भी नहीं होता। "जान है तो जहान है" लोग ये क्यों भूल रहे हैं? वो यह नहीं समझ रहे कि कुछ भी पाने का जूनून इस हद तक ठीक नहीं है। इसके आगे भी जीवन है एक सुनहरा जीवन, एक उज्ज्वल भविष्य।

पूर्ण रूप से टूट चुकी अनुराधा ने सबसे कहा कि “इसके पीछे की वजह जानना चाहेंगी आप सब। क्यों उसने इतना बड़ा कदम उठाया? क्यों उसने इतनी निर्ममता से इतनी कुरूपता से अपने जीवन का नाश कर दिया? किस तरह एक मासूम ने प्राणांत का फैसला ले लिया? कारण वही है जो हर अखबार की सुर्खियां बटोर रहा है, वही जो हर चैनल पर दिन में न जाने कितनी बार सुनाया जा रहा है, वही जो औरतों के गुटुर्गू का अहम् मुद्दा है, वही जो आज के दिन सबसे ज्यादा चिंतनीय विषय बन चुका है। उसे ड्रग्स की बुरी लत लग चुकी थी और अब जब परिवार वालों को भनक लग गई तो उसपर पाबन्दी लगाई गई जिसका परिणाम आज सबके सामने है।” इतना भयावह सत्य सुन कर उर्मि भी भावना में बहने लगी उसके मुँह से भी अवसाद और क्रोध से भरे शब्द फूटने लगे। “अनर्थ घोर अनर्थ। इसे हम अनदेखा नहीं कर सकते। ना जाने आखिर उसके साथ क्या हुआ होगा? क्यों उसने ड्रग्स का सहारा लिया होगा? आखिर उसकी क्या मनोदशा होगी की वह बर्दास्त ही नहीं कर पाया? इतना वीभत्स कैसे, कब, क्यों और क्या उसके साथ हुआ होगा कि उसने इतना जटिल फैसला ले लिया? मैं बोलती हूँ उसके ही साथ क्यों ये तो आजकल कितनों के साथ हो चुका है और अगर जल्दी इसकी रोकथाम नहीं की गई तो आगे भी यूँ ही चलता रहेगा, मगर इसके पीछे की असली वजह क्या है कोई नहीं जान पा रहा है। या यूँ कहो कि सही वजह तक पहुंच ही नहीं पा रहा है। सही मायने में आज के दिन जो इतने आत्महत्या के केस सामने आ रहे हैं उसके पीछे की असली वजह की जड़ तक जल्द ही पहुंचना होगा नहीं तो पता नहीं कितनी माओं की गोद सूनी होने वाली है।”

अनुराधा भी नीर बहाए जा रही थी और उसकी हाँ में हाँ मिलाए जा रही थी। सभी महिलाएं ने उर्मि का समर्थन किया। आज बच्चों की किस परिस्थिति से गुजर रही है यह जानना बहुत जरुरी हो रहा है। क्या उन पर पढ़ाई का दबाव ज्यादा डाला जा रहा है या उन्हें अपनी विफलता का गम सता रहा है? ऐसा तो नहीं कि उनको परिवार की तरफ से सही सहारा

नहीं मिल पा रहा हो या परिवारवालों से दूरी उसका अकेलापन उस मासूम को निगल रहा हो? कहीं ऐसा तो नहीं कि बच्चा सोच कर कुछ और आता है और उसे मिलता कुछ और है? पढ़ाई का भार उससे सहन नहीं हो पाता होगा और घरवालों से कह नहीं पाता होगा, परिवारवाले उसे जबरदस्ती पढ़ने को कहते होंगे?

यह भी तो हो सकता है कि कोई प्यार व्यार का भूत चढ़ा हो। इस दुखदाई घटना का हल तो निकलना ही होगा, मगर कैसे?

“यह अनापेक्षित था,” अनुराधा बिलखती हुई कहने लगी। “तुमलोग को मैं क्या बताऊँ ऐसा भोला भाला बालक था, उसकी मासूमियत तो ऐसी की उसको दुलार करने पर मजबूर कर दे। मेरा बस चलता तो मैं तो सारा वात्सल्य उसपर उड़ाल देती। मुझे याद नहीं है कि कभी किसी भी बात के लिए उसने जिद्द की हो या किसी भी बात के लिए किसी से झगड़ा किया हो। यहां तक कि भूख लगने पर कभी खाना भी नहीं मांगता था। किसी ने उसे भोजन डाल दिया तो खा लेता,नहीं तो सूखा सा मुँह लिए बैठा ही रहता। गोलू मोलू सा, दूध जैसा सफेद था वह। धूप में निकल जाता तो उसके गाल टमाटर से लाल हो जाते थे । मैगी के लच्छों से घुंघराले बालों में सजीला लगता था। मैं तो उससे हमेशा यही कहा करती थी कि मेरा कान्हा, मेरा लड्डू गोपाल तू इतना सुंदर क्यों है अब मैं तेरे लिए इतनी सुंदर दुल्हन कहाँ से लाऊंगी। तो हस के टाल देता था। मैं उससे यही कहती कि मेरा राजा बेटा मेरे लिए सुंदर सी बहु तू अपने ही ढूढ़ लेना मुझे परेशान मत करना। मुझे क्या पता था कि वह मेरी परेशानी ऐसे कम कर जाएगी। मेरा दुर्भाग्य देखो मैं इधर व्यस्त हो गई और कितने दिनों से उसकी सुध भी नहीं ले पाई। मुझे यकीन है अगर मैं उससे बातें करती रहती तो वो ये कदम कभी नहीं उठाता। मेरी लापरवाही का ही नतीजा है ये। मुझे क्या पता था कि उसकी माँ उसका ख्याल ही नहीं रखेगी नहीं तो मैं उसको अकेला ना छोड़ती।” रोहित के साथ जो भी हुआ अनुराधा उसके लिए खुद को दोषी मानने लगी। अब मामला और पेचीदा होने लगा। अनुराधा की ग्लानि उसकी सेहत पर असर डालने लगी। उसे सभी ने समझाने की भरसक कोशिश की मगर वो है की खुद को सजा देने पर उतारू होने लगी।

हम इंसान भी ना जाने किस मिट्टी के बने हैं, प्यार में पड़ कर या ममता के हाथों मजबूर होकर वर्तमान परिस्थिति की वजह से खुद को दोषी मान बैठते हैं, और ऐसे कठघरे में खुद को खड़ा कर देते हैं जिसमें भूत भविष्य सभी का हिसाब लगा लिया जाता है। आखिर क्यों? क्यों परिस्थिति ऐसी बनी, क्यों कोई हादसा हुआ, क्यों इतना गहन नुक्सान हुआ, इसी सोच में डूब कर जो जीवित है, उसे दोषी करार देकर उसके जीवन को नरक बनाकर हमें चैन मिलता है? जो हुआ वह होनी थी या जो हुआ हो गया, अब क्या करना है कि ऐसा और

कभी किसी के साथ न हो, इस बात पर विचार करना उचित होगा या किसी को दोषी करार देना?

अनुराधा की गमगीन बातें सुन कर वहाँ मौजूद सभी महिलाओं का ह्रदय संताप से भर गया। उनके ह्रदय में हलाहल भर गया। कैसी प्रभु की लीला है, यहीं आकर इंसान हार जाता है। सभी सदमे में थे और अनुराधा के दुःख की तो सीमा ही नहीं थी। आज उनकी असहनीय पीड़ा कोई नहीं बाँट सकता है। कोई उसे कैसे तो ढांढस बँधाये। उससे क्या कहे, ये कहे की लेखा को कौन मिटा सकता है, या ये कहे की उसकी मर्जी के आगे किसकी चली है या ये कहे की जो हुआ उसे भूल जाओ। क्या कहना चाहिए? है कोई जवाब, है कोई रास्ता जिससे अनुराधा की और उस बच्चे के घरवालों की खुशियां फिर से लौटाई जा सके, या कोई ऐसा तेल या बाती बनी है जिससे इनके खानदान का चिराग फिर से प्रज्वलित हो सके?

नहीं है न, हो भी नहीं सकता, जैसे तीर से निकला हुआ कमान वापस नहीं आ सकता, जैसे मुँह से निकली हुई बात वापस नहीं ली जा सकती ठीक वैसे ही शरीर से निकली आत्मा वापस उस शरीर में प्रवेश नहीं कर सकती। यह सत्य है कटु सत्य है। मगर उस माँ को कौन समझाए जिसकी गोद सूनी हो गई जिसका जीवन बेजान हो गया। अब वह किसके नखरे उठाएगी, किसे डाँटेगी, किसे पुचकारेगी, अपनी गोद में रख कर किसका माथा सहलाएगी, कौन इसकी सूनी गोद को भरेगा, कौन इसे सारा सारा दिन आवाज लगाएगा, कौन इसके खानदान को आगे लेकर जाएगा, है कोई जवाब? नहीं है न, हो भी नहीं सकता। किसी के भी पास नहीं हो सकता।

बेचारी के जीवन पर जो वज्रपात हुआ है उसकी गूंज इसके जीवन को झकझोरती रहेगी और कोई कुछ नहीं कर सकेगा। अनुराधा की असहनीय पीड़ा देख कर संगीता आपे से बाहर हो गई। उसका स्वभाव भी कुछ ऐसा ही है उससे किसी का दुःख देखा नहीं जाता और यह तो दुःख ही नहीं दुखों का सैलाब है। असहाय पीड़ा देख , दारुण कष्टदाई हादसे को सुन अवसाद से भरी संगीता के सब्र का बाँध टूट गया। इतने दिनों से जो कुछ भी उसके मन में चल रहा था आज उसने भी सब उगल डाला - क्या वास्तव में अंधा वही होता है जिसकी आँखें नहीं होतीं, या जिसे दृष्टि का वरदान नहीं मिला हो? मेरा मानना है कि पैसे के पीछे भागने वाले या अपने लालच में अंधे हो चुके लोग भी नेत्रहीन ही कहलाते हैं, क्योंकि उन्हें पैसों के सिवाय कुछ नहीं दिखता। चाहे वह प्रेम में अंधे हों या हवस में खोए हुए लोग, सभी के पास आँखें होते हुए भी वे जन्मजात अंधे की श्रेणी में आते हैं। सच्चाई यह है कि कुछ को प्यार ने अंधा बनाया, कुछ को लालच ने, कुछ को वासना ने, और कुछ को जीवन की कठिनाइयों ने तो कुछ को जितने के जुनून ने।

हम कृत्रिम रूप से अंधे बन जाते हैं और अक्सर वह नहीं देख पाते जो हमारे चारों ओर हो रहा होता है, जिसे देखना हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है। हम सिर्फ उस पहलू को देखते हैं जिसे हम देखना चाहते हैं, जो कुछ समय के सुख तो प्रदान करता है लेकिन बाद में हमें गहरे दुःख की खाई में ढकेल देता है जहाँ से निकलना नामुमकिन सा लगता है। मुश्किलों से आँखें चुराने या उन्हें अनदेखा करके हम उनसे बच नहीं सकते। यह एक कड़वा सच है कि मुश्किलें हमेशा हमारे साथ चलती हैं, जैसे हमारी परछाई। लेकिन इंसान अक्सर भूल जाता है कि मुश्किलों से भागकर उनसे छुटकारा नहीं पाया जा सकता। क्या समस्याओं को अनदेखा करके उन्हें समाप्त किया जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने में अनेकों "क्या" सामने आते हैं। माँ बाप यह क्यों नहीं देख पाते कि उनकी संतान किस कष्ट से गुजर रही है? क्या दुःख उसे खाया जा रहा है? क्या है जिसके पीछे उसे भागने पर मजबूर तो कर दिया गया मगर क्या वह उस लायक है? यह जानने की कोई कोशिश भी क्यों नहीं करता? बच्चा किस मुश्किल दौड़ से गुजर रहा है या वह किस मुश्किल में फंस गया है यह कोई क्यों नहीं देखता?

अनुराधा और संगीता की बातें सुनकर वहाँ उपस्थित हर सख्स सकते में आ गया। संगीता ने जोश में आकर कुछ फैसले ले लिए और अपने साथ सबको जोश में लाने में जुट गई - यह क्या? नहीं! यह तो सही नहीं है। आज उनके साथ हुआ कल को हमारे साथ भी तो हो सकता है। हमें कुछ करना चाहिए, इस तरह से हमें चुप रहकर सब कुछ सहन नहीं करना चाहिए। संगीता की बातों से बहुत सी महिलाओं को जोश आ गया। वे लोग अनुराधा के साथ थी। मगर अभी भी कुछ महिलाएं थीं जो हिम्मत नहीं जुटा पा रही थीं, तो उन्होंने औरों को भी समझाया कि ये सब हमारे बस का नहीं है। हम सभी महिलाएं क्या कर सकती हैं? जब बड़े-बड़े महारथी विफल होकर चले गए तो हमारी क्या मिसाद है।

उस हादसे को कुछ दिन बीत गए। अनुराधा इस दुःख से उबर ही नहीं पा रही थी। उसकी पीड़ा औरों को पीड़ित करने लगी। अनुराधा का उफनता आक्रोश उसे घड़ी घड़ी उद्वेलित करता। ऐसा लगता मानो उसके आंसू अब सभी की आँखों को अपना बसेरा बना रहे थे। बात ही कुछ ऐसी थी जिसे भूला पाना इतना आसान नहीं था। इस हादसे ने हर महिलाओं के मन में एक डर को जन्म दे दिया। ऐसी कुरूपता जो किसी के साथ भी हो सकती है का डर असहाय होने लगा। वकील होने के साथ साथ संगीता एक माँ भी थी, उससे चुप रहकर ये सब देखा नहीं जा रहा था। रोज अदालत में ना जाने उसने कितनी बार आवाज उठाई है, आज असल जिंदगी में जब आवाज उठाने की जरुरत है तो वो भला चुप कैसे बैठ सकती है।

उसने पहल की, उसकी जिद्द और साहस देख शिवानी भी आगे आई। इस तरह कुछ करने की चाहत अपने बच्चों को सुरक्षा देने की सोच ने हर माँ को जगा दिया। इस तरह एक-एक कर कुल पांच महिलाओं ने इंसाफ की लड़ाई में अपना अपना योगदान देने का निर्णय लिया। अब तो अनुराधा को भी शामिल कर लिया गया। उसके बिगड़ते हालात में इंसाफ की लड़ाई ही उसके इलाज की वजह बन सकती है। उसके रोहित को इंसाफ मिल जाए इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है।

अभी भी बहुतों ने इनको रोकने की कोशिश की, इनको समझाने की चेष्टा की मगर अब कौन सुनने वाली थी। अब इन सब बातों का कोई असर नहीं होने वाला था। कभी आपने चिकना घड़ा देखा है जिसपर तेल या पानी कुछ नहीं टिकता, वैसे ही ये प्रतिशोध में भरी महिलाएं हो चुकी थीं। जिन्होंने भी संकल्प ले लिया है वो अब तो पीछे हटने वाली नहीं हैं। जब संगीता ने कदम बढ़ाए तो अनुराधा ने भी साथ दिया और इस तरह कुल पांच महिलाएं ने संकल्प लिया कि इस बला को तो जड़ से मिटा कर ही दम लेंगे। संगीता की बातों से जोश में आने के बाद, अनुराधा और अन्य महिलाएं संघर्ष के खिलाफ उनकी आवाज उठाने में साथ देने लगीं। उनकी इस नेक क्रिया से वहां मौजूद सभी लोगों में एक नई उम्मीद की किरण जागृत हुई। एक महिला तो भावना में इतनी बह गई कि इस नेक काम के लिए तहे दिल से अनुराधा के समूह की तारीफ करने लगी--आपकी इस वार्ता में उजागर होने वाले सवाल और जागरूकता से भरी बातें जनसामान्य को सोचने पर मजबूर करेगी। इससे समाज में जागरूकता और संज्ञान बढ़ेगा और उत्तराधिकारी लोगों को अपनी जिम्मेदारियों का सामना करने के लिए प्रेरित करेगी।

अब शुरू होता है एक संघर्ष। एक जननी जो अब बनेगी संघारिणी। अब सब प्रतिवाद करेंगी। अब प्रतिघात का समय आ चुका है। वैसे भी काफी दिनों से जो इनके इर्द-गिर्द घटित हो रहा था वो कहीं न कहीं मन के किसी कोने में जगह तो बना ही रहा था। आज उसे पैर जमाने का मौका मिल ही गया। वैसे भी बहुत अनदेखा कर चुके, बहुत आँखें चुरा ली 'अब नहीं तो कब' यही शोर इन महिलाओं के अन्तःमन से उठ रहा है और हर बार की तरह इस बार भी ये वही गलती नहीं करेंगी। 'देर आये दुरुस्त आये', जब आँखें खुल चुकी हैं तो अब नहीं देखा तो फिर कब? अब तो आर या पार। संगीता ने पूरे आत्मविश्वास के साथ बिगुल बजाया, सुंदर, स्वच्छ, मनमोहक, मनभावन इस शिक्षा की काशी को मलिन नहीं होने देंगे बल्कि आजाद करेंगे इसे हर उस बला से जो इसकी स्वच्छता के आड़े आएगा। कोटा को 'शिक्षा की काशी' ही रहने देंगे किसी को भी इसे 'आत्महत्या का गढ़' नहीं बनाने देंगे। हम भी देखें कि अब कौन अपने नापाक इरादों में कामयाब होता है। “खाते हैं ये कसम अब पीछे नहीं हटेंगे हम।”

जब संगीता ने पूछा कि कहाँ से शुरू करें? "हलके प्रसाद" उर्मि ने जोर डाल कर कहा। रितिका के केस के सिलसिले में इंस्पेक्टर हलके प्रसाद से थोड़ी जान पहचान हो चुकी थी और आलोक की उससे दोस्ती भी है तो काम आसान हो गया। अब जब एक माँ ठान ले तो क्या नहीं कर सकती। जिसे खतरा महसूस हो रहा है अब तो संभल जाओ। “जब औरत ने ठानी है तो अब कैसे चलनी किसी की मनमानी है।”

हर काम का एक करता धर्ता होता है, उसी तरह इस काम की भी भागदौड़ शिवानी को सौंपी गई। सबको सुचारु रूप से एक साथ लेकर चलने का काम अब उसका था। उसने सबसे राय मांगी, सबसे पहले तो कैसे करना है यह तय करना होगा ताकि हमारी बच्चियों को कोई तकलीफ न पंहुचे। “एक काम करते हैं, बच्चियां जब क्लास चली जाएगी तब हम काम करेंगे। हाँ” “यह ठीक रहेगा,” उसके विचार से सब सहमत हो गए। इस तरह विचार विमर्श कर इस सोफे पर ही रोज सुबह ७ बजे मिलने का तय करके सभी महिलाएं अपने अपने कमरे में चली गईं। इस प्रकार, समूह के सभी सदस्यों के साथ काम साझा करते हुए, हर किसी को उसकी जिम्मेदारी दी गई। अब वे समुदाय की एकजुटता में आगे बढ़कर अपने उद्देश्य की दिशा में कदम रखेंगी। अनुराधा तो अभी भी सदमे में ही जी रही थी। बस फर्क इतना हैं कि पहले किसी के भी सामने रो लेती थी अब छिप छिप कर रोती है। आलोक भी इसे फोन में ही हिम्मत दे पाया क्यूंकि उसका भैया और भाभी के पास जाना ज्यादा जरूरी था।

दूसरे दिन तय समय पर उसी जगह सब इकट्ठा हो गई। अलग-अलग सबको जिम्मेदारी दे दी गई। शलोनी को रात में पहरेदारी करने को कहा गया वो उसमें माहिर थी, संगीता को हर आने जाने वाले की हरकत पर नजर रखना है और अनुराधा अपनी दूर की बहन मिहिका को बुला रही है ताकि उसे विद्यार्थी बना कर उस झुण्ड में शामिल किया जा सके क्यूंकि इनके चेहरे तो सब जाने पहचाने हैं, इनमें से तो कोई नहीं जा सकती है। हाँ, मिहिका को सख्त हिदायत दी गई है की वो इनमें से किसी से भी नहीं मिलेगी, जो बातें होंगी सब फोन में। ताकि कोई भी सुराग नहीं छोड़ा जा सके। क्या पता कौन कहाँ से नजर रख रहा हो। कौन जानता है की कौन भेदी मिला हो इसलिए सभी काम बड़ी गोपनीयता से अंजाम देने होंगे।

हलके प्रसाद जी ने भी एक हवलदार को बिना वर्दी के इस हॉस्टल के बाहर तैनात कर दिया, ताकि कोई भी बात होने पर हम उसकी मदद ले सके और उसके जरिये हलके प्रसाद जी तक खबर पंहुचाई जा सके। शिवानी सबको कार्य प्रणाली से अवगत करते हुए कार्यभार सौंप रही थी। जाल तो तगड़ा ही बुना गया है, अब देखना यह है कि कौन फंसता है, शिकारी या शिकार स्वयं। दो तीन दिन यूँ ही बीत गए, कोई सबूत हाथ नहीं लगे। मिहिका भी उस

गली में आने जाने लगी, मगर कोई उसे भाव ही नहीं दे रहा है। ऐसे तो कुछ हाथ नहीं लगेगा। जब सब हताश और निराश होने लगे, तब अनुराधा को पुरानी बात याद आई।

एक बार फिर से वह सिहर उठी। उसने जो देखा और सुना था, आज सबको बताया, कि कैसे उसने उस फैशन वाली आंटी को किसी से बातें करते सुना था। उसकी बातों से सभी डर गए, कि उनके इर्द गिर्द न जाने क्या-क्या चल रहा है। सबने मिलकर यही फैसला लिया कि सबसे पहले उस आंटी को ही निशाना बनाया जाए। अब उस फैशन वाली आंटी का नाम एफ-ए रख दिया गया। बार-बार इतना बड़ा नाम किससे बोला जाए। वैसे भी आज कल शार्टकट का जमाना है। आज से एफ-ए के ऊपर नजर रखनी शुरू की गई और यह काम अनुराधा को नहीं दिया गया। अगर वह नजर रखती तो तुरंत ही भांडा फूट जाता, उससे होने का नहीं था।

इतने दिन हो गए परन्तु अभी भी वह ज्यादा रोती है और कोई भी काम सही तरह से कम ही कर पाती है। वह बस साथ दे रही है, इतना ही काफी है। यह काम शिवानी अच्छी तरह से कर सकती थी। इस लिए यह जिम्मा उसी को दिया गया और उसने करके भी दिखाया। दो दिन में ही उसने एक धमाकेदार खबर सुनाई जिसको सुनकर हर कोई जोश में आ गया। फ-ए किसी गिरोह की सदस्य है, यहां वह बच्चों को गुमराह करने के लिए आई है। और आज रात वो लोग किसी बड़े खतरनाक काम को अंजाम देने वाले हैं। किसी मोहल्ले का नाम बता रहे थे जो वह सही से सुन नहीं पाई मगर इतना पक्का है कि आज रात वो लोग ठीक १२ बजे यहां से निकलेंगे। बस उसी समय उनका पीछा करना है।

सभी महिलाएं एक साथ बोल पड़ीं, रात को वो भी १२ बजे इतनी लेट, आधी रात को तो हम नहीं जा सकते हैं। हाँ एक काम हो सकता है की हलके प्रसादजी को खबर कर दी जाए, आज तो वो ही देख लेंगे। सबको बात जच गई। अब सबको रात का इंतजार था जल्दी से कुछ हाथ लगे। जैसे तैसे रात भी बीत गई अब सुबह से ही हलके प्रसादजी के फ़ोन का इंतजार हो रहा था, क्या पता रात में क्या हुआ होगा? फ-ए को तो गिरफ्तार ही कर लिया गया होगा। “अरे ये क्या, फ-ए चकमा देकर निकल गई। माजरा क्या है हलके प्रसादजी सही सही बताइये,” महिलाओं ने एक साथ बेचारे दरोगाजी को सवालों के कटघरे में खड़ा कर दिया।

उन्होंने बताया कि “खबर बिल्कुल पक्की थी उनका आज रात कोई बहुत बड़ा प्लान था। मेरी टीम सही समय पर वहाँ पंहुच गई मगर कोई हाथ नहीं लगा। बस जो पाउडर वो लोग साथ लाये थे वो हाथ लग गया। आज अगर इतनी बड़ी मात्रा में लाया गया यह पाउडर बाजार तक पंहुच जाता तो सोचिए कितना बड़ा नुकसान होता। तो चलिए इस बार माल

हाथ लगा है अगली बार अपराधी भी हाथ लगेगा।" शिवानी ने सोचा चलो छोटी ही सही मगर जीत तो हुई इससे सभी में जोश बना रहेगा। वैसे भी युद्ध में सबसे ज्यादा जरुरी क्या होता है? यही कि सिपाही हमेशा जोश में रहे। युद्ध की पहली जरुरत ही सिपाही की हिम्मत और हौसला होता है। जो आज सभी में भरपूर दिख रहा था।

अनुराधा ने एक नई राह सुझाई कि वो और संगीता भेस बदल कर उस गली में दो चार चक्कर लगाएगी ताकि बाजार का हाल जान सके और मिहिका से उसी गली में झगड़ा करने का नाटक करेगी ताकि उसे अकेला पा कर शायद कोई उसकी मदद को आगे आये। कुछ अलग हटके सोचना होगा। मिहिका को कहा गया कि तुम उधर आने जाने वाली लड़कियों से या जरूरी समझो तो लड़को से दोस्ती बढ़ाओ। तुम बहुत दुखी हो परेशान हो तुम्हारे सर में दर्द रहता है ऐसा ही कुछ उनके सामने प्रदर्शित करो ताकि वो लोग तुम्हें दवाई के बहाने ही सही, मेन आदमी तक लेकर जाए। मिहिका ने वैसा ही करना शुरू किया, मानना पड़ेगा मिहिका एक्टिंग में माहिर थी। उसकी बेटी ने तो उसे मना किया था कि आपसे नहीं होगा बेकार में आप ओवरएक्टिंग कर दोगे मगर बात जब बच्चों के जीवन की हो तो ओवर कुछ भी नहीं हो सकता। मिहिका अपनी चाल में कामयाब हुई, परन्तु यह कामयाबी सिर्फ सीढ़ी के एक पायदान तक की थी। कोई न, शुरुआत तो हुई, बढ़ता एक एक कदम मंजिल तक पंहुचा ही देता है, बस बढ़ते कदम रुकने नहीं चाहिए। दोस्ती हुई, जगह का पता चला, कैसे एक दूसरे तक पंहुचाया जाता है वह भी मालूम हुआ मगर इन सबके पीछे का सरगना कौन है अभी यह नहीं मालूम हुआ तो अभी कैसे धावा बोल सकते हैं।

सब ठीक चल रहा है, जल्द ही गुनाहगार हमारे हाथों में होगा, अनुराधा ने संगीता और शलोनी को फ़ोन में बताया। खुशी की एक किरण तो नजर आई। और इधर अनुराधा और शिवानी भी काम पर लग गई। एक दिन उन दोनों ने मिहिका से झगड़ा मोल ले लिया जो कि उनके प्लान का हिस्सा था और उनका तीर ठीक निशाने पर लगा। झगड़ा बढ़ते देख कुछ लड़कों ने बात संभाली और मिहिका को अकेले पाकर उससे सहानुभूति दिखाई। मिहिका ने भी कमाल की एक्टिंग की जिससे वो लड़के उसके झांसे में आ गए। अब मिहिका उनके साथ उठने बैठने लगी। मगर उस मोहल्ले में झगड़ा करने से अनुराधा और शिवानी काफी डरी हुई थी। पता नहीं आगे क्या हो? कौन उनके पीछे लग जाए? उनको किसी भी तरह का खतरा बढ़ सकता है। उलझे विचारों से मन घबराने लगा। आज तो दोनों को ही नींद नहीं आई। चाह कर भी ऐसी निराशजनक बातें वो दोनों किसी से भी नहीं कर सकती थीं। एक फूंक लगने से ही सभी के हौसलों का पुल एक ही झटके में टूट जाएगा, इसका अंदाजा सबको है। प्रेम और जोश में जो कदम इन महिलाओं ने उठाए हैं, वो खतरों और संकटों से भरा है और अब पीछे लौटने का रास्ता भी बंद कर दिया गया है। जिस राह पर सभी चल

पड़ी हैं, वो वानवे हैं, इतना तो सबको पता है। और साथ ही इतना भी विश्वास है कि घबराहट और डर के साथ एक-एक कदम बढ़ाने की इनकी कोशिश इन्हें सफलता के मुकाम तक अवश्य लेकर जाएगी।

इधर अनुराधा और शिवानी ने भी एक औरत का पता लगाया जो उन्हें बाजार में कहाँ क्या मिलता है बता सकती थी। बस उसी का हाथ पकड़ कर ये दोनों भी भोलेपन का नाटक कर उनके अड्डे तक पंहुच गईं। उस अड्डे पर पंहुचने पर पता चला कि वहाँ भी एक औरत ही है जो बेचना खरीदना करती है। अनुराधा और शिवानी उसे तुरंत पहचान गईं। यह तो फ़.ए है। अनुराधा और शिवानी की उससे कुछ घंटों तक बातें हुईं, मगर क्या यह किसी को नहीं मालूम चला। उनका कमरा ही ऐसा था कि न ही कोई आवाज़ बाहर आ सकती थी और ना ही कोई बात अंदर जा सकती थी। बस वापस हॉस्टल आकर यही पता चला कि अब ये लोग वहां से माल उठाएंगी और बाजार तक लेकर जाएंगी। इनकी बातें सुनकर सभी महिलाएं अचंभित सी उन्हें ताकने लगीं, उनका मुँह खुला का खुला रह गया।

“अब ये सब तुम दोनों क्या करने वाली हो। क्यों अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी मार रही हो।”

उन सब ने अनुराधा को समझाया कि ये सब करना किसी खतरे को बुलावा देना हो सकता है।

“हम कोई मंझे हुए खिलाड़ी तोड़े ही हैं। हम सब या तो एक गृहिणी हैं या ज्यादा से ज्यादा कोई दफ्तर में काम करने वाली आम महिला हैं। मगर तुम दोनों लग रहा है ये बात भूल गई हो और खुद को 'व्योमकेश बक्शी' समझने लगी हो।”

तब अनुराधा ने उन्हें समझाया कि न ही एक गृहिणी किसी से कम है और ना ही एक आम महिला किसी से कम हो सकती है। जब अपनी औलाद पर बात आ जाती है तब वो हर बला का सामना कर सकती है। एक औरत ही अबला है तो सबला भी है, चंडी है तो काली भी है, इतिहास गवाह है कि जब जब बात अपनों की आई तब तब औरत ने कमान संभाली, हम माँ दुर्गा का महिषासुर के साथ हुआ द्वंद्व युद्ध नहीं भूल सकते जिसमें उन्होंने एक नहीं कई राक्षसों को मौत के घाट उतारा, रक्तबीज जैसे दानव को भक्षक बन निगल गई, शुम्भ निशुम्भ को भस्म कर दिखाया, ऐसे अनगिनत प्रमाण हैं कि जब माँ ने अपने संतान की रक्षा की, उन्हें हर संकट से उबारा तब हम कैसे हार मान सकते हैं। झाँसी की रानी हो या रानी पद्मावती, दुर्गावती हो या अहिल्याबाई हमें किसी की कुर्बानी नहीं भूलनी चाहिए। इतिहास ने सिखाया, सनातन धर्म ने हमेशा सिखाया कि "अन्याय सहना अन्याय करने के बराबर ही

दोषपूर्ण है"। हमें आवाज़ उठानी ही होगी, शंखनाद हो चुका है, अब अपने शौर्य का परिचय देने का वक्त आ चुका है। अपनी संतान की रक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

अनुराधा की जिद्द देख जैसे तय हुआ काम को सब उसी तरह से अंजाम देने लगे। अनुराधा और शिवानी उस औरत से वह पाउडर लेती और बाजार में जहां बोला जाता वहाँ पंहुच कर आती, इधर मिहिका उन लड़कों के साथ उठती बैठती कोई ना कोई सुराग खोज ही निकालती और इधर हॉस्टल में संगीता और उर्मि और भी महिलाएं चौकन्नी रहती ज़रा सा भी खतरे का आभास होते ही वो लोग सतर्क हो जाती और पूरे दल को सतर्क कर देती। शिवानी ने आज के हालात पर चिंता व्यक्त करते हुए अनुराधा से बातें की, मामला इतना सीधा नहीं है जितना कि सबने सोचा था। कुछ और हथकंडे अपनाने पड़ेंगे। मगर करें तो क्या करें? अनुराधा भी चिंतित हो रही थी, वह भी जो महसूस कर रही थी

उसने वही कहा “देखो ना इन सब में कितने ही दिन निकल गए। अब मिहिका भी वापस जाने को छटपटा रही है। अगर ऐसा हो गया तो मुश्किल हो जाएगी।” सब एक जुट होकर उस मिशन पर काम कर रही हैं, मगर टेढ़ी खीर है, और पापड़ बेलने पड़ेंगे।

शिवानी ने भी कहा कि “जितना सरल दीखता है उतना सरल होता कहाँ है। सरल तो रोटी बनाना भी लगता है मगर सरल होता कहाँ है। सबकुछ इतनी आसानी से हो जाए तो हर कोई नहीं कर ले। कुछ तो बात होगी तभी न आज तक कितनों ने इस गुत्थी को सुलझाना चाहा मगर मुँह की ही खा कर गए।”

“हाँ शिवानी, बिल्कुल सही कह रही हो तुम आज इन दृढ़ संकल्प से भरी महिलाओं के लिए भी सुखद कुछ भी नहीं है। तभी तो देखो जिंदगी कैसी कैसी परीक्षाएं ले रही है।”

इस बार अनुराधा ने हार नहीं मानी। कुछ भी हो जाए, अब वह पीछे नहीं हटेगी। अब क्या, अब तो बन्दूक से गोली निकल चुकी है, अब चलाने वाला भी कुछ नहीं कर सकता है। उसने सबको एकजुट होकर धैर्य से काम करने की सलाह दी। इस बार जीत की पुकार चारों ओर से सुनाई दे रही है और उस पुकार को गूंज बना कर ही दम लेना है। बस फिर क्या था, एक नए जोश और उल्लास के साथ एक बार फिर विश्वास के सेतु पर चढ़ कर ये माएं आगे बढ़ने लगीं। इस बार तो इंस्पेक्टर हलके प्रसाद भी पूरे जोश में आ गए।

अनुराधा और शिवानी जो माल बाजार में पंहुचाती थीं, उसका जिक्र मिहिका उन लड़कों से करने लगीं। थोड़ा बढ़ा चढ़ा करके कि ये महिलाएं अच्छा कमा रहीं हैं, इनकी तो चल पड़ी, वगैरह वगैरह। अब यह बात उनके सरगने तक पंहुचने में देर नहीं लगी। फिर क्या था, घायल शेर की तरह बौखलाया हुआ उनका सरगना खुले में आ गया। खरगोश की बातों में आकर उस कहानी वाले शेर ने कुएं में छलांग लगाने की जो गलती की, आज वही गलती

इस सर्कस के शेर ने भी कर डाली। फिर क्या था, इसी दिन का तो इंतजार था कि कब इनका सरगना हाथ लगे, आज वह दिन आ ही गया। उसने उस औरत से सौदा करना चाहा। जिस दिन के इंतजार में सभी महिलाएं कांटा डालकर ताक लगाई बैठी थीं, आखिर में वह दिन आ ही गया। आखिर में बड़ी मछली कांटे में अटक ही गई। अब समय आया था सही दाव खेलने का। ज़रा सी चूक, उलटे लेने के देने पड़ सकते थे। एक तरह से सर्जिकल स्ट्राइक की ही तैयारी चल रही थी। आज शाम को ही मिलने का तय किया गया। जगह सरगना खुद बताएगा, ठीक है, बकरा हलाल करने के पहले उसे सजा-धजा कर तैयार किया जाता है, वैसे ही आज सरगना की भी बातें मान कर इसे खुश रखना होगा।

बताई गई जगह पर सब तैयारियाँ हो चुकी हैं। हलके प्रसाद के आदमी चारों तरफ तैनात कर दिए गए हैं। कोई भी सिपाही वर्दी में नहीं आएगा, यह सबको पहले ही सूचित कर दिया गया था। अब अनुराधा का दल भी चमक-धमक के साथ वहाँ पंहुच गया ताकि लगे कि सब को उत्सुकता है। माल लेने के लिए बैचेनी दिखानी पड़ेगी। अब आई वो औरत जो यह मीटिंग फाइनल करेगी। अब जब सब कुछ जैसे सोचा था वैसे होने लगा, तब लास्ट चांस चलने के समय में ही घबराहट के मारे अनुराधा को पसीना आने लगा। ऐरकण्डिशन में पसीना पसीना होना डर को दर्शाता है। अपना डर अनुराधा छिपा नहीं सकी। अब यह डर और घबराहट उस सरगना ने भांप ली। उसने पकड़ ली कि कुछ तो चल रहा है।

खतरे का आभास होते ही सरगना ने आखिरी समय में चाल बदल डाली। और यह सब गड़बड़ हुआ अनुराधा के पसीने की वजह से। मीटिंग को अधूरा छोड़ कर सरगना जाने लगा, सिग्नल बज चुका था, जिससे चारों ओर खतरे की घंटी बजने लगी। प्लान बी तो किसी ने सोचा नहीं था, मगर समय पर तो हिम्मत दिखानी ही पड़ेगी। अब चूक गए तो फिर कभी नहीं हो पाएगा। हलके प्रसादजी भी अपने साथियों के साथ अंदर आ चुके थे। माना कि विपक्षी दल ताकतवर था मगर इस बार महिलाओं ने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली थी। ऐसा तगड़ा जाल बुना था कि दुश्मन कहीं से नहीं निकल सकता था। हाँ, अगर किसी चूहे से दोस्ती कर रखी होती तो शायद आज काम आ जाता। इतने दिनों से हलके प्रसादजी भी युद्ध स्तर पर तैयारियां कर रहे थे, अब जब कुछ कर दिखाने का समय आया तो उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। बिगड़ते हालात को देखते हुए महिलाओं को वहाँ से सुरक्षित निकाल लिया गया और चारों तरफ से घेराबंदी करते हुए दुश्मनों को दबोच लिया गया। बहुत कोशिश की, धमकियाँ पर धमकियाँ, चिल्लाना-मारना, क्या नहीं किया। सभी तरह से हाथ-पैर मार लिए मगर अबकी बार हलके प्रसादजी के चंगुल से दुश्मन नहीं बच सका।

किसी ने ठीक ही कहा है कि भाई, कभी एक माँ से पंगा लेने की भूल मत करना। कभी किसी को कम मत आंकना, अब चाहे नाम से हो या काम से, बेचारे हमारे हलके प्रसादजी

जिनके नाम से सब धोखा खा जाते हैं। इतने दिनों की मेहनत और सबके साहस और आत्मविश्वास ने उस गिरोह के सरगना को जल्द ही जेल की कालकोठरी में बंद कर दिया। उस सरगना को पकड़ने जब पुलिस उसके अड्डे पर गई तो वहाँ बच्चे की हालत देख कर दिल छलनी छलनी हो गया। वो बेसुध एक अलग ही दुनिया में पंहुच चुके थे, जहां से उनका लौट कर आना नामुमकिन सा लग रहा था। वो तो भला हो इन महिलाओं का, जिन्होंने कोशिश की तो आज कितनों की जान बच गई, कितनों के घर का चिराग जलता रहा और कितनों की बेटियाँ आज एक बंद कमरे में जीवन बिताने से मजबूर होने से बच गईं।

जब सब विजयी होने की खुशी से सराबोर थे तब हलके प्रसादजी और अनुराधाजी ने फ-ए को धन्यवाद दिया तो सभी महिलाएं अचंभित सी उन्हें देखने लगी। अब जब सब कुछ अच्छी तरह सम्पन्न हो गया तब सच्चाई बताने में कोई खतरा नहीं है यही सोच कर हलके प्रसादजी ने बताया कि फ-ए उनकी ही तरह एक पुलिस अधिकारी हैं और अनुराधाजी ये बात जानती थी। उस दिन जब अनुराधाजी और शलोनीजी उनसे मिलने उनके कमरे में गई थीं जहाँ घंटों बातें हुई थीं उसी दिन उन्हें भी सच्चाई मालूम हुई थी, और उसी दिन से शुरू हुआ था वो नकली माल का खेल। नकली? हाँ, नकली। आगे का किस्सा अनुराधाजी ने बताना शुरू किया "वो कोई ड्रग्स नहीं था वह तो सिर्फ पीसी हुई चीनी थी तभी तो हलके प्रसाद जी ने उस दिन कहा था कि माल तो हाथ लग गया मगर मालिक भाग गया, इसीलिए कहा था ताकि आप सब का जोश यूँ ही बना रहे और हमारे बीच की बात बाहर न जाए।

इस बार जरा सा भी चांस नहीं ले सकते थे इसलिए कुछ बातें गुप्त रख कर ही काम किया गया। अब जैसे देख लीजिए कि आज तक हमारी महिला मंडली में से किसी का भी चेहरा दुश्मन कभी नहीं पहचान सकता। हमने भेस बदलने का जो दिमाग लगाया वो बिलकुल सही था। सांप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी। हमारा ये मिशन ''बच्चे'' गुप्त था और गुप्त ही रहेगा। इस मिशन की सफलता का सारा श्रेय हलके प्रसादजी और उनकी साथी लावण्या, हाँ उनका नाम लावण्या है, को जाएगा और इतनी बड़ी सफलता का फल भी उन्हें मिलने वाला है। सरकार की तरफ से उनको प्रमोशन और मेडल दिया जाएगा।

आज मतवाला हुआ गगन
उमड़ घुमड़ होके मगन
गरजे बरसे देखो छमा छम, छमा छम
ढोल नगाड़े बजे ढमा ढम, ढमा ढम
शीतल मारुत बहे आज सर-सर, सर-सर
अवनि भी झूमे नाचे थर-थर, थर-थर

स्वर्णिम सा सूरज चमके आज चमा-चम, चमा-चम
नविन ऊर्जा का सार लिए संग-संग, संग-संग
तम के साये को परे हटाता हट-हट, हट-हट
उषा के आलोक से हृदय करता धक-धक, धक-धक,
मुकुर में देख खुद को चारुलता सी जीत
इतराये बलखाये गाये मधुर गीत

अध्याय : १६
अर्जुन बनो, अभिमन्यु नहीं !

"गरज बरस की धुन पर लहरों ने नृत्य किया
तूफानों में खेवइये ने पतवार को थाम लिया"

आज अनुराधा ने अपने रोहित को श्रद्धांजलि अर्पित की। व्यस्तता के दिनों के बाद, कुछ करने की इच्छा से भरी अनुराधा ने अब अपने आप को संबोधित किया। अब जब उसने रोहित को इंसाफ दिया है, तो उसकी आत्मा फिर से उसे याद करने में उलझी हुई है। उसका अभाव अभी भी अनुराधा के दिल को चुभता है, जो उसे रोहित और ऐसे हजारों लोगों के विनाश के कारण को स्मरण कराता है। उसकी नामौजूदगी आज भी अनुराधा को कचोट रही है। अब उसका रोहित इस विशाल दुनिया के किसी भी कोने में नहीं है, ये एहसास ही उसे झकझोर देता है।

करोड़ों की आबादी वाली इस दुनिया में कोई अपना हमारे साथ नहीं है, कहीं नहीं है, किसी कोने में नहीं है जब ये बात ह्रदय में हिचकोले लेती है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। रोहित और उसके जैसे हजारों इंसान के विनाश के कारण को आज इन महिलाओं ने जड़ से ख़तम कर दिया। यह इनका मानना है, कल्पना और यथार्थ में यही तो फर्क है। आज तो सिर्फ एक ही गिरोह ख़तम हुआ है मगर अभी भी कहीं न कहीं लेन देन चल रहा होगा। कोई लूट रहा होगा तो कोई लुटा रहा होगा। कोई रो रहा होगा तो कोई रुला रहा होगा। कोई इस दुनिया से रुक्सत हो रहा होगा तो कोई पश्चाताप में डूब रहा होगा । इस दीमक को जड़ से तो ख़त्म करना मुश्किल ज़रूर है मगर इतना ज़रूर कह सकती हूँ कि कोशिश करने से नामुमकिन नहीं है। जिस तरह से बूंद बूंद से घड़ा भर सकता है तो बूंद बूंद करके घड़ा खाली भी तो किया जा सकता है। इसके लिए सबको मिलकर चेष्टा करनी होगी।

कुछ बातों का ख्याल माँ-बाप को भी रखना होगा। उन्हें इस बात का ख़ास ख्याल रखना चाहिए कि उनके बच्चे क्या बनना चाहते हैं और उसके लिए वे क्या कर रहे हैं। बच्चे की रूचि और काबिलियत के आधार पर ही उसे आगे का मार्ग प्रसस्त कराना चाहिए, कहीं यह ना हो कि जोश-जोश में बच्चा कोई भी फैसला ले ले। यह भी ना करें कि अपनी इच्छाओं, जरूरतों या सपनों को उनपर धोप दें। बच्चों को कभी भी यह एहसास नहीं कराया जाए कि उनके घरवाले उनपर कितना खर्च कर रहे हैं या कितनी मुश्किलों से उन्हें पढ़ा रहे हैं। घरवालों द्वारा उठाई गई इन्हीं दिक्कतों का बोझ ही तो उस मासूम को ज्यादा दबाने लगता है। स्नेह, ममता, दुलार, और सबसे अहम कि आप हर समय उनके साथ हैं कि डोर से उस मासूम को बांधे रखने की प्यार भरी कोशिश हर माँ-बाप को करनी चाहिए और बच्चों को अकेला दूर दराज के शहर में एकदम से नहीं छोड़ देना चाहिए। फोन के माध्यम से ही सही उनसे हमेशा जुड़े रहना चाहिए। कम दिनों के अंतराल में ही उनसे मिलते रहना चाहिए ताकि अगर हवा का रुख बदले भी तो सही समय पर उसका अंदेशा हो सके। हवा का रुख नहीं भी बदले तब भी मिलते रहने से, बातें करते रहने से बच्चों में अपने घरवालों के प्रति प्रेम और लगाव की भावना बनी रहती है जिससे उनका ध्यान बेकार की चीजों में नहीं जाता।

बच्चों का मनोबल बढ़ाते रहना चाहिए, "मन के हार हार है मन के जीते जीत" यह शायद सबको मालूम होगा। तो फिर क्यों न इसी बात का ख़ास ध्यान रखते हुए बच्चों के मन का विशेष ख्याल रखा जाए। जब उनका मन उनका हृदय प्रफुल्लित रहेगा, सकारात्मकता से सराबोर रहेगा, कुछ करने की चाह से लबालब रहेगा, हमेशा प्यार और स्नेह से भरा रहेगा, दृढ़ और मजबूत रहने में हमेशा सक्षम होगा तब भला कैसे उन्हें आत्महत्या जैसा कुविचार अपने आवरण में ले पायेगा। उन्हें ये एहसास दिलाते रहना चाहिए कि उनके साथ उनका पूरा परिवार है। एकता में ताकत होती है यह उन्हें जताना चाहिए। इसके लिए समूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। बच्चों को सही मार्ग प्रस्त करवाने के लिए उनके परिवार और माता-पिता की भूमिका का महत्व अत्यंत है। बच्चों को सही मार्ग पर ले जाने के लिए उन्हें प्रेरित करने और समर्थ करने की जिम्मेदारी भी माता-पिता को संभालनी चाहिए। इसके लिए उन्हें उनके साथ बने रहना चाहिए और उनके सहयोग में खड़े होना चाहिए। ध्यान देने वाले और प्रेमभरे वातावरण में बच्चों को प्रेरित करने से वे स्वतंत्र और सकारात्मक सोच विकसित करेंगे, जो कि उनके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

किनारों पर बैठ मौजों को देखा करते थे
गहराई बहुत है हमेशा यही सोचा करते थे
डर का आतंक कुछ इस तरह छाया करता था
एक डुबकी लगाना भी असंभव हुआ करता था

थोड़े जुनूनी अगर हम भी हो जाते
कुछ करने की चाहत को हम भी सुलगा पाते
तो हम भी उस सीप के मोती को पा जाते
शायद जिसपर हमारा ही अधिकार था
मगर हमें कहाँ खुद पर ऐतबार था

अब तो वह उस बेफिक्र मतवाले की हो गई
जिसने उसे अपना लिया, अपने डर को भगा कर
थोड़े हिम्मत और जुनून को जगा कर।
काश ऐ दिल तू भी समझ पाता
एक छलांग उस दरिया में लगा पाता
"हिम्मतें मर्दा तो मददे खुदा" कोई यूँ ही नहीं कहता
एक बार खुद पर और उस करतार पर यकीन तो करता
आज तेरी भी तकदीर का ताला खुला होता

आज तू भी सिकंदर-ए-तकदीर और आज़ादे हिन्द होता।

ये कविता बच्चों के लिए ही है। बच्चों में केवल चाहत को सुलगाने की जरुरत होती है। बच्चों को खुद में उस भावना को जगाना है जो उनमें उत्साह भरे न की मायूसियत लाये। इसके लिए बच्चों को भी कुछ सावधानियां बरतनी चाहिए जैसे की अगर मुश्किल राह चुनी है तो सफर आसान कैसे मिलेगा। रास्ता चुना है कच्चा पगड़ंडी वाला, गड्ढों से भरा और उम्मीद लगाई है हाईवे की समतल सपाट सड़कों की, जिसपर बड़े मजे से फर्राटेदार जीवन की गाड़ी दौड़ जाये तो सोचो जरा, यह कैसे मुमकिन होगा। अगर मंजिल प्राप्त करनी है तो यह तो आप भी अच्छी तरह जानते ही होंगे कि चलना आपको ही होगा। ऐसा तो कभी नहीं सुना होगा कि किसी के बदले अगर दूसरा चलकर आगे जाए तो पहले को वहाँ तक पंहुचाया जा सकता है इसीलिए खुद को अगर सफलता चाहिए और अगर मंजिल प्राप्त करनी है तो खुद को ही परिश्रम करना होगा। हाँ जब कठिन सफर पर चल रहे होते हैं तो कई बार दुविधा की घड़ी आन पड़ती है। असमंजस में पड़ने की वजह से सही-गलत की राह नहीं समझ आती। ऐसे में कोई है जो आपकी मदद कर सकता है - वो हैं आपके माता-पिता। भगवान् ने हमें हर मुसीबत से बचाने के लिए कवच के रूप में हमें माता-पिता के रूप में वो अनमोल तोहफा दिया है जिन्होंने अपनी संतान के लिए ब्रह्मास्त्र देकर इस धरती पर भेजा है। जिनके पास हर बला का तोड़ होता है। वो चाहें तो अपनी संतान को खरोच भी ना आने दे।

सबसे अहम् बात यह है कि आपके घरवाले, आपके जन्मदाता, आपके पालनकर्ता आपके शुभचिंतक होते हैं। उनसे ज्यादा दुनिया में कोई भी आपको प्यार नहीं कर सकता है और आपको उनसे ज्यादा और कोई भी नहीं समझ सकता। वो ही आपको मुश्किलों से निकाल सकते हैं। एक वो ही है जो आपको सही राह दिखा सकते हैं। उनपर आप आँखे मूँद कर विश्वास कर सकते हैं। माता पिता की महत्ता को भगवान् गणेशजी ने पहले ही प्रमाणित कर दिया है। देवताओं ने हमेशा माता पिता को सर्वोपरि बताया है। भगवान् गणेशजी ने अपने माता पिता भगवान् शिव और माता पार्वती की परिक्रमा कर कहा कि उनके लिए तो उनके माता पिता ही समस्त दुनिया है। अब हमें और किस प्रमाण की जरुरत है। तब बताइये की कहाँ रुकावट है की आप अपनी मन की बातें उनसे करने में असमर्थ हो रहे हो। दिव्यांशी ने भी एक बार अपने माता पिता से बातें साझा ना करने की गलती की। समय रहते ही उसे अपनी गलती का एहसास हो गया और उसने उस गलती को सुधार भी लिया और कभी दोहराने की गलती भी नहीं की।

एक बात और, इंसान गलती करता ही है शायद वह गलतियां करने के लिए ही बना है मगर समझदार वह होता है जो उन गलतियों को कभी दोहराता नहीं है। गलतियां करना कभी गलत नहीं होता है उन गलतियों को दोहराना गलत होता है। गलतियों से सिख कर फिर उठना एक सफल योद्धा की निशानी होती है। दिव्यांशी ने तो सिख ले ली मगर रोहित को मौका नहीं मिला। उसके साथ क्या हुआ? क्यों उसे आलोक के जैसा कोई कृष्ण नहीं मिला? यह तय करे कौन? आपको अपने माता पिता से खुल कर बातें करनी चाहिए। संतान और माता-पिता के बीच एक विश्वास का रिश्ता होता है जो उनके रिश्ते को गर्मी प्रदान करता है। इस गर्मी को हमेशा बनाये रखने के लिए सब को मिलकर कोशिश करनी होती है। माता-पिता को भी बच्चों से ऐसा रिश्ता बनाना होता है कि उनके बच्चे उनसे कोई भी बात साझा करने में हिचकिचाए नहीं। इस अटूट विश्वास को उन्हें भी अपनी ममता से कमाना होता है और बच्चों को भी हाथ बढ़ा कर विश्वास की इस डोर को अपने कर्तव्यों और कार्यों से मजबूत बनाना चाहिए तब कहीं बात बनती है। विश्वास से ही एक सच्चे और मजबूत रिश्ते की नीव पड़ती है।

ऐसा कोई भी मार्ग नहीं है जिसमें रुकावटें नहीं होंगी, जिसमें उतार-चढ़ाव नहीं आएंगे, जिसमें पत्थर या कांटे नहीं मिलेंगे, शायद ही कोई बंदा होगा जिसे जीवन भर सुख सेज मिलती होगी, और न ही आम जीवन में डोरीमोन का कोई एनीवेयर डोर होता है जिसके पार सब कुछ आसानी से मिल जाता है। ये सब सिर्फ कहने की बातें हो सकती हैं कि पलक छपकते ही सुनहरे सपने सच हो गए। हकीकत में तो अपने सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, ना जाने क्या क्या सहना पड़ता है, कितना कुछ खोना पड़ता है, कितने त्याग करने होते हैं तब जाकर सफलता मिलती है। इसलिए कहते हैं कि दृढ संकल्प करके ही आगे बढ़ना होगा और हिम्मत कभी नहीं हारना होगा। आपको आगे बढ़ना होगा हर बाधाओं को हटाकर, हर रुकावटों को भेद कर आगे बढ़ना होगा और मंजिल पाने की चाह को हमेशा जगा कर रखना होगा। आप भी सोच रहे होंगे कि कितना कुछ करने को कह तो दिया मगर कैसे करना है यह भी तो कोई बताए। आइये हम बात करते हैं इस “क्या” को "कैसे" में बदलने की।

आज आकृति की बात आपको बताती हूँ जिसे पढ़ कर आपको क्या को कैसे में बदलने में मदद मिलेगी - बात उस समय की है जब पूरी दुनिया मौत का ऐसा तांडव देख रही थी जो सबकी सोच से कहीं अधिक विनाशकारी था। इतना वीभत्स था इतना प्रलयंकारी था जिसकी अग्नि आज तक मध्यम मध्यम सुलग ही रही है। "कोरोनाकाल" नाम लेते हुए भी रूह काँप उठती है। हर तरफ मौत नाच रही थी, हर कोई त्राहि त्राहि कर रहा था। कभी नहीं सोचा था कि दुनिया रुक भी सकती है, दुनिया माचिस की डिबिया की तरह भी बन जाएगी

जिसके अंदर लोग तीली की तरह कैद हो जाएंगे। तीली बाहर निकलेगी तो आग ही लगेगी। इस कदर के हालात बन जाएंगे कभी जहाँ में आ ही नहीं सकते थे।

पृथ्वी के सर पर काल को मंडराते देखा था जो किसी को भी निगल सकता था। अस्पतालों में बिस्तर खाली नहीं, शमशान में शवों को जलाने की जगह नहीं, कब्रिस्तान में दफ़न करने की इजाजत नहीं, लाशों के ढेर ऐसे लगे जैसे सब्जी तरकारी रखी गई हो। मन में ऐसे ऐसे भयानक विचारों की आवाज़ बढ़ गई कि मन व्याकुल ही रहता। लोग कहते कि इस कालभैरवी के जाने के बाद जब लोग घरों से निकलेंगे और एक दूसरे से मिलेंगे तो अचंभित से देखेंगे और सबसे पहले यही पूछेंगे कि अरे भाई तुम भी बच गए? देखो मैं भी बच गया। अपनों के खोने के दुःख के साथ अपनों से मिलने की खुशी जैसी मिश्रित भावनाओं के साथ ही अब जीवन बढ़ेगा। ऐसे डरावने और भयानक संकट की घड़ी में लोग घर को लौट रहे थे।

पहली बार था जब सबकी एक ही सोच थी कि अपनों के बीच पंहुच जाए ताकि मौत भी आये तो कम से कम अपनों के बीच तो हों। ऐसे में रितेश भी अपने घर लौट आया। अपना काम घर से करने की सुविधा के साथ। उस विपदा की घड़ी में सब कुछ उथल पुथल ही हो रहा था। काम हो या पढाई सब कंप्यूटर पे। जिससे शरीर की अकड़न और दिमाग की जकड़न सब सीमा पार जा रही थी। जिससे हर कोई चिड़चिड़ा रहा था। ना काम में मन लगे ना पढाई में जिसका नतीजा शिकायतों और नुकसान से पूरा हो रहा था। बच्चे माता पिता की नहीं सुन रहे थे और कर्मचारी अपने बॉस की।

कुल मिला कर सारी अर्थव्यवस्था ही बिगड़ गई। रितेश अपनी छोटी बहन (आकृति) को खूब समझाता कि उसे समय का ध्यान रखना चाहिए मगर वह किसकी सुने। उसे तो मोबाइल से सारा सारा दिन चिपके रहने की आदत जो थी। इस मोबाइल की दोस्ती ने आकृति को पढाई से कोसों दूर कर दिया और ऐसी कुसंगति के करीब ले गया जो उसे अपनों से भी दूर कर रहा था। अब उसे माँ का टोकना भी खटकता और पिता का समझाना भी। अपनों से दूरी ने आकृति को बात बात पर झूट बोलना भी सीखा दिया। परीक्षा के परिणाम आने पर उसने घर में किसी को नहीं बताया। फेल होने पर वाजिब था कि इनाम तो कोई नहीं देता तो बताने का क्या लाभ। इस तरह कब आकृति बुराई के दलदल में धंसती ही चली गई उसे खुद एहसास नहीं हुआ। जब तक समझ पाती तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अब अपनों से भी वैसा रिश्ता नहीं रहा कि वो अपने दुःख उनसे कह पाती। अपने में घुटती, अपने ही रोती और हमेशा दुखी सी चिड़चिड़ ही करती रहती।

माँ कई बार पूछती पिता कितना ही समझाते मगर अब आकृति को ग्लानि ने मार डाला। उसे लगता कि घर पर किसी को भी बताने से बात बिगड़ जायेगी। उसकी यही गलती उसे

और नुक्सान पहुंचाने लगी। जिस लड़के ने उसकी अभद्र तस्वीरें ली थी वह उसे डराने लगा। आकृति उसकी मांगें पूरी करने की हर कोशिश करती मगर उस लड़के का पेट था ना कुआँ भरने का नाम ही नहीं ले रहा था। कई दिनों तक ऐसे ही चला। घरवालों को बता नहीं सकती बाहरवाले से कह नहीं सकती करे तो क्या करे? सब दरवाजे बंद हो जाने से उसके जीवन की नैया डोलने लगी। आकृति ने तंग आकर खुद का ही नुक्सान करना चाहा। देर से ही सही मगर समय रहते उसे समझ आ गया कि इस प्रतिकूल परिस्थिति में कौन है जो उसे इन संघर्षों से निजाद दिला सकता है। आखिर एक दिन आकृति अपनी माँ के आँचल में सर रख कर फुट फुट कर रोने लगी तभी सभी उसके कमरे की ओर भागे। आज हिम्मत कर उसने अपनों से अपने दुःख बाँट ही लिए।

आज उसने हिम्मत कर अपने मन को उन सभी कुंठित विचारों से आजाद कर दिया जो इसके ह्रदय के साथ साथ इसके दिल दिमाग को भी कैदी बना रहे थे । आज उसने जो किया उसे बहुत पहले कर लेना चाहिए था। उसके दर्द आज आंसुओं के माध्यम से बह निकले। एक शिशु की भांति आकृति अपनी माँ की गोद में रोती ही जा रही थी । अपनी मासूम बच्ची, मंजुल सुमन सी जो कोमल मुकुल सी थी कभी की ऐसी दुर्दशा देख माँ का कलेजा मुँह को आने लगा, पिता का ह्रदय विचलित होने लगा, एक भाई का क्रोध ज्वालामुखी का रूप लेने को उबलने लगा। परिस्थितियां इतनी कुरूप हो जाती हैं और हालात बद से बदतर बन जाते हैं जिस कारण इंसान अपनी असलित भूल कर एक कठपुतली की भाँती उसके अनुरूप कार्य करने लग जाता है। घरवालों ने आकृति को ढांढस बंधाई और किसी भी बात की फिक्र करने से उसे रोका। मगर वह है की समाज के डर से मरी जा रही थी। उनके खानदान की नाक कट जायेगी इस डर ने उसे इस कदर डरा दिया कि वह संभल ही नहीं पा रही थी। इस विपदा की घड़ी में पूरे परिवार ने मिलकर आकृति का साथ दिया। समाज या रिश्तेदार किसी से भी डर कर जीवन को कुर्बान तो नहीं किया जा सकता है, हाँ गलतियां हुई है और उसकी सजा भी मिल चुकी है। प्रायश्चित और पश्चाताप हर अपराध को माफ कर सकता है। सुबह का भुला अगर शाम को घर लौट आये तो उसे भुला नहीं कहते। इस तरह आकृति को घरवालों ने समझाया ।

फिर क्या था अपनी बेटी को मौत के मुँह में जाने से उन्होंने बचा लिया और पुलिस की मदद से उस लड़के को भी सबक सीखा दिया। इस तरह परिवार ने मिलकर समस्या का समाधान निकाल लिया। अब आकृति ने नए सिरे से जीवन की शुरुवात की और जी जजान लगा कर पढाई में लग गई और सबसे अहम् आज वह बहुत खुश है। अपनों का साथ और अपने कष्टों से सीख लेकर उसने जीवन में सफलता हासिल कर ही ली। कष्ट किसके जीवन में नहीं आते, भिन्न भिन्न लोग और भिन्न भिन्न उनके दुःख मगर उन दुखों से निकलने के

तरीके की कुंजी सबके पास होती है- परिवार और आत्मविश्वास। अगर हम यह ठान ले कि हम अज्ञानता से परिपूर्ण, अनभिज्ञता से लबालब, एक जटिल जीवन जीने के लिए नहीं बने हैं, हम बिमारी में तड़पने के लिए नहीं जन्में हैं और न ही हम भूख से बेबस मरने के लिए हैं। ना ही हम अपने जीवन को किसी की भी हाथों की कठपुतली बनने देंगे। कभी नहीं! तो इस तरह से यह "क्या" तो ऐसे ही कम हो जाएगा।

आइये हम प्रण लेते हैं कि दुनिया इधर से उधर हो जाए मगर हम आत्मबल की इमारत को हमेशा मजबूती से खड़ा रखेंगे । अपने जीवन को कभी भी लाचारी का जामा नहीं पहनाएंगे और हालात कितने भी जटिल क्यों ना हो जाये हम अपने मनोबल को कभी टूटने नहीं देंगे। एक बार जोर से कहेंगे “कभी नहीं! कदापि नहीं! हरगिज नहीं! बिलकुल भी नहीं!” माना कि अभी आपको ये सब बातें किताबी लग रही होगी, हकीकत और स्वप्न का कभी ना होने वाला मेल लग रहा होगा, बड़े बड़े बोल का कोई मोल नहीं लग रहा होगा, हाँ आप सही महसूस कर रहे हैं। जिनका जीवन बोझिल हो जाए, काँटों से भरी साँसे रहे, दर्द से कराहती रातें हो, आंशुओं से भीगा आँचल हो, कुछ कर दिखाने का दायित्व हो, रास्ते कंटीले और पथरीले हो, इम्तहान में सर्वश्रेष्ठ आने की ललक से ज्यादा दबाओ हो, तो जाहिर सी बात है उनको ये बातें खोखली बेबुनियाद और फिजूल के प्रवचन ही लगेंगे। परन्तु अगर देखा जाए कि जिंदगी आखिर उस मोड़ तक पंहुची ही क्यों? इसकी वजह क्या है ? अगर जीवन की नाव को बवंडर में डूबने से पहले ही रोक लिया जाता तो कैसा होता? हम अगर कुछ फैसले सही समय पर ले लें और कुछ लेने के पहले जरा सोच विचार कर लें तो कैसा रहेगा? कहते हैं न की नजर हटी दुर्घटना घटी तो बस हमें नजर नहीं हटानी है। अपने मकसद से, अपनी राह से और अपने फैसलों से।

हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हमारी जीवन की परिस्थितियाँ हमेशा वैसी ही रहेंगी जैसी वे आज हैं। वास्तव में, जीवन में नियमित रूप से परिवर्तन होता रहता है और हमें इसका सामना करना पड़ता है। प्रकृति का नियम ही है परिवर्तन। मौसम कभी एक सा नहीं होता, कभी हमेशा केवल दिन नहीं रहता ना ही कभी हमेशा रातें होती हैं। दिन बदलते हैं समय बदलता है लोगों का जीवन भी बदलता रहता है। अगर हम इस तथ्य को नकारते हैं और परिस्थितियों को पूरी तरह समझने और उनके अनुसार कार्यवाही करने के लिए तैयार नहीं होते हैं, तो हमें अक्सर अनुप्रयोगिता और परेशानी का सामना करना पड़ता है। दिल और दिमाग की सोच जब मेल नहीं खाती तब हालात को किसी अपनों के विचारों पर छोड़कर देखना चाहिए। एक बार की बात है जब अनुराधा के ससुरजी के दूर के रिश्तेदार रामचरणजी पास के ही गाँव में रहते थे। खेतीबाड़ी ही उनकी जीविका का एक मात्र साधान थी। हर साल फसल बड़ी अच्छी होती और उसके दाम भी मोटे मिल जाते जिससे रहन-

सहन भी रईसों वाले थे। खेत बड़ा था जिस कारण मजदूरों से काम लिया जाता था जिससे मुनाफा भी ज्यादा मिलता। जीवन खुशहाल और सुखमय था।

गाँव की शुद्ध आबोहवा, अपने ही खेतों के अनाज और फल, गाय भैंस का ताजा-ताजा दूध और एक उत्तम पर्यावरण में एक सम्पूर्ण आनंद से लबालब जीवन व्यतीत करते थे रामचरणजी। परंतु यह आनंद ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाया और अपने साथ रामचरणजी के आत्मविश्वास को भी टिकने नहीं दिया। लगातार दो साल बारिश सही से नहीं होने की वजह से फसल चौपट हो गई। जहां मोटी कमाई थी वहां अब मोटा नुकसान। इंसान को कहाँ धैर्य? किसी ने सही कहा है इंसान चाबी वाली गुड़िया होता है, चाबी जो लगाए उसी तरह उसका रोना हसना शुरू हो जाता है। दुखों ने चाबी भरी तो आंसुओं का बांध टूट जाता है और सुखों ने चाबी भरी तो हसना उत्साहित होना नहीं थमता।

रामचरणजी बहुत दुखी होने लगे। यह तीसरा साल था जब कमाई तो बिलकुल भी नहीं थी और खर्चा अनाप शनाप। सड़क पर आते देर ना लगी। उनकी धर्मपत्नी (सुषमा) उन्हें बहुत समझाती कि हमें खर्च पर थोड़ा अंकुश लगाना चाहिए मगर इनका हाथ खुला था जो इन्हें ले डूबा। अब दाने दाने को मोहताज हो गए। मनुष्य गरीब होता है तो उसे इतनी तकलीफ नहीं होती जितना कि गरीब बन जाता है तब होती है। उसके ठाठ-बाट हर पल उसे याद आते हैं और हर पल उसे चुभन महसूस होती है जिस वजह वह और टूटता है।

एक समय ऐसा आया जब रामचरणजी ने अपने बंजर खेतों को बेचकर शहर जाने का फैसला ले लिया। उनके इस फैसले में सुषमा उनके साथ नहीं थी। वह अपने पुरखों की जमीन को कतई बेचना नहीं चाहती थी। रामचरणजी ने दीनदयाजी से बातें की उन्होंने भी रामचरणजी को यही समझाया कि जीवन में उतार चढ़ाव तो आते ही रहते हैं समझदार वही होता है जो अपना आत्मविश्वास नहीं खोता। तुम धैर्य रखो और अपने खेत को सींचते रहो, हाल चलाते रहो एक समय ऐसा फिर आएगा जब दोबारा से तुम्हारे खेत सोना अवश्य उगेगा। मगर इन बातों का रामचरणजी पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने संकट के आगे हाथियार डाल दिए। अब ना ही उनमें हिम्मत थी और ना ही हौसला। मन के हारे हुए को जगाना सबसे ज्यादा मुश्किल होता है।

कुंठित इच्छाओं के बंधन से मुक्त होने के लिए रामचरणजी ने अपने अतीत के सुनहरे दिनों का स्मरण किया। विपदा की घड़ी में ये सुनहरी यादें ही तो सहारा होती हैं। यात्रा निर्धनता इंसान को तिल-तिल कर मारती है और रामचरणजी ये रोज़-रोज़ का मरना सहन नहीं कर सकते थे। उन्होंने शहर जाने का निर्णय कर ही लिया। इस फैसले में वो अकेले ही उत्तरदाई थे। इधर सुषमा ने भी अकेले ही अपने पुरखों के खेतों को सींचना शुरू किया। वक्त के

थपेड़ों के आगे उसने घुटने नहीं टेके। स्वेद और रक्त से सींच कर उसने अपने खेतों को एक बार फिर से जीवनदान देने के कठिन कार्य को अपने हाथों में ले लिया। अपने पुत्र के साथ मिलकर उसने जीवन के सबसे कष्टदाई साल बिताए।

एक दिन आ ही गया जब उसकी तपस्या पूर्ण हुई। उसके खेतों में फसलें ऐसी लहराई कि देखने वाले दाँतों तले उंगलियाँ दबाने लगे। अल्हड़, अलमस्त, मतवाला सा झूमता सुषमा का खेत आज वो बहार लेकर आया जिसके लिए ना जाने सुषमा ने क्या-क्या त्याग किए। इन मुश्किल पलों में उसका आत्मविश्वास ही केवल उसके साथ था जिसने सच्चे मित्र की तरह हमेशा उसका साथ दिया। हर साल की तरह इस साल भी रामचरण सुषमा और अपने बेटे से मिलने गाँव आया। अपने खेतों की बंजर हालत के ताने हमेशा सुनाने वाला रामचरण, सुषमा को फिजूल की मेहनत करने से रोकने वाले रामचरण के भी पैरों तले से जमीन घसक गई। हरे-भरे खेतों को देख सोना उगलती धरती को देख रामचरण अपना सर पकड़ उसी धरती पर औंधा लेट जोर-जोर से रोने लगा। आज उसे एहसास हुआ की उसने कितनी बड़ी गलती की। अपने आत्मविश्वास का हाथ छोड़ कर उसने क्या खोया आज उसने जाना। अपनी पत्नी और बेटे को बाँहों में भर उनसे क्षमा याचना करने लगा। रामचरण केवल अपना ही नहीं उन दोनों का सबसे बड़ा अपराधी था।

मनुष्य के मन और दिमाग के बीच एक अद्वितीय संबंध होता है। मन भावनाओं का माध्यम है, जबकि दिमाग तर्क और तथ्यों का माध्यम होता है। दोनों को संतुलित रखने की आवश्यकता होती है ताकि हम सही निर्णय ले सकें। सफलता के मार्ग पर चलने में, हमें अपनी इन्द्रियों को नियंत्रित करना सीखना चाहिए। इसके लिए, हमें स्वयं को सामर्थ्य और संयम से भरपूर बनाने की आवश्यकता है। इससे हम अपने लक्ष्य की ओर सफलतापूर्वक बढ़ सकते हैं। अंत में, हमें हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि हमारे दिल और दिमाग हमारे लिए केवल साथी हैं, और हमें उनकी समझ और सहायता का सहारा लेना चाहिए। इस तरह, हम अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों में सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं और सफलता की ओर बढ़ते हैं।

एक बच्चे के जन्म पर जहां परिवार में खुशियां उमड़ती हैं वहाँ एक जिम्मेदारी भी सामने आती है। जिम्मेदारी की अब बच्चे को एक सभ्य और सज्जन इंसान बनाना है। कुछ अच्छा करने के विचार जाने-अनजाने कब कुछ बुरा हो जाने के हालात के कारण बन जाते हैं किसी को आभास ही नहीं होता। बच्चे को मान-मर्यादा, ऊंच-नीच, परिवार समाज के नियमों से प्रशिक्षित करने की कोशिश में उसे एक ऐसे खोल में बंद कर दिया जाता है जहां उसके खुद के गुणों की कब्र तैयार हो जाती है। हमेशा एक लक्ष्मण रेखा के दायरे में ही बंधे रहने की कुंठा मन को सीमित कर देती है। यह कोई नहीं समझता। अरे बच्चा है कुछ सही कुछ गलत

करेगा, कभी अपनी तो कभी दूसरों की गलती से सीखेगा तब जाकर उसके गुण, उसके हुनर उभर कर सामने आएँगे। उसे बस इतना एहसास होना चाहिए की अगर कभी भी वह गिरा तो उसे उठाने वाला उसके साथ ही है। तब जाकर उसके विचारों में परिपक्वता आएगी। खुले विचारों में जीने से वह देख देख कर अपनेआप ही धर्मज्ञाता, आध्यात्मिक, सांस्कारिक बन सकता है मगर जबरदस्ती उसे कोई कुछ नहीं बना सकता। एक समय के बाद एक कुकुन भी अपने खोल से निकल कर अपनी उड़ान भर ही लेता है, फिर हम तो इंसान हैं।

हर बच्चे को ईश्वर ने कोई ना कोई उपहार देकर ही इस धरती पर भेजा है और हम माता-पिता को उनकी परवरिश और उनका साथ देने के लिए। ममता की ठंडक, स्नेह की आंच, स्पर्श का एहसास, मजबूती की भावनाओं की एक बच्चे को अपने माता-पिता से सबसे ज्यादा जरूरत होती है। अगर हम बच्चों के दिल की नहीं सुनेंगे तो वह बच्चा चाहे कुछ ना कहे मगर वह दिल से कभी भी खुश नहीं होगा। एक कित्रिम ख़ुशी के साथ वह जियेगा तो जरूर मगर क्या यह बनावट की हसी असली ख़ुशी दे सकती है? क्या इस तरह का जीवन कभी खुशहाल हो सकता है? क्या एक बनावटी हंसी असली सुख का द्वार हो सकती है? नहीं, इसी तरह जैसे कि एक काँच के टुकड़े से हीरे की चमक नहीं हो सकती, जिस तरह लोहे पर सोने का पानी चढ़ा देने से वह असली सोना नहीं हो सकता ठीक उसी तरह बनावट के चंद लम्हे जीवन को असली सुख नहीं दे सकते। हम खुशहाल और सफल जीवन के हकदार हैं, न कि आत्महत्या जैसे पाप के खाई में गिरने के लिए बने हैं। हमें उत्साह और उमंगों के पंख लगाकर आगे बढ़ना चाहिए, हमें हार कर बैठने वालों में नहीं अपितु जीत के लिए लड़ने वालों में होना चाहिए। जिस दिन हम इस सोच को अपनाएंगे, उस दिन से हमारे लिए सुख और सफलता के द्वार खुल जाएंगे। हमें हर मुश्किल और हर संघर्ष को पार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कभी-कभी हम अपनी पहली प्राथमिकता के रूप में सकारात्मकता को उपेक्षित कर देते हैं। जब हमारा जीवन अवसाद के बादलों से घिर जाता है और समस्याओं के समाधान के लिए प्राप्त इंतजाम कम होते हैं, तो हमें नकारात्मकता का डर सताने लगता है। इस दुर्दशा में, हम अक्सर अपनी चिंताओं में डूब जाते हैं और सकारात्मकता को अनदेखा कर देते हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि हर समस्या के दो पहलू होते हैं, और हमें धैर्यशीलता से इस चुनौती का सामना करना चाहिए। "धीरज धरे सब कुछ होये" - यह नीति हमें हर हालत में अपनानी चाहिए। हमें ठंडे दिमाग से समस्याओं का सामना करना चाहिए और धैर्य बनाए रखना चाहिए। आफत से मुक्ति के लिए, हमें उचित योजना बनानी होगी और समस्याओं का

समाधान खोजना होगा। रास्ता हमें हमेशा मिलता है, बस हमें उसे ढूंढने की क्षमता रखनी चाहिए।

हर इंसान के हृदय में एक मासूम छोटा बच्चा हमेशा जीवित रहता है, जिससे उसकी कोमलता का परिचय होता है। यह मासूम बच्चा डरपोक भी होता है। छोटी-सी बातों में भी यह तुरंत अधीर हो उठता है। अपनी कमजोरी के कारण ही यह उसे आश्रय देने वाले को भी कमजोर बना कर रखता है। जो इसे आश्रय देता है, उसे वह अपने जैसा बना लेता है। मगर हम यह भूल जाते हैं कि इस डरपोक बालक के साथ-साथ एक साहसी और निडर बालक भी हमारे मन में निवास करता है। जो काम पर लगने में थोड़ा ज्यादा समय तो अवश्य लेता है, मगर उसकी एक खासियत है कि वह काम पर लगने के बाद पीछे कभी नहीं हटता और अपने आश्रयदाता को हमेशा साहस प्रदान करते हुए उसे आगे ले जाता है। तो फिर देर किस बात की है? क्यों ना हम साहसी को ही चुनें और उसका साथ पाकर आगे बढ़ें। इस तरह से हमें अपने हृदय और मन की राह को व्यर्थ के विचारों की गाड़ियों से जाम न लगाकर सही सलाह से भरी गाड़ियों के आने के लिए खाली रखना चाहिए। थोड़ी कोशिश करनी होगी, थोड़ा मनोबल बढ़ाना होगा, दूसरों को समझाने से पहले खुद को तैयार करना होगा, और खुद को बदलना होगा। फिर देखें, सफलता हमारे कदमों को कैसे छूती है, विजय तिलक हमारे मस्तक पर शोभा पाएगा, प्रशंसा के कविताएँ हमारे लिए पढ़ी जाएगी, धन और ऐश्वर्य भी हमारे ही संगी बनेंगे।

यदि हम इस संसार को देखें, तो रास्ते कभी भी आसान नहीं होते, लेकिन असंभव भी नहीं होते। यहाँ पर सरल क्या है और कौन है जो अपने जीवन में सातों सुखों का वारिश बन चुका है? शायद कोई भी नहीं। धन की कमी ने गरीब को मार डाला, लालच ने अमीर को, आलस्य ने स्वस्थ को बीमार कर दिया, और बीमारी ने रोगी को। किसी को दो कदम न चल पाने के गम ने दुखी किया, और किसी को माउंट एवेरेस्ट की चढ़ाई भी कम पड़ रही है। इस प्रकार, अंत कहीं भी नहीं है। इसलिए कहा जाता है कि अंत या आरंभ सभी स्वयं से होता है। हम स्वयं कितने कारगर हो पाते हैं, कितने काबिल बन पाते हैं, कैसे समस्या का हल निकाल पाते हैं, और किस तरह सफलता प्राप्त कर पाते हैं, सब कुछ अपने मन में झाँकने से ही ज्ञात हो सकता है। हम अपने ह्रदय में बैठे साहसी बच्चे को जगा कर उसके बलबूते पर कठिनाईयों का सामना कर, अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं, और सबसे महत्वपूर्ण है कि हम खुश हो सकते हैं। सही जगह पहुँचना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है कि हम उस जीत को हासिल कर खुश हो सकें।

इस जीवन में कुछ भी नहीं अटकता, सब कुछ जैसे होता है वैसे ही बीतता जाता है। लेकिन वह पल जो चला गया है, जो बीत रहा है, वह हमारे जीवन की किताब के पन्नों में इतिहास

बन रहा है। उस इतिहास को हमारी आने वाली पीढ़ियाँ पढ़ेंगी और चर्चा करेंगी कि हमारे पूर्वज कैसे थे। हमारी इच्छाशक्ति से न तो समय ठहर सकता है और न ही इतिहास बदला जा सकता है, लेकिन हम अपने इच्छाशक्ति से आज को बदल सकते हैं और एक ऐसा इतिहास बना सकते हैं जो आदर्श माना जाए। जब हम यह जान चुके हैं कि हमारे अलावा कुछ नहीं रुकेगा, तो हम क्यों रुकें? सोचने योग्य बात है कि हमें जितनी सांसें मिली हैं, हमें उन्हें लेना ही होगा, और हम किस प्रकार से उन्हें लेंगे, यह हमारे हाथ में है। तो अब आगे बढ़ें। जीना तो है अब रोकर या हँसते हुए, यह हम तय करेंगे। रास्ते जहाँ काँटों से भरे हों, हम कष्ट सहकर चलेंगे, और रास्ते जहाँ गुलाबों से सजे हों, हम उत्साहित होकर चलेंगे, लेकिन हम चलेंगे। बस थोड़ी सी विचारशीलता और आत्मसंवाद की आवश्यकता है। हम समाधान की दिशा में विचार करेंगे और अपने संताप को समझेंगे, तो चलना इतना कठिन नहीं होगा। यकीन मानिए, जरा सा भी कठिन नहीं होगा!

इंसान एक अजीब प्राणी है, जैसे नारियल की तरह बाहर से सख्त और अंदर से नरम। उसका ह्रदय समतल भूमि की तरह होता है, जहाँ जितनी आसानी से गम का संघर्ष होता है, उतनी ही सहजता से खुशी का अनुभव होता है। इन विभिन्न भावनाओं में, इंसान अपनी धार्मिकता की खोज में निकलता है। कभी वह डूबता है, और कभी किनारे पर उतर जाता है। कभी उसमें ताकत और आत्मविश्वास उमड़ता है, तो कभी उसे संगीन अंधकार छूना पड़ता है। कुछ लोगों की प्रवृत्ति अत्यंत उत्तेजित और उत्साही होती है, जो अपनी भावनाओं को अपने नियंत्रण में नहीं रख पाते हैं। इस प्रकार, उनकी बहकी भावनाएं उन्हें अक्सर गलत कार्रवाई करने पर मजबूर कर देती हैं। लेकिन इस अजीब प्रकार की भावनाओं में ही उसकी मानवीयता की पहचान है। ये भावनाएं हमें अन्य प्राणियों से अलग करती हैं, हमें पत्थर से भिन्न बनाती हैं। यहां उसके संतुलन का महत्व होता है। भावनाओं को अपने परिमाण पर बनाए रखने का, विचारों को शांत रखने का, और उन्हें अपनी उच्चतम सीमा तक पहुंचाने की भी कला होती है। यदि नाविक अपनी नाव को खेते वक्त संतुलन नहीं बनाए रखेगा और जल के बहाव के साथ नहीं बहेगा, तो उसका क्या परिणाम होगा, यह वह अच्छी तरह से जानता है। उसी तरह, हमें भी अपनी भावनाओं में संतुलन बनाए रखना सीखना होगा, ताकि हम दुखों से उबर सकें और खुशी में होश नहीं खोएं। हमें यह सोचना होगा कि किस दिशा में जाना है, कितना जाना है, और क्या करना है।

किसी और के लिए भावनाओं में बहकर डॉक्टर या इंजीनियर बनने का फैसला लेना गलत हो सकता है, लेकिन हमें स्वयं को अच्छी तरह समझना होगा, और अपने लिए सही निर्णय लेना होगा। यह संतुलन ही हमें सफलता की ओर अग्रसर करेगा।

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि हम अगर टेलीविजन पर कुछ दुखों से भरे कार्यक्रम देखते हैं तो हम भी दुखी हो उठते हैं और अगर हास्यास्पद कुछ देखते हैं तो हसने लगते हैं। औरों के दुःख में अनुराधा का दुखी होना यही प्रमाणित कर रहा है। कभी शिवानी तो कभी शलोनी, कभी उर्मि तो कभी ख़ुशी, कभी संगीता तो कभी रीतिका कितने लोग और कितने दुःख। अपनों का या परायों का किसी का भी दुःख हमसे देखा नहीं जाता, किसी के भी घर में खुशी का माहौल होने से हम भी खुश होने लगते हैं। ऐसा हमारे साथ क्यों होता है? हमारे अंदर रासायनिक प्रतिक्रियाएँ चलती रहती हैं जिसके परिणाम हमें हसाते या रुलाते हैं। इन्ही रसायनों का संतुलन ही हमें स्वस्थ रखता है। इन रसायनों में अगर गड़बड़ी हो जाती है, तो हम ज्यादा हसने लगते हैं या ज्यादा रोते ही रहते हैं। इन्ही रसायनो का बिगड़ता संतुलन ही था जो दोनों बहनो सुजाता और नम्रता को जीवन के ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया जहां उनके सपने चकना चूर हो गए और जीवन बेजान। उनकी तकलीफ देख अनुराधा की कई रातों की नींद उड़ गई। अब सोचा जाए तो इन अंदरूनी रसायनों में तालमेल कैसे बैठाया जाए? सबसे आसान है, हमें अपने आसपास का माहौल हमेशा खुशनुमा रखना चाहिए। ख़ुशी ही एक ऐसी संजीवनी है जिसके पास हर मर्ज का इलाज है।

अगर हम खुश हैं, तो हम आधे तो स्वस्थ हो गए और हमारे आधे दुःख तो ऐसे ही कम हो गए । मगर पहले हम आधे तो ठीक करने की कोशिश करें जो हम कर सकते हैं। जिसे करना हमारे हाथ में है। माना आज ऐसा दौर चला है जिसमें हर कोई उलझा हुआ है। ऐसे बहुत ही कम लोग दिखते हैं जिन्हें कोई दुःख न हो जो हर तरफ से निश्चिंत और सौभाग्यशाली हैं। आज तो समय ऐसा आ गया है कि स्पर्धा में भाग लेने की होड़ हर किसी को मशीन बना रही है। चिंतित, परेशान, असंतुस्ट हर कोई है। क्यों हैं? क्यूंकि हर तरफ होड़ मची है। सर्वश्रेष्ठ बनने की लालसा ने सुखी रहने की परिभाषा ही बदल डाली। आज जीवन का नाम ही “संघर्षों का आँचल” हो गया है। वैसे भी जीवन में संघर्ष नहीं तो वह जीवन ही क्या। समझदार वही होता है जिसने इस आँचल को ओढ़ना बखूबी सीख लिया हो।

नई नवेली दुल्हन को कभी देखा है कि उसे साड़ी पहनने में कितनी दिक्कतें आती हैं? यह साड़ी उसे एक जंजाल लगती है। मगर जिस दिन वह उसे लपेटना सीख लेती है, उसे संभालना सीख लेती है। उस दिन के बाद वह इसे पसंद करना भी सीख जाती है। जीवन भी ठीक उसी तरह होता है, इसे संभालना सीखना ही इससे प्रेम करना सिखाता है।

तुम्हें भी समझना होगा कि सब कुछ हमारे अंदर ही है। बाहर कहीं भी कुछ भी तलाशने की जरूरत नहीं है। सुख भी अपने, दुःख भी अपने, कष्ट भी अपने, और इलाज भी अपने। बस जरूरत है उस इलाज की जड़ तक पंहुचने की। तुम्हें भी उसी खोज की जरूरत है। खोजो, खोजने से तो भगवान भी मिल जाते हैं। कमजोर बनना, अबला रहना, किसी की दया का

पात्र बनना, सहानुभूति जमा करना बुजदिली है, इस जीवन की तौहीन है, ईश्वर का अपमान है। तुम रो नहीं सकते, रोना तो सबसे सरल काम है। तुम हार नहीं सकते, भाग नहीं सकते और "आत्महत्या" यह तो किसी भी सूरत में नहीं कर सकते। समस्या का समाधान निकालने के लिए पहले खुश होना सीखो, ख़ुशी ही एक संजीवनी है। जीवन की राहें इतनी संकरी होती हैं कि उनमें एक बार में ज्यादा गाड़ियां नहीं जा सकतीं। अगर हम इस राह को व्यर्थ के विचारों की गाड़ियों से जाम कर देंगे तो इनमें सोचने समझने की गाड़ियों का आना बंद हो जायेगा। ट्रैफिक सिग्नल को ध्यान में रखते हुए हमें गाड़ियों की रोकथाम पर और आवागमन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। थोड़ी सी सूझ-बूझ जीवन को खुशहाल बना सकती है, वहीं जरा सी लापरवाही जीवन बोझिल भी कर सकती है। जीवन के झूले को बड़े हौले-हौले झुलाना पड़ता है, तब कहीं ठंडी-ठंडी हवाओं का स्पर्श मिलता है।

कहते हैं न सुंदरता देखने वालों की आँखों में होती है। तो अब हमें क्या करना है? अपने नजरिये को बदलना है। मार्ग के अवरोधों को ना देखकर केवल उस खूबसूरत मंजिल को ही देखना है, रास्ता तो दुःख सुख पाकर पार कर ही लेंगे। हो सकता है कि जीवन के किसी भी मोड़ पर हमें लगे कि हम चक्रव्यूह में फस गए। चिंता और घबराहट के मारे बाहर निकलने का रास्ता भी हमें दिखाई ना दे। और उस विषद परिस्थिति में हम अपना मानसिक संतुलन खो बैठें परन्तु हमें यही तो नहीं करना है। हमें अभिमन्यु नहीं बनना है। अभिमन्यु से एक ही गलती हुई थी कि उसने चक्रव्यूह से बाहर निकलने का मार्ग नहीं सीखा जो आपको नहीं करना है। हमें मुश्किलों से लड़ना है, अपनी सूझ बुझ से काम लेना है ताकि हम अर्जुन की तरह दुश्मनों से घिरे होने के बावजूद अपने आत्मविश्वास और आज तक के सीखे हुए सभी हुनर का उपयोग करके उस चक्रव्यूह से निकलने की पुरजोर कोशिश करनी है। यहाँ कहने का तात्पर्य यही है कि हमेशा अर्जुन बनो जिन्होंने अनगिनत संकटों का सामना किया और अंत में विजयी हुए।

जिस लायक ईश्वर ने हमें बनाया है, जिस हुनर से हमें नवाजा है उसे ही आगे बढ़ने की सीढ़ी बना कर अपनी रूचि को जगा कर वो करना चाहिए जिसे करने की हमेशा से दिल में चाह तो थी मगर कभी हिम्मत नहीं जुटा पाए। दिल का पंछी भी आजादी चाहता है उन शिकायतों की जंजीरों से, उन बहानों की सलाखों से, उस असफलता के डर के अंधकार से जो इस बेचारे को न जाने कब से कैद कर रखा है। तोड़ कर उड़ जाना है हर जंजाल को जिसने मेरे कदम रोक दिए। जिसने केवल रुकावटें ही डाली हैं। जिसने मेरी सफलता को असफलता के दरवाजे के पीछे बंद कर रखा है। अपने-आप को बदलो, दुनिया बदलने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। स्वयं बदलने से दुनिया तो खुद ब खुद बदलती है मेरे दोस्त।

रास्ते वो हमें बता गए, पदचिन्ह अपने छोड़ गए,
तब भी तुम न चले तो कुसूर किसका होगा?
विचार और उपचार वो बता गए,
फायदे और नुकसान सीखा गए
तब भी तुम ना बढ़े तो
नुक्सान किसका होगा?

दूर से आग दिखाने से रोटियां नहीं सिकती
बिस्तर पर रहने से फसलें नहीं उगती
ना मिलेगी बहार बंद कमरे में
ना ही आएँगी खुशियां, यूँ ही चलकर तेरे दामन में

खोल से निकल मेरे राही, वह रास्ता तेरी राह देखे
जिसको तू रोज वादें किया करता था, मिलने का
हजार सपने दिखाता था, साथ चलने का
ख़त्म कर ये इंतज़ार की घड़ियाँ
बेबस और बेवजह की लड़ियाँ

वक़्त अब आ चला कुछ कर दिखाने का
तुफानो में भी कदम बढ़ाने का
तब उनकी बारी थी अब तेरी बारी है
समय आ चला अब नया इतिहास रचाने का।

असीम प्यार और भरपूर स्नेह मेरे अनमोल रतन और मेरे भारतवर्ष के उज्वल भविष्य- अर्जुन बनो अभिमन्यु नहीं।

ये समस्या तो हल हो गई मगर जिस काम के लिए अनुराधा आई थी क्या वो पूरा हुआ? दिव्यांशी ने सफलता प्राप्त की या नहीं ? रोहित का हादसा तो उसने दिव्यांशी से छुपा लिया मगर कब तक वो दिव्यांशी के मनोबल को बढ़ा कर रख पाती है। आइये आगे पढ़ते हैं ?

आयुषः क्षण एकोअपि सर्वरत्नैर्न न लभ्यते।
नीयते स वृथा येन प्रमादः सुमहानहो

तू अंत नहीं, आरंभ है।
कायर नहीं, तू वीर है।
बस एक बार, खुद को तू पहचान ले
हाँ, खुद को अब पहचान ले।

लड़ सका तो जीत है, कुछ कर सका तो प्रीत है, यही जमाने की रीत है
यही जमाने की रीत है

चक्रव्यूह में दम नहीं, दुश्मनों से कम नहीं, इस विश्वास को ठान ले, बस एक बार, खुद को तू पहचान ले, हाँ, खुद को अब पहचान ले।

वक्त की पुकार है,
दर्द का हिसाब है,
पार इसके, आलोक है, प्रकाश है, प्रकाश है।

जिंदगी का सफर,
पल दो पल का जरा नहीं, मीलों का रास्ता है, दीर्घों का दायरा है।
यह सत्य तू पहचान ले, यह तथ्य तू जान ले।
बस एक बार, खुद को तू पहचान ले, हाँ, खुद को अब पहचान ले।

कुछ कदम पीछे कर
लेने छलांग ऊँची
तोड़ हर जंजीरों को
हो जा आजाद, तू
इस हुनर को तू जान ले
बस एक बार, खुद को तू पहचान ले
हाँ खुद को अब पहचान ले।



**मैं मेरी पिछली पुस्तक "जीवन पर्यंत"
के लिए आपके प्यार और स्नेह के
लिए अपना आभार व्यक्त करती हूं।
आपके पुनः समर्थन की प्रतीक्षा है**